॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीहरिव्यास यशामृत

रचयिता

स्वामी श्रीरूपरसिक
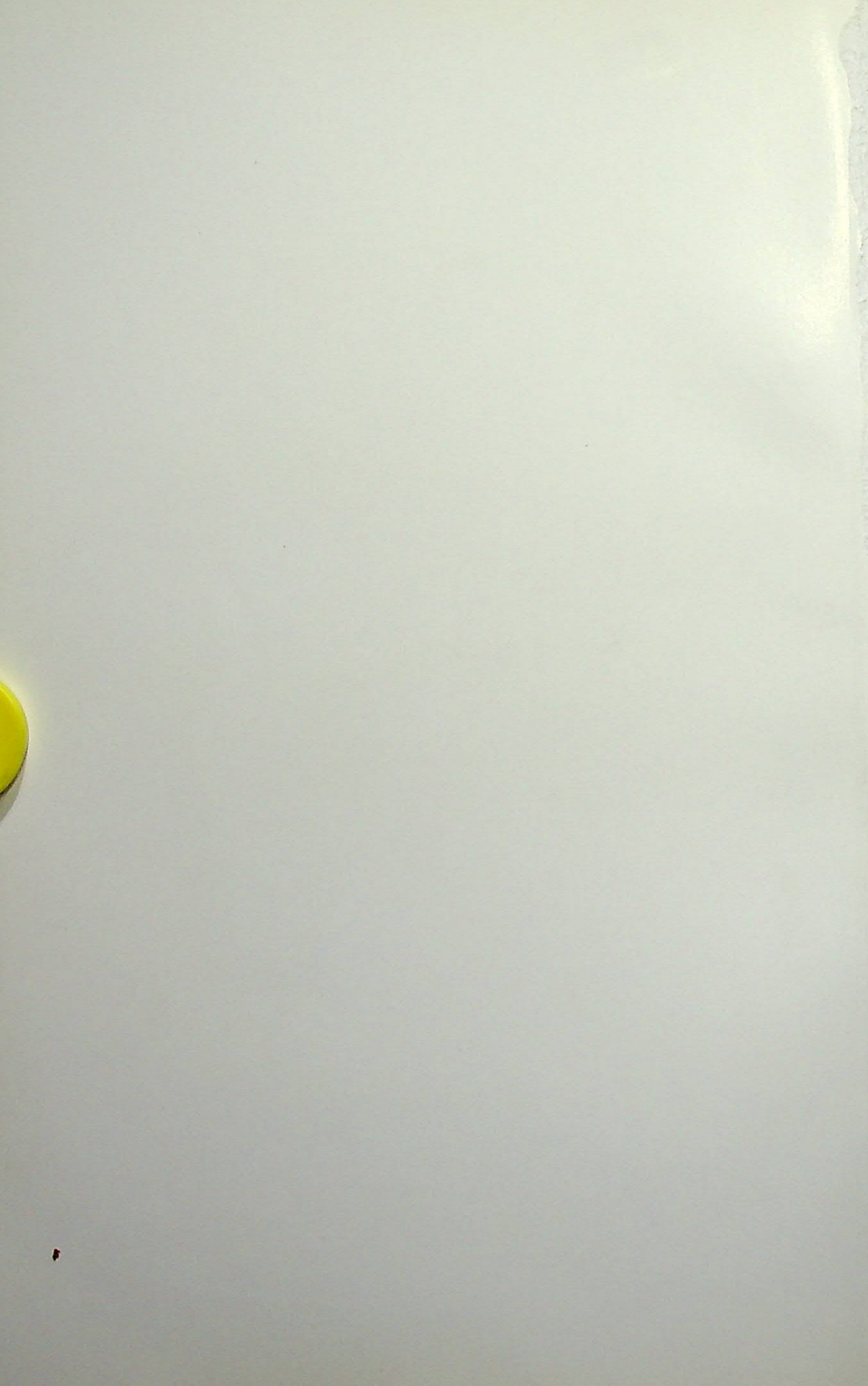
श्रीहरिव्यास यशामृत

" श्रीसर्वेश्वरो जयति "
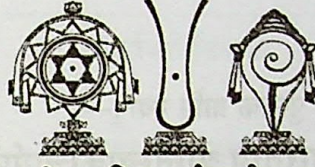
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीहरिव्यास यशामृत

स्वामी श्रीरूपरसिक प्रणीत-

पद्यात्मक गीतकाव्य

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

कार्तिक कृष्ण १२ गुरुवार

रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्य पाटोत्सव

वि० सं० २०७०, दिनाङ्क ३१/१०/२०१३ ई०

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

फोन नं० - ०१४६७ -२२७८३१

प्रथमावृत्ति - १००० वि० सं० १९८१

द्वितीयावृत्ति - १००० वि० सं० २०७०

मुद्रक--

श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

४०) रुपये

।। श्रीसर्वेश्वरो विजयते ।।

दो शब्द

श्रीरूपरसिक देव द्वारा प्रणीत ''श्रीहरिव्यास यशामृत'' गीति काव्य जिसमें विभिन्न रागनियों, छन्दोंबद्ध परम सरस द्वाविंशति (२२) लहरिकाओं में आबद्ध जिसमें स्व्यं संकेत किया है कि जगद्‌विजयी जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य रसकिराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के यशामृतसिन्धु की अनन्त लहरें भी गुणगान करने में समर्थ नहीं हो सकती।

यश अमृत सागर महा, जाकी लहरि अनन्त।
रूपरसिक यह यथामति, सुनि उर धरियो सन्त।।

ऐसे परम रसिकों के प्राण श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित ५ सुखों में अन्वित ''श्रीमहावाणीजी'' में युगलकिशोर श्यामाश्याम की दिव्यातिदिव्य निकुञ्ज लीलाओं का गुणगान व्रजक्षेत्र श्रीवृन्दावनधाम में परम रसिक भावुक भगवज्जन के द्वारा किया जाता है। ''श्रीमहावाणीजी'' का गुणगान कर व्रजरस की रसमयी निकुञ्ज रसामृत का पान कर वे परम हर्षित व आह्लादित होते हैं।

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज युगलविहारी राधामाधव प्रभु का निकुञ्ज विहरणादि लीलाधिष्ठात्री देवी श्रीप्रियाजी परब्रह्म लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण की परम आह्लादिनी शक्ति भगवती श्रीराधाजी के रंगधाम की अन्यतम ललिताविशाखादि सहचरीवृन्द में परम सुशोभित 'श्रीहरिप्रिया' सखी स्वरूप में श्रीयुगल प्रियाप्रियतम को लाड लडाते हैं। उनके अर्द्ध नाममात्र 'श्रीहरि' स्मरण करने से हमें चारों पुरुषार्थ की सिद्धि हो जाती है।

श्रीरसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने सकल संसार में श्रीयुगल प्रियाप्रियतम की निकुञ्ज उपासना का दिव्य उपदेश प्रदान किया। श्रीरूपरसिकदेवजी महाराज ने रसिकेश्वर 'श्रीमहावाणीकार' श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के दिव्य स्वरूप को प्रकट करने वाला ''श्रीहरिव्यास यशामृत'' रूपी विभिन्न राग-रागनियों व दोहा सोरठा आदि छन्दों में आबद्ध सरल भाषा में गीति रसायन महाकाव्य का प्रणयन किया। यह सब

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी की ही कृपा का फल है जो सहृदय भगवद्भक्त श्रीमहावाणीजी की युगल पदावलियों का गुणगान करता है व परम दिव्य अष्टादशाक्षर मन्त्रराज का निरन्तर जप करता है वह मोक्ष की आकांक्षा न रखते हुए श्रीयुगल प्रियाप्रियतम के दिव्य अलौकिक रंगधाम में नित्य सहचरीवृन्द में स्थान प्राप्त करता है। यह सब श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी (श्रीहरिप्रियासखी) महाराज की चरण शरणागति के बिना सम्भव नहीं।

परमदिव्य अष्टादशाक्षरमन्त्र अंतर सदा निरन्तर ध्यावे।
सबको रंगधाम अति दुर्लभ ताहि ठाम में रहे रहावे।।
''श्रीहरिव्यासचरण शरणागति श्रीहरि कृपा करें तब पावे''
जय जय श्रीहरिव्यासजू दशदिशि जीत पुनीत।
करी प्रगट जग तरण हित महाभजन रस रीति।।
जय जय श्रीहरिव्यासजू सर्व गुरु भगवन्त।
सदा सर्वदा एकरस युगल रूप में मन्त।।
जय जय श्रीहरिव्यासजू परा प्रेम के सिन्धु।
सदा सच्चिदानंदघन रसिक जनन के बन्धु।।

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज पराभक्ति के सागर है वे सदा युगल प्रियाप्रियतम के स्वरूप को धारण करते हैं। श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के दिव्य पदाम्बुजों में शरणागति हमें पराभक्तिपूर्ण श्रीयुगल प्रियाप्रियतम की रसमयी उपासना प्रदान करने वाली है।

श्रीचरणकिंकरीक :-
रेवतीरमण शर्मा शास्त्री, निम्बार्कभूषण
प्राध्यापक-
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर (राजस्थान)

श्रीहरिव्यास यशामृत

॥ लिख्यते ॥

॥ मांझ ॥

श्रीहरिव्यास हरिप्रिया रूप तिनकी कृपा मनाई।
श्रीहरिव्यास देव यश अम्मृत सागर लिखों बनाई॥
तामें काव्य छन्द नाना विधि सों लहरी समुदाई।
युगल रत्न दाई यह गाई रूपरसिक मन भाई।

॥ दोहा ॥

तत्र प्रथम लहरी लिखों, दोहा बन्ध सुहाय॥
हरिव्यास श्रीहरिप्रिया, मन वच क्रम चितलाय॥२॥
श्रीनारद के शिष्य द्वै, वाल्मीक अरु व्यास।
रूपरसिक जिन मुख भयौ, शब्दब्रह्म प्रकाश॥
बहुवानी वहु ग्रन्थ किय, जाको वार न पार।
रूप रसिक हरिव्यास कें, घर ही को व्यौहार॥३॥
अपनी अपनी चोंच भरि, लेत कोऊ खग आय।
रूप रसिक महा सिन्धु को, कहो कहा घटिज़ाय॥४॥
कहा अश्व कहा अश्विनी, कहा वृषभ कहा गाय।
इक हाथी के खोज में, सबही खोज समाय॥५॥
किते जीव आये गये, बढत न घटत लगार।
रूप रसिक हरिव्यास की, बडा बडी सरकार॥६॥
आवत है जिहि ग्रन्थ में, व्यास बिना हरिनाम।
रूप रसिक टेरे कहैं, सो मेरे नहिं काम॥७॥
भक्त भक्त सबही मिले, अपनी अपनी ठौर।

रूप रसिक हरिव्यास की, भजन रीति कछु और ॥८॥
शत्रु सींव चापें नहीं, दुष्टी लहैं न दाव !
रूप रसिक हरिव्यास के, अँग पावत उमराव ॥९॥
श्रीगुरु हरि सम्बन्ध बिन, सबकी छाप कलाप।
रूप रसिक हरिव्यास की, छाप हरै त्रय ताप ॥१०॥
कहा भयो जो करिलियो, तिलक आपनी उक्ति।
रूप रसिक हरिव्यास के, तिलक बिना नहिं मुक्ति ॥११॥
पायो नाम निकामही, फिरें फुलायौ चाम।
रूप रसिक हरिव्यास के, दास बिना नहिं काम ॥१२॥
माला पहिरी मोल ले, जासों कटे न जाल।
रूप रसिक हरिव्यास की, बिना माल नहिं माल ॥१३॥
एक एक तें अधिक हैं, मन्त्र तन्त्र के माँहि।
रूप रसिक हरिव्यास के, मन्त्र बिना सिधि नाँहि ॥१४॥
सब लीला श्रीकृष्ण की, जो जिहि लायक होय।
रूप रसिक हरिव्यास जू देत सबन कों सोय ॥१५॥
श्री वृन्दावन महल सुख, है सब रस कौ सार।
रूप रसिक जिनकों मिलै, तिन पर कृपा अपार ॥१६॥
नित्य किशोरी बपुष यह, श्रीवृन्दावन नाम।
नव निकुंज कल केलि हित, राजत भूपर धाम ॥१७॥
राधा हरि हरि व्यासजू, सेवत विपिन विलास।
निज आनन्द अहलाद को, जान्यो परम निवास ॥१८॥
नित्य विहार विहरत तहाँ, नित्य बिहारी लाल।
श्रीहरि प्रिय हरिव्याससुख, संग रहत सब काल ॥१९॥
श्रीहरिव्यास लडावहीं, त्यों त्यों लाडत बाल।
लाड लडीले लालकी, करत सदा प्रतिपाल ॥२०॥
रूपरसिक हरिव्यास को, बडो तेज भरपूर।

और देव दबके रहें, दबक्यो रहै न सूर॥२०॥
रूपरसिक कोऊ कहत हैं, बादर माँहि दवात।
सो इन मूरख नरन कों, दृग माया फिर जात॥२१॥
सूर सोई आधा धरे, षाछा परे न पाव।
रूपरसिक सर्वेश ते, तबही होय मिलाव॥२२॥
नेक चरण पाछे परै, ये कायर के लक्षि।
रूपरसिक हरिव्यास पद, पावत नांहि प्रतक्षि॥२३॥
तनतें आगे मन चलै, मनते आगें भाव।
रूपरसिक हरिव्यास को, तबही ह्वै दरशाव॥२४॥
तबही लग दुरवासना, लगीजु याके साथ।
रूपरसिक हरिव्यास को, जब लग नयो न माथ॥२५॥
कोउ नेम में लगिरहे, कोउ प्रेम में रोत।
रूपरसिक हरिव्यास विन, परा न प्रापति होत॥२६॥
एक भूत के लगे की, सहीपरत नहिं आँच।
रूपरसिक जिनकी कहा, तिनको लागे पाँच॥२७॥
मन्त्र तन्त्र कछु नहिं चले, चले न तन्त्र विचार।
रूपरसिक हरिव्यास के, विना एक उपचार॥२८॥
जो कोऊ श्रीहरिव्यास को, नाम जपै इकवार।
तन मन धन ता ऊपरे, दीजे सर्वसु वार॥२९॥
सकल अमङ्गल खलनदल, हलचल दुख अघरास।
रूपरसिक सबही भगैं, सुमिरत श्रीहरिव्यास॥३०॥
रूपरसिक गुणवन्तको, चाहत सब जग माँहि।
निर्गुण को हरिव्यास की, सदा सर्वदा वाँरह॥३१॥
एक वार हरिव्यासजू, रसना कियो उचार।
तौ श्रीराधा कृष्ण को, मन्त्र जप्यो सौवार॥३२॥
रूपरसिक हरिव्यास की, विना कृपा लहै कोय।

श्रीवृन्दावन महलसुख, हाँसी खेल न होय॥३३॥
रूपरसिक हरिव्यासजू, इनकी सम को और।
कोउ बाहर कोउ भीतरे, ये व्यापक सब ठौर॥३४॥
काहू की दश पंच दश, काहू की अठ सात।
रूपरसिक हरिव्यास की, वीसो विश्वा बात॥३५॥
रूपरसिक हरिव्यास की, धर्म्म ध्वजा फहराय।
ताके आगे और की, कहो कहा ठहराय॥३६॥
रूपरसिक हरिव्यास विन, लहै न सुख को सोत।
नेम प्रेम अरु छेम सब, इन ते प्रापति होत॥३७॥
चौरैं चौरैं सब फिरैं, दौरे दौरे दास।
परै साँकरो आय तब, सुमिरैं श्रीहरिव्यास॥३८॥
रूपरसिक हरिव्यास की, शरण बिना नहिं पार।
केते बाहरि रहिगये, केते बूडे धार॥३९॥
रूपरसिक हरिव्यास की, सवते मोटी बात।
चरण शरण तिनकी भई, तीनों गुण की मात॥४०॥
रूपरसिक हरिव्यास की, बडी रजाई जानि।
माया त्रिगुण प्रसूतिका, चरण शरण भई आनि॥४१॥
रूपरसिक हरिव्यासजू, आचारज वर राय।
मूल प्रकृति चेरी भई, त्रिगुण प्रसूता आय॥४२॥
रूपरसिक हरिव्यास की, उपमा को नहिं कोय।
तासु कृपाते पाइए, प्यारी प्रियतम दोय॥४३॥
रूपरसिक हरिव्यासजू, आप रूप हरि राय।
माया जग बिस्तारणी, तासु पलोटत पाय॥४४॥
रूपरसिक हरिव्यास की, देखो अद्भुत रीति।
तिनकी चरण शरण बिना, युगल करें नहिं प्रीति॥४५॥
रूपरसिक सबके लगे, या माया सों प्राण।

तातेे तू हरिव्यास भजि, माया गुरु भगवान॥४६॥
या माया खाया सवै, याकी भारी चोट।
रूपरसिक जन ऊवरे, माया गुरु की वोट॥४७॥
रूपरसिक ये जगत सब, है स्वारथ को दास।
तू स्वारथ कर आपनो, तजि जग भजि हरिव्यास॥४८॥
रूपरसिक ये जगत सब, केवल स्वारथ मित्त।
तातेे तू निज काम करि, भजि हरिव्यास सुचित्त॥४६॥
अपने अपने खेल में, सबही मगन रहंत।
तूनिज खेल सुमिरत रहि, कहि हरिव्यास महंत॥५०॥
रूपरसिक सबकों लगें, अपने प्यारे काम।
तूहू अपनो काम करि, भजि हरिव्यास सुनाम॥५१॥
तन्त हमहिं जानत भले, नहीं और के भाव।
छोटो मुख मोटी कहै, नीचन यहै स्वभाव॥५२॥
रूपरसिक जिनि नहिं लह्यो, श्रीहरिव्यास प्रताप।
जैसे दादुर कूपसे, करे कूप में धाप॥५३॥
अपने अपने मनहिं में, रहे पतिव्रत धार।
रूपरसिक सोई सही, कहैं परोसन नारि॥५४॥
भक्ति भाव समझे नहीं, आपा को अधिकार।
सेर चूनदे साधुनें, कहें कुवे धसिजाव॥५५॥
साधु शरम मार्‍यो कछू, बोल सके नहिं वैन।
रूपरसिक की ओर ह्वै, टग टग जोवै नैंन॥५६॥
रूपरसिक अैसें कहैं, सुनो हमारी बात।
सेर चून पहले लयो, अब काहे पछितात॥५७॥
आसीसो पासी सदा, नाहिं तलासी तास।
रहैं उदासी जगत ते, हम हरिव्यासी दास॥५८॥
स्वारथ माँही चतुर सब, परमारथ कौ नाश।

रूपरसिक ता हिय नहीं, ये कोरे हरिदास ।।५९ ।।
मुखसों भाषें अनन्यता, तन में राखें टोंठि।
ठाकुर के आगे धरें, ऊजवना की ओंठि ।।६० ।।
रीति चलावें आपनी, है कलि की यह टेक।
बिना शरण हरिव्यास की, उपजे कहा विवेक ।।६१ ।।
रूपरसिक सँग नहिं चलै, लहि पापिन को योग।
खोट करें हरि आसरे, ऐसे खोटे लोग ।।६२ ।।
जागे तो हरिव्यास भजि, सोवै तौ हरिव्यास।
ऊठत बैठत फिरतही, स्वास स्वास हरिव्यास ।।६३ ।।
ये अनन्य के लक्षि हैं, इन बिन और न फन्य।
रूपरसिक हरिव्यास जू, सुमिरें सोही धन्य ।।६४ ।।
रूठा तो उधरै नहीं, तूठा सुधरैं काज।
रूपरसिक हरिव्यासजू, महाराजन के राज ।।६५ ।।
वह विनती है सबनसों, सेनो सुचित्ते होय।
रूपरसिक साँची कहैं, दुख पावो जिन कोय ।।६६ ।।
प्रथम समझिवो सैन में, दूजो वैनमितोंह।
रूपरसिक बहु वकेते, होत भांड की सोंह ।।६७ ।।
जो कोऊ चाहै चाहसों, तिनको दुख सुख संग।
रूपरसिक नहिं करें तो, होत रसिकता भंग ।।६८ ।।

॥ सोरठा ॥

वैमानुष जग थोर, मन फाटे फटिजाय मन।
ऐसे लाख करोर, फाटि फाटि मिलिजाय मन ।।६९ ।।

॥ दोहा ॥

समय परे ते जानिये, हित अनहित की बात।
रूपरसिक ज्यों प्रगट ही, क्षीन पीनता गात ।।७० ।।
हमहीं बहुत पढी सुनी, सिद्धान्तन की शाखि।

साधन सों कछु मति कहै, आयि आपनी राखि॥७१॥
मुख आगे अस्तुति करें, पीछे करें चवाय।
रूपरसिक वा दास को, नास जाय पै जाय॥७२॥
भक्ति भाव हिरदे धरैं, डिम्भ तज्यो नहिं जाय।
रूपरसिक इन त्रियन को, है सहजेंहिं सुभाय॥७३॥
श्रीहरिव्यास कृपा करी, रूपरसिक जनजानि।
नीचेतें ऊंचो कियो, दियो शीश पर पानि॥७४॥
रूपरसिक संसार सब, मेरे जानि अऊत।
सुमिरें श्रीहरिव्यासजू सोई एक सपूत॥७५॥
श्रीहरिव्यास गुण गान सुनि, उठत न संगहि गाय।
रूपरसिक ते नर महा, परैं नरक में जाय॥७६॥
नृत्य करत लाजन मरें, तें नर तिय तन पाय।
सदा अटेरी हाथ में, सूत समेंटत जाय॥७७॥
हम काहू के होंय तो, कोउ हमारो होइ !।
रूपरसिक संसार में, देखे सबही जोय॥७८॥
रूपरसिक संसार में, कोउ न अपनो जान।
एक दोय की कहा चली, सबही सुपन समान॥७९॥
साधु सदाही शुद्ध है, जिनके मते अगाध।
रूपरसिक कहा जानही, जीव भरे अपराध॥८०॥
रूपरसिक हरिव्यासजू, है सबहिन सिरमौर।
तिनहिं त्यागि इत उत फिरें, तेई महा मति वौर॥८१॥
हरिभक्तिन सों द्रोह करि, गई चहें हरि लोक।
रूपरसिक वा राँड के, परें करम में ठोक॥८२॥
हरि सुमिरें ह्वै है कहा, हरि भक्तन सों वैर।
रूपरसिक पावै कहाँ, बिना उसीला खैर॥८३॥
आबैतो आनन्द कौ, उपजे और जँजाल।

रूपरसिक इन तियनको, संग तजौ तत्काल ॥८४॥
जारों मुह जागरन कौ, जामेंहि आवहि जोय।
रूपरसिक यातै भले, रहैं अकेले सोय ॥८५॥
जगत भगत सबही हँसौ, वुरौ न मानू कोय।
श्रीराधावर सुमिरताँ, होनी होय सो होय ॥८६॥
म देखों सब इष्ट को, श्रीराधावर अंश।
मूरख नर समुझे नहीं, उलटी धारें गंश ॥८७॥
रूपरसिक हरिव्यासजू प्रगट न होते आज।
तौ इन रसिकन कौ कहौ, कैसे सरतो काज ॥८८॥
जय जय श्रीहरिव्यासजू, रसिकन हित अवतार।
महावाणी करि सवन कों, उपदेश्यो सुखसार ॥८९॥
श्रीवृन्दावन चन्द्रकी, नित लीला दरशाय।
रूपरसिक जन पर करी, कृपा करी सतिभाय ॥९०॥
रूपरसिक हरिव्यास को, बडो आसरो पाय।
तुच्छ नरन के घर घरे, भटकै कौन बलाय ॥९१॥
श्रीराधा कृष्ण उपासना, श्रीवृन्दावन धाम।
श्रीहरिव्यास कृपा विना, पूरण होय न काम ॥९२॥
एक रूप हरिव्यास जू, ह्वै अनेक अवतार।
श्रीवृन्दावन चन्द्र कौ, वरन्यो नित्य विहार ॥९३॥
सब पूजत हैं व्यास को, हम पूजत हरिव्यास।
रूपरसिक जिनि कृपातें, सफल होय सब आस ॥९४॥
गुरु सबही कें होत हैं, निगुरे रहत न कोय।
सतगुरु के शरनें विना, सुख प्रापति नहिं होय ॥९५॥
गुरुकी कृपाहि जानिये, सतगुरु मिलैं जु आय।
मूरख छोडचो कहत हैं, जासों कहा बसाय ॥९६॥
छोडचो जाकों जानिये, हरि तजि भजें जु और।

अम्मृत रस को पीठदै, फिरतो फिरै कुठौर ॥९७॥
साँची सों झूँठी कहें, झूँठीसों कहें साँच।
ऐसे या कलिकाल में, प्रगट भये हैं पाँच ॥९८॥
तिनको मुख खण्डन करण, हरण कलेश अपार।
प्रगट भये हरिव्यासजू, स्वयं रूप अवतार ॥९९॥
कोने में करिवो करें, घुचपुच घुचपुच चोर।
रूपरसिक हरिव्यास की, चौडाही में ठौर ॥१००॥
लियें नरक दीये स्वरग, रूपरसिक भुगतन्त।
दोऊनते न्यारे रहें, जिनको नाम महन्त ॥१०१॥
महताई मुसकलि महा, नाम धरें कहा सिद्धि।
रूपरसिक जिनकें नहीं, आनँद रूपी ऋद्धि ॥१०२॥
भला कहा रीझे नहीं, बुरा कहा न खजन्त।
रूपरसिक सोई जानिये, आनँदरूपी सन्त ॥१०३॥
रूपरसिक रस भजनकी, गति समुझे नहि कोय।
मुहाचही चल तियनकें, किये न भजन कछु होय ॥१०४॥
रूपरसिक संसार की, देखो उलटी चाल।
परिहरि नरहरि चतुरदशि, पूजें षेतर पाल ॥१०५॥
जाकों चाहत हैं दियो, लीला रस अधिकार।
रूपरसिक तो बुद्धि कों, वारों वार धिकार ॥१०६॥
प्रथम दईवी जीव में, करम ज्ञान करि हीन।
फिरि तिनही में सोधिये, लीला रस में लीन ॥१०७॥
लीला रस के जीव में, युगल ध्यान रतजोय।
युगल ध्यान रत में कोऊ, सखी भावयुत सोय ॥१०८॥
सखी भावयुत में कोऊ, वृन्दावनी उपास।
तिनहू में पुनि देखिये, श्रीहरिव्यासी दास ॥१०९॥
श्रीहरिव्यासी दास में, महावाणी रुचिजाहि।

तिनसों हिलिमिलि कीजिये, हिय की बात उमाहि।।११०।।
अधिकारी बिन जोकहूं, भाखै यह रसरीति।
रूपरसिक सुख नहिं लहै, उल्टी ह्वै विपरीति।।१११।।
सोया रस अधिकार को, साधन नाही कोय।
श्रीहरिव्यास कृपा करें, तबही प्रापति होय।।११२।।
तातें श्रीहरिव्यास की, निति प्रति कृपा मनाय।
कष्ट किये पावै नहीं, मिलें सहजसो आय।।११३।।
सकल कर्म अरु धर्म के, फल कलियुग में नष्ट।
एक शरण हरिव्यास की, बिना और सब कष्ट।।११४।।
रूपरसिक हरिव्यास को, भजन महाजल जानि।
जाके ऊठे बुदबुदे, सो सब इष्ट बखानि।।११५।।
रूपरसिक हरिव्यास के, नित विहारकी बूँद।
एक तनक जो ऊछटी डारें सबको रूँदि।।११६।।
रूपरसिक हरिव्यास की, नाहि बराबर कोय।
जाके आधे नामते पाप सवै क्षय होय।।११७।।
दुर्लभ या संसार में, रस भजनी रतिवान।
रूपरसिक ऐसे बहुत, नीरस रीस निवान।।११८।।
रूपरसिक हरिव्यास कौ, वडौ भरोसो राखि।
जन जन आगें रोय कें, जिन खोवे सौ साखि।।११९।।
साखि रही तो सब रही, साखि गया सब जाय।
तातें जाता भाँति तू, श्रीहरिव्यासहिं गाय।।१२०।।

इति श्रीमत् हरिव्यासदेव यश अमृत सागर लहरी। वन्ध रसिक मन हरणी महा अर्थ की गहरी।। प्रथम लहरिया महा सुहाई युगल सेव वरदाई। रूपरसिक गाई छवि छाई निज पूरणता पाई।।

।। इति प्रथम लहरी ।।

॥ दोहा ॥

दूजी लहरी लिखूँजु, अब दायक युगल विलास।
सुभग सवैया बन्धकी, सुमिरि सुमिरि हरिव्यास॥१॥

॥ सवैया ॥

हरिव्यास आस सदा सुखरासा।
केतेक नेमहि में रहे लागि केते वँधे परे प्रेमके पासा॥
केतेक कर्म महातम ज्ञान में केते लगे जप तप्प तलासा।
केतेक तीरथ सेवत हैं अरु खेवत हैं बन में दुख दासा॥
और की आस निरास सबै हरिव्यास कीआस सदा सुखरासा॥१॥
काहेको झुण्ड लिये जगमें फिरौ काहेको मूरख मुण्ड मुडावो।
काहेको तुण्डपैं राख लगावत काहेकु सुण्डि सिन्दूर चढावौ।
काहे कौ गुंडत डोलो गरीवनि काहेकु रुण्डपै केश रखावौ।
जो सुख चाहतहो अपनैंतौ तौ हरिव्यासहि काहे न गावो॥२॥
कोटिक यज्ञ किये तौ कहा भयौ वेद पढे बृथही वचकूटे।
स्वर्ग में जाय कहा सुख पावत पाछेहि आवत डार के तूटे॥
साधन और किये सब श्रेय के तौ उरहे रसतें जु अहूटे।
सो जन श्रीहरिव्यास भजैं नही ताजनके हिय भाजन फूटे॥३॥
देवभयौ सुरदेव भयो नरदेव भयौ नरकौ तन पायौ।
स्वर्गऽरु भूमि के भोग भुगे तोउ आपदा को कहुँ ओर न पायो
जाय रसातल राज कियौ तौउ दूनोइदूनौ रोग बढायो।
ऐपरिअज्ञ कवूँहि सुचितह्वै श्रीहरिव्यासहि नाहिं न गायौ॥४॥
सत्यहूके सिरदारहि देख्यो जो सेवक सुखदेत है सोई।
और सुनौ कैलाश के वासी सदाशिव नाम कहावत जोई॥
क्षुद्रनकी कहो कोन चलावत जो सुख पावत ध्यावत सोई।
है सबही दुखमूल महायक श्रीहरिव्यास भजे सुख होई॥५॥
दुर्लभ या नर देहको पाय गमावत है सठ सोच न आवे।

वावरो होय़ तो वैद लगाइये कौन सयानेंकौ सीख सिखावै॥
आपनैं हाथन पायन ऊपर पाथर डारत कौ समुझावै।
ऐपरि कौउतौ चाहै कह्यौ इरे श्रीहरिव्यासहि काहि न गावै॥६॥
कोउ कहैं हरिव्यापक ब्रह्म हैं कोउ कहैं वैकुण्ठ ठिकानौ।
कोउ महा वैकुण्ठ दिखावत कोउ सदा गोलोकहि मानैं॥
कोउ कहै हरिसागर क्षीरमें कोउ कहै परमेश्वर जानैं।
भूलि रहे भ्रममें सबही हरिव्यास विना हरिको पहिंचानैं॥७॥
कोउ कहैं हरि तीरथही में हैं कोउ कहैं हरि पञ्चनमाहीं।
कोउ कहैं हरि वाम्हनही में हैं कोउ कहैं हरि हैं सब घाहीं॥
कोउ कछू कहैं कोउ कछू कहैं ऐपरितासुकी ठीक न ठाहीं।
रूपरसिक विचारि कहैं हरिव्यास बिना हरि जानत नाहीं॥८॥
काहूने लोभ के लिये कही अरु काहूने मोहके लीये कही है।
काहूने लीये कही अहँ कारिहिं धारहि जो जाकी बुद्धि बही है॥
काहूने मान बडाई लियें कहि काहूने द्वेषकी रीति गही हैं।
रूपरसिक विचारि कहैं हरिव्यास कहैं सोई बात सहीहैं॥९॥
मोहि प्रतीति न आवत है कछु वेद वतावत भेद कह्यौजू।
आगम तन्त्र पुराणको मत सोध्यो सब जग जेतौ लह्योजू॥
मारगहू वहुभाँतिन के तिनके सुनते चित भ्रम गह्योजू।
और कह्यौ जो कह्यौ न कह्यौ हरिव्यास कह्यौ सोई कृष्ण कह्यौजू॥१०॥
सर्वहि भूमिको साज मिल्योरु रसाधिपहू होइ राज कियोजू।
शासन पाक कौ आसन पायकें अम्मृतहू कई पोत पियोजू॥
सम्पति पाय सवै परमेष्टीकी सिष्ट में सिष्ट कहाय लियोजू।
श्रीहरिव्यासहि जानें विना ध्रिग है ध्रिग है जिनकौजु जियोजू॥११॥
दान कियो जप तप्प कियो व्रत नेम कियो अरु प्रेम सगाई।
तीरथ तीरथ न्हान कियो तन शुद्ध कियो मन शूल गमाई॥
यज्ञ कियो जगदीश भज्यौ भव रोग तज्यो अति योगिता पाई।

साधुन सोतौ सबेहि कियो तब श्रीहरिव्यास की छाप कहाई॥१२॥
मंगल आदिदै शयन प्रयन्तलो सेवनके सुखहीकौ धारण।
भूलि कभू स्वपनें न रमें मन बाद विवाद विषाद विकारन॥
पावन नाम प्रिया हरि को जिन कीयो महासुखतें जु उचारन।
सोहरिव्यासी सदा सुखराशि निकुंज निवासी की जाउहूँ वारन॥१३॥
नौग्रह कौ न चलै कछुही बस बारहिं राशि सदा दुखटालै।
भैरव भूतरु प्रेत भवादिक षेतर पाल टगेटगन्हालै॥
यक्ष पिशाच खईश विजासनि पित्र विनायक वीर वितालै।
श्रीहरिव्यास को दास भयो जब जालिम जोरेंकौ जोर न चालै॥१४॥
व्यासजु वेद के चारि किये तिनहू मेंहु नहीं तनकौ दरशायो।
पांचवो वेद कियो महाभारत ओ इतिहासहु मांहि छिपायो॥
शारद मात सुरेश ओ शेष महेश गणेशहु पार न पायो।
जो रस दुर्लभ हुते है दुर्लभ सोरस श्रीहरिव्यासजू गायो॥१५॥
हैं हरि धाम सदा सर्वोपरि जो परसों पर वेद कहैं मग।
शूर के नीचे शेष के ऊपर गोपुरहूतें अगोचरसौ भग॥
ठौर जहां सबके शिर मौरकी नेंकहूँ लागे नहीं लग।
एक सौ वीशरु एक सिंढी पर श्रीहरिव्यास के दास धरें पग॥१६॥
मायिक वस्तु जिती जगमें तिनकौं प्रवेश कछु इहिं ठाहैं।
दिव्यहि सम्पति सेवत हैं सुख दम्पति के मुखकी रुख चाहैं॥
लाडिली लालकी लीला रसालहिं पीवत जीवत रैंन दिना हैं।
औरनकी गम नाहि जहाँ हरिव्यास के दास वसैजु तहाहैं॥१७॥
हंस कह्यौ सनकादिक सों सनकादिक नारदकें हिय नाष्यौ।
नारदजू कह्यौ निम्बदिनेशहिं निम्बदिनेश निवासहिं दाष्यौ॥
लैंकें निवास दिये विस वादिन जो इनलै अति गुप्तहि राख्यौ।
दैविक जीव उधारनकें हित सो रस श्रीहरिव्यासजू भाष्यौ॥१८॥
श्रीहरिव्यास स्वयं अवतारी एकहि एकहिके

सव दायक दूसरी दैंनकौं आप दुखारी।
तीसरीकी कहो कौन कहानी है जो महावाणी में आप प्रचारी॥
आज्ञा भई जिनको जितनेहिकी दीये तिन्हें तितनेही उघारी।
अंश कला अवतारहि धारिये श्रीहरिव्यास स्वयं अवतारी॥१६॥
श्रीहरिव्यास को नित्य विहारी केतेहु नैमित
आयसु पायकें जो सो दिना करिलेत पसारा।
फेरि परें त्रिगुणानके फेरमें होत नहीं तहातें निरवारा॥
याको तौ एक अखंड प्रताप दिपै दिनही दिन आप अपारा।
और विहार विहारिहिहैं पर श्रीहरिव्यास कौ नित्य विहारा॥२०॥
श्रीहरिव्यास कौ प्रेम है न्यारौ॥
काहूकौ प्रेमतौ नेम मिल्यौ अरु काहू को नेम तटस्थ निहारौ।
काहूको रोयवे माहिरल्यौ अरु काहू को रोयवेतें अगवारौ।
काहूकौ कैसिय भाँति मिल्यौ अरु काहू कौ कैसिय भाँति विचारौ।
और कौ प्रेमतौ प्रेमहि है पर श्रीहरिव्यास कौ प्रेम है न्यारौ॥२१॥
हरितो व्रजराज कुमार हैं कृष्ण सुतो चतुरा कृतिकौ नितिरानौ।
व्यास पदारथ श्रीमति राधिका कृष्ण के प्राणाधिकातिहिं मानौ।
रूपरसिक कियो यह अर्थ सुदेखिकें आगम वेद वखानौं।
नित्य विहारी किशोरी किशोरकी मूरति श्रीहरिव्यासही जानौ॥२२॥
भक्तिको भेद पायौजु क्योंही योंहीजू खेद कियो पढि वेदकी काँडी।
कर्म कुचील कमाय कमाय कें आयु विताय दई विधि माँडी॥
मूरख मूरखता मद छायकें छोडन योग्य नहीं सोई छोडी।
श्रीहरिव्यास कौ दास भयें विन होयगीरे सठ होयगी भांडी॥२३॥
सुन्दर साज समाजही पायकें राज कियो भुविको सगरौजू॥
सूर कहाय गरूर बढाय रह्यौ मन लाय गुणें अगरौजू॥
श्रीहरिव्यास कौ दास भयौ नहि तौ तन तासु हुताश जरौजू।
रूपपनौ सब कूप परौ अरु भूपपनौ सब भार परौजू॥२४॥

॥ दोहा ॥

रूपरसिक हरिव्यासकें, एक भजन कौ लेश।
ताकी महिमा कहनकौं, हारे कोटिक शेष॥१॥
आरषकविष्णु देवजू, पौरशुक विजयदेव।
कछू लह्यौ सो इन कह्यौ, या मृदु रसकौ भेव॥२॥
जयति नमो हरिव्यासजू, महाप्रेम परचार।
दम्पति इच्छा हरिप्रिया, महावाणी करतार॥६॥

॥ मांझ ॥

इति श्रीमत हरिव्यासदेव यश अम्मृत सागर लहरी।
सुभग सवैया वन्ध मनोहर महा अर्थ की गहरी॥
या लहरी दूजी सुख दाई लागत महा सुहाई।
रूपरसिक गाई छविछाई निज पूरणता पाई॥

इति द्वितीया लहरी॥

॥ दोहा ॥

तीजी लहरी लिखूं अब, तामें दोय बसन्त।
प्रेम छबीसी पचीसी में, शिष्य जनन को तन्त॥

* राग बसन्त *

चले वसन्त वधावन जन अनन्त। जहां हरिव्यास राजा महन्त॥
वृन्दावन जमुना तीर रम्य। हरिव्यास शरण विन सो अगम्य॥
तहां नव निकुञ्ज महा सुरंज। वहै त्रिविध पवन अलि पुंज गुंज॥१॥
जहां दम्पति सुख सम्पति अपार। प्यारी प्रियतम कौ नित विहार॥
तहां हितू सखी अगिवानि जानि।
जहां सकल सन्त दल पहुँचे आनि॥२॥
सब परशुरामजू संग साध तिनकी अतिही आशय अगाध।
अन गन सवही जन प्रेम राशि। हरिप्रिया चरणके सब उपास॥३॥

तिनमें पुनि गुनि गुनि कहौं सुजान जे दीनवन्धु करुणा निधान।
महा परा प्रेम में सकल भीन। जिनि वहुत पतित तारे मलीन ॥४॥
सब वेदागमको अरथ जान। तिनके गुणको कवि कहें वखान॥
सनकादिक मारग सकल निष्ठ। जिनके अनन्य हरिप्रिया इष्ट ॥५॥
जिन किये रसिकवर इष्ट भिष्ट। तिनकी श्रीमुख वाणी सुमिष्ट॥
गणि एक एक ते गुण गरिष्ट। तिन पद रज ते भये अनन्त शिष्ट ॥६॥
जय जय स्वामी अतिही उदार। पुनि स्वभूराम करुणा अगार॥
वोहित सोहित केशव घमंडि। दुलहडियो माधव प्रेम दंडि ॥७॥
लियरौ गुपाल हरि धर्मजान। पुनि मदन गुपालजु रसिक प्रान॥
गोपाल दयालजु परमहंस। मोहन मतवारौ जन सुवंश ॥८॥
नरसिंह विष्णु विठ्ठल प्रवीन। सारँग स्वामी श्रीधर नवीन॥
वल्लभ दुल्लभ सुल्लभ रसाल। पुनि ऋषीकेश भूसुर कृपाल ॥९॥
टूटौ गुपाल छविजाल संग। धौंधी भगवान सखी सुरंग॥
मङ्गलजु वाहवल भटगुपाल। मुनि ज्ञान ध्यान गुरु युगल भाल ॥१०॥
हरिरामव्यास त्रय अति नवीन। सब सन्त मण्डलीकें अधीन॥
प्रेमा चिन्तामनि दोउ साथ। चिन्ता हरि लीला शुक सुनाथ ॥११॥
द्वादश गुपाल कौ वृन्द जानि। तिनकी संख्या कौ कहै वखानि॥
पुनि जन मुकुन्द सुखकन्द चन्द। श्रीप्रेम चन्द प्रेमी गोविन्द ॥१३॥
बनवासी सन्यासी श्यामदास। ईश्वर विज्ञान घन प्रेमवास॥
पद्मावति पद्मा प्रेम स्वामि। मधुसूदन दामोदर सुनामि ॥१३॥
करमा माधव धरमा सुधीर। मीरा हुसेन वाजीदमीर॥
पुनि पीरदास जनहरण क्यास। श्रीहंसदास महा प्रेमरास ॥१४॥
रँगदेविदास हित दासरास। चतुरौ लघु मोहन विपिन वास॥
मुलतानि विमानी रसनिधान। चित सुख मधु मंगल ज्ञान ध्यान ॥१५॥
मुरली अनन्त सँग सत्य वादि। पुनि गंगग्वाल आचार्यादि॥
श्रीसूरश्याम रँग धाम नाम। विल मङ्गल जोसी जीति काम ॥१६॥

हरिव्यास प्रपन इक हंसदास। रघुनाथदास सँग छेमदास।।
कल्याण जनाधिप राज साध। जिन प्रिया चरण भूषण सुलाघ।।१७।।
सरस्वती भारती गिरी अनन्त। तिनकौं श्रीभटजू किये सन्त।।
गोविन्दा चारज तत्वजान। ब्रजवल्लभ गिरिधारी विज्ञान।।१८।।
मुनी राज मुनीशर चतुर बाह। जग जीवन कन्हर मोहदाह।।
प्रहलाद ऋषभ अहलाद दास। रस रास उपासक काम नास।।१९।।
सेतू हेतू नेतू सुचेत। जगजेतू सेतू प्रेम षेत।।
सर्वज्ञ अज्ञ गुरु गुरुगोपाल। तिन किये विधर्मी अति रसाल।।२०।।
इन आदिअपरिमित जन महन्त। बहु देव नाग अप्सरा नन्त।।
तिनकी संख्याकौ नाहि अन्त। सब सामगरी ल्याये बसन्त।।२१।।
पहुचे वृन्दावन परमधाम। तहाँ हरिव्यास रसिकाभिराम।।
सब हिन भूपरि दण्डोत कीन। हरिव्यास न मोकहि प्रेम भीन।।२२।।
पुनि कियो महोत्सव विपिन माँह।
अति नव निकुञ्ज माधुरी छाँह।।
बहुभाँति युगल के भोग राग। महा खेल भयो तहाँ वसन्त फाग।।२३।।
उपमाजु खेलकी कही न जाय।
जो कोटि कोटि मुख जीह पाय।।
जहाँ खेलत श्रीहरिव्यास देव। ताकी त्रिगुण प्रसूता करत सेव।।२४।।
अनहद बाजे बाजैं रसाल। बहुभाँतिनकीजु उडै गुलाल।।
अतर केशरि के तहाँ तडाग। तहाँ भरे घोरि अम्बुज पराग।।२५।।
याविधिखेलत नित भक्तरूप। हरिव्यास देव हरि प्रियारूप।।
अन गन महन्त जन लिये साथ। जन रूपरसिक के प्राणनाथ।।२६।।

।। दोहा ।।

इति श्रीरूपरसिक कृता, वसन्त छवीसी नाम।
पूरण श्रीहरिव्यास की, दाई दम्पति धाम।।१।।

वसन्त पचीसी अब लिखों, सो रस पति आगार।
सुमिरि हरिप्रिया पद पदम, श्रीहरिव्यास उदार॥२॥

* राग बसन्त *

खेलत वसन्त भगताधिराज। लियें अतेह पुरको सब समाज॥
श्रीपरशुरामजू लियें क्षत्र। चामर वर जय जय कियें पत्र॥
जहाँ स्वभूराम छाजै मृदंग। श्रीऋषीकेश साजै उपंग॥१॥
तहाँ वोहित उद्धव करत गान। लियरो गुपाल आनें जुमान॥
दुलहडियो स्वामी लियें चंग। जहाँ वीरमधीरम करत रंग॥२॥
जहाँ नृत्य करत द्वादश गुपाल। जन महावाणी गावैं रसाल॥
जहाँ अनंतदास उडवें गुलाल। वहु रंग रंगकी तिहीकाल॥३॥
तहाँ माया वर्षत दिव्य फूल। सव प्रेम विवस तन गये भूल॥
सब सन्त खरे हरिव्यासकूल। तिनकी संख्या नहीं अनन्त दूल॥४॥
केशव केशरि रंग कियो अपार। छिरकेंजु वाहुवल अति उदार।
माधव अवीर उडवैंजु भूरि। ता मधि अनन्त सौगन्ध चूरि॥४॥
गोपाल दिव्य वजवै सुताल। टूँटा गुपाल ढोलक विशाल॥
भेरी वजवै केशव प्रवीन। जो सदा रहत पर प्रेम लीन॥६॥
व्रज वल्लभ वजवै गजकपाल। जहाँ हंस बजावै दास ताल॥
जहाँ यन्त्र बजावै धौंधीदास। बंशी बजवै तहाँ दास व्यास॥७॥
सहनाई बजावै परम हंस। मुख चंग युगल बजवै सुवंश॥
तत्वज्ञ बजावै हस्त ताल। नौवति टंकोरत जन गुपाल॥८॥
कृष्ण जीवनि लछीराम संग। दोऊ भीजि रहे हरिव्यास रंग॥
जहाँ कृष्णदास ले अति उसास। मुलतानि विमानी धरै आस॥९॥
हरि नवल नगारन देत ठोर। छीतम जखडी कौ करत सोर॥
भागवत बजावत बंक भेरि। जनछीत नचै हरिव्यास हेरि॥१०॥
महा राय गिरगिडी जहाँ बजाय। अनहद बाजे तहाँ रहे छाय॥
तहां नवल नफीरि वजावै सन्त। हरिव्यास सुयश में सोमैमन्त॥११॥

जहां विष्णुपुरी नरसिंह साथ। कमलापति केशो गोपिनाथ॥
तहां क्षेमदास रघुनाथदास। सब नृत्यत श्रीहरिव्यास पास॥१२॥
मोहन मतिवारा घट बजाय। तहां तानसेंन मन लाय गाय॥
पिचकारी छोडत मुरलीदास। अनगन जन लीनें आस पास॥१३॥
मीरा मारू गावै सुराग। गिरिधारी सों मन तास लाग॥
गोपाल भट्ट नट राग लीन। वल्लभ हरिव्यास सुप्रेम भीन॥१४॥
सधनों जहाँ प्रेम पयोधि लीन। प्रेमा ताण्डव गति नृत्य कीन॥
तहाँ शूरश्याम भये शूरवीर। सव सन्त गुलाल भरें अबीर॥१५॥
जहाँ अलि भगवान करेंजु खेल। सो सखी भाव में रेल पेल॥
महा सन्त अंस भुज मेल मेल। सन्तन मुख लावैं गन्ध तेल॥१६॥
जहाँ भाव बतावत ईसरदास। आचारज सेखर करत हास॥
कन्हर लक्ष्मी दासानुदास। जहाँ टीकमदास जन पूरणदास॥१७॥
विद्यापति रसिकानन्द संग। मधुसूदन कर माजन त्रिभंग॥
पुनि अह्लजसू स्वामी सुजान। गावै तहाँ अतिही सुर बंधान॥१८॥
जहाँ कृष्णा वलि रामदास। महा लघु मोहन जन करण आस॥
हरिव्यास दास सँग प्रेम सिन्धु। रसिकेश्वर स्वामी भक्त वन्धु॥१९॥
सब सन्त उचारत जय अनूप। जय सर्वेश्वर हरिव्यास रूप॥
सबहीनकौं दीनौं प्रेम दान। हरिव्यास देव करुणा निधान॥२०॥
यह खेल मच्यौ अतिही अनूप। श्रीवृन्दावन रसिकेश भूप॥
तहाँ रँग देवीयुत प्रिया श्याम। जहाँ सदा विराजत अष्टयाम॥२१॥
तहाँ हितू सहित बहु वृन्दवाम। तिनकी द्युति मोहे कोटि काम॥
जय परमधाम लोकाभिराम। श्रीरंगवती कौ रहस ठाम॥२२॥
युग युग में प्रगटित हरिव्यास। सन्तनकी पूरण करण आस॥
परिकरयुत श्रीहरिप्रिया आप। ताकौ त्रिगुण प्रसूता करत जाप॥२३॥
श्रीभट पटराजा अति उदार। ताकी लीलाकौ नहीं वार पार॥
जिनि महावाणी वरणी रसाल। जगजानी मिलानी युगल लाल॥२४॥

महिमा अपार हरिव्यास देव। बिन चरण शरण कौ लहै भेव॥
जन रूपरसिक के प्राण नाथ। सब दिना बसौ मम हृदय माथ॥२५॥

॥ दोहा ॥

इति श्रीरूपरसिक कृता, बसन्त पचीसी नाम।
पूरण गुरु हरिव्यासकी, दाई श्यामा श्याम॥१॥

॥ माझ ॥

इति श्रीमत हरिव्यास देव यश अम्मृत सागर लहरी।
प्रेम बसन्त छ्वीसी पचीसी शिष्य अर्थ की गहरी॥
या लहरी तीजी सुखदाई शिष्य नामते छाई।
रूपरसिक गाई मन भाईं निज पूरणता पाई॥१॥

इति तृतीया लहरी।

॥ माझ ॥

अथ श्रीमत हरिव्यास देव यश अम्मृत सागर लहरी।
श्रीहरिव्यास देव नामक के अर्थ मञ्जरी गहरी॥
या लहरी चौथी सुखदाई परा प्रेमकी छाईं।
श्रीमच्चरण सरोज सौरभी रूपरसिक जन गाई॥१॥

॥ दोहा ॥

पाप हरें हरि पद अरथ, व्यास युगल कों देत।
रूपरसिक हरिव्यास भजि, मन वच क्रम करि हेत॥१॥
हरै अविद्या मूल हरि, व्यास करैं विवि पास।
रूपरसिक तजि आस सब, भजि निशि दिन हरिव्यास॥२॥
स्वयं कृष्ण हरिपद अरथ, व्यास भक्ति विस्तार।
रूपरसिक हरिव्यासकौ, नाम सकल श्रुतिसार॥३॥
स्वयं कृष्ण हरिपद अरथ, प्रिया अर्थ राधाजु।
रूपरसिक हरि प्रिया भजि, मिटे सकल बाधाजु॥४॥
स्वयं कृष्ण हरिपद अरथ, व्यास राधिका जानि।

रूपरसिक हरिव्यास कौ, नाम युगल करिमानि।।५।।
हरि कहता अघ सव हरै, व्यास कहत सुखरास।
होइ तुरत मुख उचरता, रूपरसिक हरिव्यास।।६।।
श्रीराधा हरिकृष्ण पुनि, व्यास जानि तन चारि।
देव सखी त्रिगुणी नृगुण, अर्थ यहै उर धारि।।७।।
हरिपद राधा व्यास हरि, ओत प्रोत दोउ नाम।
रूपरसिक हरिव्यास भजि, आपहि श्यामा श्याम।।८।।

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास देव मञ्जरी। त्रय नानारथ सम्पति भरी।।
दम्पति कृपा महा रस झरी। अनायास भवसागर तरी।।
निर्गुण रसिकन जीवनि जरी। दायक भाव युगल सहचरी।।
बटकें बीज न्याय अनुसरी। पूरण रूप रसिक वर करी।।

॥ माझ ॥

इति श्रीमत हरिव्यासदेव यश, अम्मृत सागर लहरी।
तीनमास हरिव्यास देवके, तास अर्थकी गहरी।।
या लहरी चौथी सुखदाई, रसिकनकी मनभाई।
रूपरसिक कृत महा सुहाई, निज पूरणता पाई।।१।।

॥ इति चतुर्थी लहरी ॥

॥ दोहा ॥

लहरी पँचमी अब लिखौं, सुमिरि देव वनराज।
तामहँ चौदह रत्नकी, बात महा सुख साज।।१।।

॥ राग अल्हय्या विलावल ॥

अथ श्रीमत हरिव्यास यश, चौदह रत्न सुनाम।
महा दिव्य रसनिधि प्रगट, रूप रसिक हिय धाम।।१।।

॥ आभास दोहा ॥

भक्तन मन भावन पतित, पावन सावन प्रेम।
ऐसे श्रीहरिव्यासजू, गाय सदा सजि नेम॥

॥ दोहा विशेष ॥

भक्ति भावन पतित पावन प्रेम सावन गाइये।
माया त्रिगुण प्रसूतिका गुरु श्रीहरिव्यास मनाइये॥१॥
महा मुनिवर तीन पुरचर सकल मुख घर पद गहौ।
आचारज बहु वृन्द स्वामी, श्रीहरिव्यास सदा कहौ॥२॥
ग्रन्थ करता मोंह हरता रसिक भर्ता रस घना।
श्रीभट पट महाराज श्रीयुत श्रीहरिव्यास भजौ मना॥३॥
दिशा जेता सकल नेता भक्ति खेता चित धरौ।
रसिक रसनिधि चतुर सबविधि श्रीहरिव्यास भजन करौ॥४॥
सर्वाचारज महा आरज कारज सुर नर के करन।
श्रीहरिप्रिया स्वरूप अवगति श्रीहरिव्यास भजौ चरन॥५॥
महावाणी युगल दानी रसिक गानी जिनि कही।
युगलरूप अनूप सबदिन श्रीहरिव्यास भजौ सही॥६॥
हरण दुखके करण सुखके चरण पंकज जासके।
मन वचन क्रम करि भजौ पद सर्व गुरु हरिव्यास के॥७॥
कमल लोचन दुरित मोचन अँग गोरोचन छबी।
गणपति स्वरपति अनन्तके पति भजि हरिव्यास महाकवि॥८॥
सँग सन्त अनन्त राजत प्रेममें मेंमन्तजू।
अति उदार अगार विद्या भजि हरिव्यास महन्तजू॥९॥
अति सुशील रँगील दम्पति देत ढील न सो करै।
अर्द्धनाम उचार जिनकौ त्रिविध ताप तुरत हरै॥१०॥
छाप तिलक सुनाम माला मंत्र पाँचौ दायकम्।
देत युगल समीप धरि हरिव्यास सतगुरु नायकम्॥११॥

हरि अर्थ नँदनन्द मानों व्यास जानों राधिका।
हरिप्रिया हरिव्यास आनों उर सदा भव वाधिका।।१२।।
शरण श्रीहरिव्यासजूकी कृष्ण श्रीमुख गावहीं।
चरण आश्रित बिना तिनकी नित विहारिन पावहीं।।१३।।
श्रीभट शिष्य अनेक तिनकी मुकुट मणिगण भास्करं।
नाम अति अभिराम तिनकौ त्रिविध ताप विनाशकरं।।१४।।
रूप रसिक ये रत्न चौदह यत्न कर गावैं कोऊ।
अतनु हतन जु होय ताकौ युगलजू पावै सोऊ।।१५।।

॥ दोहा ॥

इतिश्री रूप रसिक कृतं चौदह रत्न सुनाम।
पूरण श्रीहरिव्यासके पाये रसनिधि ठाम।।१६।।

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। श्रीगुरु भक्ति प्रेमकौ आगर।।
ताकी पँचमि लहरि सुहाई। पूरणता पाई मन भाई।।

॥ इति पंचम लहरी ॥

॥ दोहा ॥

छठी लहरी जानि अब, लिखूँ दोयता माँहि।
पँचरत्न अरु षट रतन, महा मनोहर आँहि।।१।।

॥ दोहा विशेष राग अल्हया विलावल ॥

श्रीवृन्दावन माँहि राजत हंस राधानाथजू।
सनकादिक गुरु श्यामश्यामा हरिप्रिया सखि साथजू।।१।।
सनासनमें क्षीरसागर रमानाथ विराजहीं।
कृपाचारज महाआरज सनकादिक तहाँ भ्राजहीं।।२।।
नारदाश्रम सुनो सन्तो नारदकुण्ड निगम कहैं।
त्रेताचारज महोदारज निम्बादित गुरु तहाँ रहैं।।३।।
सकल सुखको धाम श्रीमत निम्बग्राम बखानिए।

द्वापरयुग आचार्य राजा वसत तहाँ उर आनिए।।४।।
श्रीनिवासाश्रम कहौं श्रीकुंड शुभ व्रजमण्डमें।
कल्याणा चारज नितरहैं तहाँ जानत चौदह खण्डमें।।५।।
पाँच रत्न सुनाम निशिदिन रूपरसिक जो गाइहैं।
चारियुग आचार जनके स्थान वस सो पाइहैं।।६।।

॥ इतिश्री पंचरत्न समाप्तम् ॥

॥ अथ षटरत्न लिख्यते ॥

॥ दोहा विशेष ॥

श्रीवृन्दावनकी कोकहै महिमा वैकुण्ठ तासम नाहिंजू।
सनकादिक गुरु श्यामश्यामा हरिप्रिया तामाँहिजू।।१।।
तहाँ यमुना स्नान कीजै लीजै सुख गोविन्दकौ।
दरश करि बंशीवटादिक महा आनँद कन्दकौ।।२।।
सनासनकी अधिक महिमा क्षीरसागर न्हाइए।
शेषशायी दरश करिए सनकादिक पद ध्याइए।।३।।
नारदाश्रम महा महिमा नारदकुण्ड में न्हाइए।
युगलजुकौ ध्यान करि तहाँ श्रीनारद गुण गाइए।।४।।
निम्बपुरकी अमित महिमा रंगकुण्ड में न्हाइए।
श्रीनिम्बादित चरणमें तहाँ अनन्य चित्त लगाइए।।५।।
श्रीनिवासाश्रम सु महिमा अनन्त श्रीकुण्ड वर्णकौ।
स्नान करि तहाँ ध्यान धरि मन श्रीनिवास सुचरणकौ।।६।।
जोकेउ बडभाग नर बरषट रतन नित गाइहै।
रूपरसिक सुजान मनसों सही दम्पति पाइहै।।७।।

इति श्रीषटरत्न समाप्तम्।

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशाःमृत सागर। तामें पंचषट रत्नउजागर॥
ताकी छटी लहरि सुखराशी। पूरण भई महा अघनाशी॥

इति छठी लहरी ॥६॥

॥ दोहा ॥

लहरी सप्तमी में लिखों, सूक्षम मन उपदेश।
बहुरिजु चौदह चौपई, भरी सुयश भगतेश॥१॥

अथ सूक्ष्म मन उपदेश लिख्यते।

॥ दोहा ॥

रेमन श्रीहरिव्यास भजि, दायक श्यामा श्याम।
अखिल लोक गुरु प्रेम निधि वासी दम्पति धाम॥१॥
रेमन षटपट छांडिदै, श्रीभट दास मनाय।
वनवासी नट मुकुट धरि, प्रिया मिलै तव आय॥२॥
रेमन जगसों प्रीति तजि, भजि भजि भजि हरिव्यास।
सजि सजि निर्गुण संगको, तव पावौ सुख रास॥३॥
निर्गुण संग हरिव्यासकौ, और त्रिगुण सब जान।
ताविन राधा लालसौं, होय नहीं पहिचान॥४॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, आचारज राजेश।
चरण शरण तिनकी विना, मिलै न भूलि वनेश॥५॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, श्रीहरिप्रिया सुजानि।
श्रीदासी श्रीयुगलकी, सदा सखी अगवानि॥६॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, दश दिश जीतन हार।
अति उदार सब जगत में, कियो भजन विस्तार॥७॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, परम कृपाल सुजान।
चरण शरणही मात्र ते, देत युगल वरदान॥८॥
कर्म धर्म सब तजि मना, भजिलै श्रीहरिव्यास।
तव पावै तू प्रेम निधि, श्रीमत विपिन विलास॥९॥
रेमन निश्चय जानि तू, लोभ सकल अघ मूल।
सो तजि भजि हरिव्यासजू, ह़रण ताप त्रयशूल॥१०॥

रेमन श्रीहरिव्यास विन, तेरो नाहि न कोय।
तास कृपातें पाइये, प्यारी प्रियतम दोय॥११॥
रेमन चञ्चल सकल तजि, खल मेरी यह बात।
सुनि हिय धरि हरिव्यासके, चरण अरुण जल जात॥१२॥
रेमन या कलि काल में, और उपाय न मित्त।
अर्द्ध नाम हरिव्यासकौ, भजौ सदा दृढ चित्त॥१३॥
कर्म धर्मकी पासतें, रेमन बँधिए नाहि॥
भजिये श्रीहरिव्यासजू, रसिक मण्डली माहि॥१४॥
रेमन भूलि न कीजिए, साधुन को अपमान।
सो अपराध छूटै नहीं, कहतजु वेद पुरान॥१५॥
रेमन श्रीश्रीहरिव्यास के, दास चरन की धूरि।
शिर धरिए अति प्रीतिसौं, दायक मङ्गल भूरि॥१६॥
रेमन श्रीहरिव्यासके, दासन के संग पाय।
महा प्रसाद जल आदिदै, और संग नही खाय॥१७॥
भजन तेज घटिजात है, और संग में खात।
ताते शठ यह समझिले, मेरी उत्तम बात॥१८॥
रेमन श्रीहरिव्यास के, दास दास पर साद।
सदा नेम धरि पाइए, धारि हिये अहलाद॥१९॥
साधु धर्म हरिव्यास के, दासन तें मन सीख।
तिन विन मिलै न लोक में, साधु धर्म की भीख॥२०॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, रसिकन कौ धन प्रेम।
तिनके चरणाश्रित बिना, बँध्यो सकल जग नेम॥२१॥
रेमन श्रीहरिव्यास के, दास जान पितु मात।
तिनहीसों कीजै सदा, महल टहल की बात॥२२॥
रेमन या संसार में, भजन अनेक प्रकार॥
श्रीहरिव्यास उदारकौ, भजन सारकौ सार॥२३॥

तू मेरौ अतिही हितू, तोसों कहौं विचारि।
रेमन निहचौ करसदा, श्रीहरिव्यास चितारि॥२४॥
राधा माधव मिलन की, बात यहै सत जान।
रेमन श्रीहरिव्यास पद, होय तवैं पहिचान॥२५॥
रेमन दृढ करि उर धरौ, यहै बात सिद्धान्त।
युगल मिलावन और नहि, श्रीहरिव्यास उपरान्त॥२६॥
रेमन श्रीहरिव्यास के, दासनकौ करि संग।
तब तेरे दृढ लागिहै, गौर सावरो रंग॥२७॥
श्रीवृन्दावन माधुरी, अद्भुत नित्य विहार।
रेमन श्रीहरिव्यास बिन, पावै नाहि लगार॥२८॥
रेमन श्रीहरिव्यास पद, धर्‌यो न तौलौ शीश।
जोलौं हिय कहौ क्यों बसै, वृन्दावन बन ईश॥२९॥
जबलग श्रीहरिव्यासकी, शरण भयो मन नाँहि।
वृन्दा विपिन विहार छवि, क्यों आवै चित माँहि॥३०॥
सब बातन की बात यह, रेमन भजि हरिव्यास।
ताविन तेरी सकल विधि, मिटै नहीं भव फास॥३१॥
रेमन करि एकादशी, जन्म कर्म चितलाय।
सदा चार करि प्रीतिसों, रसना दम्पति गाय॥३२॥
रेमन भटक्यो बहुत तू, अब कछु समझि सयान।
अम्मृत श्रीहरिव्यास भजि, छाडि विषय रसपान॥३३॥
कलियुग दोष समुद्र है, तामें है गुण एह।
रेमन श्रीहरिव्यास के, करैं नाम सों नेह॥३४॥
आचारज हरिव्यासजू, महा वाणी परकाश।
वेदनकों, दुल्लभ महा, वरन्यों महल विलास॥३५॥
रेमन श्रीहरिव्यास कें, दास चरण उरधारि।
छाडि सकलसों प्रीतितू, मैं तोहि कहौं विचारि॥३६॥

मनकी प्रीति तहाँ लगै, ताही गति कौ जाय।
तातेरे मन समझितू, हरिव्यासहि चितलाय।।३७।।
नित्य सनातन अज अमर, श्रीहरिव्यास उदार।
सुरनर मुनि जन दीन हित, प्रगटत बारम्बार।।३८।।
सूक्ष्म मन उपदेश यह, दोहा शुभ चालीस।
रूपरसिक जो गाइ है, सो पावै बन ईश।।३९।।
इति श्रीरूपरसिक कियो, सूक्ष्म मन उपदेश।
पूरण अघतम कौ यहै, दूरी करण दिनेश।।४०।।

इति श्रीसूक्ष्म मन उपदेश समाप्तम्।

अथ चौदह चौपाई लिख्यते।

॥ चौपाई ॥

वाँचे पोथी चमडी कूटै। साधु कहावै खोसै लूटै।।
जगत छोड चाहै ब्यौहारा। पढिकै भजै नही करतारा।।१।।
विषयी होय धरै जो ध्यान। गिरही कहैं ज्ञान विज्ञान।।
तप व्रत धारि होय जो क्रोधी। वैरागी पारा पुट शोधी।।२।।
भक्त होय पुनि भग कौ सेवै। हरिजन कलप्यौ दानजु लैवै।।
नरतन पाय कृष्ण नहिं जापी। इक पापी को होय मिलापी।।३।।
विद्या वेचि उदर जो भरहीं। जो काहू की निन्दा करहीं।।
देत फिरै जो शापा शापी। पुनि कोउ आन मंत्रकौ जापी।।४।।
मागै गाम देहुरा सेवै। आन देव की जूँठजु लेवै।।
श्राद्ध कनागत हरिजन खावै। हरि अर्पण विन जो कछु पावै।।५।।
वेद पुराण उलंघि जो चालै। बिना गुरु डालै गल मालै।।
साधु देखि दण्डोत न करहीं। सन्तन वचन हृदय नहि धरहीं।।६।।
राज अन्न पावै जो कोऊ। मिथ्या बात कहै जन सोऊ।।
एकादशी दिना अँन पावै। सम्प्रदाय शरणै नहिं आवै।।७।।
हरि भक्तनसों प्रीति न जोडे। जो कोउ वर पीपर कौ तोडै।।

सन्यासी शस्तर जो धारै। अज्ञ मनुष जीवादिक मारै।।८।।
हरि प्रसाद को छूति लगावै। मानुष वुद्धि गुरुसौ ल्यावै।।
चरण सुधा पानी करि जानैं। पाहनादि हरि अरचा मानैं।।६।।
भक्तनकी जो जाति बखानैं। आन देव सम श्रीहरि जानैं।।
अन श्रद्धा उपदेश करै जो। पर सम्पति यश देखि जरेजो।।१०।।
नाम महातम साँच न धरहीं। नाम भरोसे पापजु करहीं।।
नारी में मन जाका जावै। विमुख संग में जो कोउ पावै।।११।।
विमुखनसों मित्राई जोडै। काहूकौ मन फोडै तोडै।।
जोकोउ मादिक वस्तु जो पीवै। पुनि पापी जनकौ कोई छीवै।।१२।।
ऐसी बुद्धि चलैं नर नारी। तिनकौं ठोर न नरक मँझारी।।
सकल पुराणन माहि कहानी। इनमें एक बात नहि छानी।।१३।।
ए उनचास बात छिट कावै। सो हरिव्यासी जन मन भावै।।
सन्त कृपाल होय ताइन पर। रूपरसिक पावै सो सुख घर।।१४।।

।। दोहा ।।

इति श्री चौदह चौपाई, रूपरसिक यह कीन।
सम्पूर्ण सब ग्रन्थ मथि, दीज्यौ मति त्रिगुणीन।।

इति श्री चौदह चौपाई समाप्तम्।

।। चौपाई ।।

इति हरिव्यास यशामृत सागर। सनहु भक्त मन करिये कागर।।
महाविचार अर्थ की गहरी। पूरण भई सप्तमी लहरी।।

इति सप्तमी लहरी।।७।।

।। दोहा ।।

लहरि अष्टमी अब लिखूँ, सूक्षम हित उपदेश।
मंत्र मोहनी जानि पुनि, महिमा बहुरि बनेश।।

अथ सूक्षम हित उपदेश लिख्यते।

॥ दोहा ॥

वन्दौ श्रीहरिव्यासजू, माया गुरु भगतेश।
तासु कृपा करि कहतहौं, सूक्षम हित उपदेश॥१॥
व्याहि १ परोजन २ कारटौ ३, होम ४ कनागत ५ खाहि।
व्यातीपात६ मावस७ ग्रहण८, तुला९ दान१० मखमाहि११॥२॥
सती द्रव्य१२ सुतजनमकौ१३, नौतनवधू१४ विवाहि१५।
कंकणकौ १६ रण चढनकौ१७, हरिजन लेत न ताहि३॥३॥
चढ्यौ ऊतर्‍यो देवकौ १८, वारि फेंरिदियो दान१९।
मूलशान्ति२० संक्रातिको२१, आन उचिष्ट२२ अमान२३॥४॥
कलप्यौ२४ कुँवारे हाथकौ२५, विमुख साथकौ भोज२६।
अननि होय अनुरक्तिहै, तो जाई भक्तिकौ खोज॥५॥
निद्रा२७ निन्दक२८ नीचधन२८, भइया३० भूत३१ फरेश ३२।
पीर शीरणी खायकैं३३, खोवैं सुकृत जुलेश॥६॥
नाविस्वासी३४ गुरुत्वमुख३५, अघी ३६ उपासी अन्य३७।
कष्टी३८ दुष्टी३९ प्रेतेकौ४०, लेत न कवहु अनन्य॥७॥
सदा प्रेत इन में रहैं, जो कोउ इनको लेत।
भ्रष्ट बुद्धि ह्वै भजन में, कबहु न आवै चेत॥८॥
सुनों विचक्षण कहे अप, लक्षण ए चालीश।
इनहिं टारि पग धारिहैं, सो पावैं पदईश॥९॥
जैसें काँजी दूधमें, परै बूदही आय।
हरिविमुखन के अन्नतें, ऐसे भक्ति विलाय॥१०॥
चातक कीसी व्रत धरैं, करैं न अन्य अपान।
एक स्वाँति बूँदी बिना, सब जल खार समान॥११॥
रूपरसिक जो होय कोउ, सो चालौ इहिं माग।
तौ श्रीहरिव्यासीन में, पावौ बडौ सुहाग॥१२॥
दोहा हित उपदेशके, द्वादश कहे बनाय।

रूपरसिक जन धारियौ, श्रीहरिव्यास मनाय ॥१३॥

इति श्रीसूक्ष्म मन उपदेश समाप्तम्।

अथ मंत्र मोहनी लिख्यते।

॥ दोहा ॥

युगल रूप हरिव्यासकी, मंत्र मोहनी नाम।
लिखौं प्रेम पर दोहनी, दैंन सोंहनी श्याम॥

॥ दोहा ॥

हरिव्यासदेवायनम, या सम सुरतरु नाहि।
वामें भक्ति न मुक्ति है, परा प्रेम या माहि॥२॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र जपै जन कोय।
वनचारीसो पाइये, प्यारी प्रियतम दोय॥३॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र जपै निशि भोर।
महल सहलसो पाइहै, अद्भुत युगल किशोर॥४॥
हरिव्यासदेवायनम, नव अक्षर निज जान।
या विन राधालालसों, होय नही पहिचान॥५॥
हरिव्यासदेवायनम, ए नव अक्षर नेह।
बिना नेह नहि पाइए, प्यारी प्रियतम गेह॥६॥
हरिव्यासदेवायनम, पुनि श्री आदि वखानि।
नव अक्षर नवधा समझि, दशधा प्रेम सुजानि॥७॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र यहै आराधि।
गुरु मनु विन हरिनामिलैं, कहौं सकल श्रुतिसाधि॥८॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र यहै अति तेज।
याके जपही मात्रतें, द्रवै युगल करिहेज॥९॥
हरिव्यासदेवायनम, सर्व मंत्रकौ मंत्र।
जपै तास आधीन है, अतिही युगल स्वतन्त्र॥१०॥
हरिव्यासदेवायनम, नव अक्षर नव प्रेम।

नेमधारि जप करतनर, तासु मिलै घर क्षेम ।।११।।
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र यहै श्रुतिसार।
विन गुरु मंत्र न हरि मिलै, कहै सन्त निरधार ।।१२।।
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र युगल यह जानि।
विन अधिकारी कहौ मति, अति कहा कहौं वखानि ।।१३।।
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र महा ऽमृतसार।
ताकौ आस्वादन कियें, लगै मुक्ति सुख खार ।।१४।।
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र महावलवन्त।
दोय बरण ताके जप्या, यमरानो डरपन्त ।।१५।।
हरिव्यासदेवायनम, पाप काठकौ आगि।
अनत जन्म के त्रिविधअघ, सकल जरावै लागि ।।१६।।
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र जानि पछिराय।
सर्वजन्मके त्रिविधअघ, अहिसम सव चुनिखाय ।।१७।।
हरिव्यासदेवायनम, मंत्रसु अद्भूत चन्द्र।
भक्त चकोरनकौं सवै, सदा प्रेम सुखकन्द ।।१८।।
हरिव्यासदेवायनम, जो उचरै बडभाग।
चहल पहलकौं पाइसौं, अविचल युगल सुहाग ।।१९।।
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र महोदधिराज।
ताभीतर दोउ लालहैं, सकल रत्न सिरताज ।।२०।।
हरिव्यासदेवायनम, काम धेनुकौ काम।
तीन पदारथ तासुमें, यामें श्यामाश्याम ।।२१।।
हरिव्यासदेवायनम, सव मंत्रनकौ राय।
ताविन मंत्रन सिद्ध ह्वै, किये जुकोटि उपाय ।।२२।।
हरिव्यासदेवायनम, भाख्यो मन्त्र अनन्त।
ताके उचरत सकल अघ, दवि मरिजात तुरन्त ।।२३।।
हरिव्यास देवायनम, दायक युगल तुरन्त।

तावनि तीनौं कालमें युगल नहिये फुरन्त ।।२४ ।।
हरिव्यासदेवायनम, सब मंत्रनकी कील।
याविन सकलन सिद्धहै, कीलजुलगी अडील ।।२५ ।।
हरिव्यासदेवायनम, को कहिसकै बखान।
जाके जपतें तुरतहै, वश राधा भगवान ।।३६ ।।
युगल रूप हरिव्यासकी, मंत्र मोहनी नाम।
रूप रसिक गावै सुनें, सोपावै रँगधाम ।।२७ ।।
रसिक होय हरिव्यास, पदतिनसौं यहै प्रकाश।
जिनके हिय में जगमगै, श्री हरि प्रिया उपास ।।२८ ।।
तेईजानौं आपनौ और आनि सबजान।
तिनसौं भूलिन कीजिये, गुरुमत की पहिचान ।।२९ ।।
रूपरसिक बिनती करै, बार बार करजोर।
हरिव्यासिनके वृन्दसौ, बहुत निहोरि निहोर ।।३० ।।
मंत्र मोहनी आनसों, कहौ जुमति सबसाध।
धीठ्यो करि तुमसों, कहौं क्षमो मोर अपराध ।।३१ ।।
मंत्र मोहनी के कहे, दुहा वीशदस और।
रूपरसिक ताके गुणें, मिलै जुश्यामल गौर ।।३२ ।।
इति श्रीरूपरसिक कृत, मंत्र मोहनी नाम।
तीन तीस दोहासही पूरणता सुखधाम ।।३३ ।।

इति श्रीमंत्र मोहनी सम्पूर्णम्।२

अथ श्रीवृन्दावन धाम महिमा मंजरी लिख्यते।

॥ दोहा ॥

प्रथम वन्दि हरिव्यासपद, श्रीवृन्दावनधाम।
महिमा मंजरी लिखतहौं, पुनिभजि श्यामाश्याम ।।१ ।।
श्यामाश्याम विहार निज, वृन्दाविपिन उदार।
अर्वखर्व वैकुण्ठकौ, गर्व मिटावन हार ।।२ ।।

जय वृन्दावनधाम, निज सकल लोक सिरताज।
सर्वेश्वर सर्वेश्वरी, तहाँ करत युवराज॥३॥
अवधादिक हरिधामकौ, फलवैकुण्ठ कहन्त।
वनरजऊपर वारियेसो, वैकुण्ठ अनन्त॥४॥
जय जय जय वृन्दाविपिन, युगल केलि आगार।
ताकी महिमा कहनकौ, हारै वेदहजार॥५॥
श्रीहरिव्यास कृपा विना, लहै नहीं सो धाम।
अति दुर्ल्लभवृन्दा विपिन, निज घर श्यामा श्याम॥६॥
जय जय जय वृन्दा विपिन, कालीन्दी तटरम्य।
हितू दासिकी कृपा विन, सबको महा अगम्य॥७॥
परम सच्चिदानन्दघन, श्रीवृन्दावन धाम।
श्रीहरि प्रिया शरण विना, को पावै वह ठाम॥८॥
सबते पर गोलोक है, ताते पर वन राज।
दम्पति सुख सम्पति जहाँ, श्रीहरिप्रिया समाज॥९॥
अज अव्यय अविनाशि पद, हद बेहदते दूरि।
श्रीवृन्दावन धाम है, रसिकन जीवनि मूरि॥१०॥
जयति जयति नम जयति नम, श्रीवृन्दावन वाग।
जामें प्यारी पीयकौ, अविचल सदा सुहाग॥११॥
श्रीवृन्दावन धामकी, महिमा मंजरि नाम।
रूपरसिक गावै सुने, सो पावै रँग धाम॥१२॥
इति श्रीरूपरसिक करी, रवि संख्या दोहान।
वनपति महिमा मंजरी, पूरणता रसखान॥१३॥

इति श्रीवृन्दावनधाम महिमा मंजरी समाप्तम्।

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। श्रीगुरु सुयश रत्नकौ आगर॥
लहरि अष्टमी तीन प्रकारा। पूरण भई सकल अघजारा॥१॥

इति श्री अष्टमी लहरी।

॥ चौपाई ॥

लिखों अवजु गुरु भजन छतीसी। नमो जयति पुनि मंत्र पतीसी॥
तीजी महिमा मंत्र सुमानौ। या विधि लहरी नवमी जानौ॥

॥ दोहा ॥

अथ श्री मंत्र पतीसी यह, भजन छतीसी नाम।
सर्व गुरु हरिव्यासकी, लिखौं सुमिरि श्रीनाम॥१॥

राग भूपाली आभास दोहा

सुखकारी हरिव्यासजय जय जय सतगुरु रूप।
त्रिगुणा महतारी करी शिष्य बहुत सुरभूप॥

१ पद गुरु भजन छतीसी।

जयजय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी ।
सतगुरु तीन लोक हरि भक्ति प्रचारी॥१॥
जयजय श्रीहरिव्यास महा दुख जारी।
सतगुरु शिष्य कीनी त्रिगुणा महतारी॥२॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु बसि कीनें दोउ प्रियतम प्यारी॥३॥
जय जय श्रीहरिव्यास अभय पद दानी।
सतगुरु रंगधाम सब दिन अगवानी॥४॥
जय जय श्रीहरिव्यास हरण दुख रासा।
सतगुरु श्री भट चरण लीन निज दासा॥५॥
जय जय श्रीहरिव्यास अखण्ड प्रभाऊ।
सतगुरु रसिक नृपति चूडामणि राऊ॥६॥
जय जय श्रीहरिव्यास अत्यन्त कृपाला।
सतगुरु रसिक भक्त जीवनि उरमाला॥७॥
जय जय श्रीहरिव्यास युगल अवतारा।

सतगुरु भक्त राज हरिप्रिया उदारा ॥८॥
जंय जय श्रीहरिव्यास हितू हित जानी।
सतगुरु श्रीहरि प्रिया युगल मन मानी ॥६॥
जय जय श्रीहरिव्यास परारस रासी।
सतगुरु महावाणी श्रीमुख परकाशी ॥१०॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखदाई।
सतगुरु युगल मिलावत विना उपाई ॥११॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु अर्द्ध नाम अघ वोध विदारी ॥१२॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा गुरुभारी।
सतगुरु अनन्त भक्त कीनें संसारी ॥१३॥
जय जय श्रीहरिव्यास युगल नित जापी।
सतगुरु अनन्त पतित तारे महा सापी ॥१४॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु परशुराम हिय धाम विहारी ॥१५॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु नाम जपत लागै मुकतिजु खारी ॥१६॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा आचारी।
सतगुरु अनाचार जर सकल उखारी ॥१७॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु शरण विना ;यम करत खुवारी ॥१८॥
जय जय श्रीहरिव्यास चक्र कर धारी।
सतगुरु सकल अमंगल दल खल दारी ॥१६॥
जय जय श्रीहरिव्यास सकल विधि पूरे।
सतगुरु मत अविरोध माझ अति सूरे ॥२०॥
जय जय श्रीहरिव्यास सुदर्शन धारी।

सतगुरु निम्बादित्य सुयश विस्तारी ॥२१॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा वलधारी।
सतगुरु मत विरोधकी करत खवारी ॥२२॥
जय जय श्रीहरिव्यास दिशौ दिश जीती।
सतगुरु प्रगट करी भजन रस रीती ॥२३॥
जय जय श्रीहरिव्यास रसिक जन भर्ता।
सतगुरु अनन्त साधु कर्ता अघ हर्ता ॥२४॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु शरण कही भागौत मँझारी ॥२५॥
जय जय श्रीहरिव्यास जगत उजियारे।
सतगुरु सकल रसिक गण लोचन तारे ॥२६॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखदाई।
सतगुरु रसिक नृपति राजेश्वरराई ॥२७॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा आचारज।
सतगुरु अनन्त भक्तके कारज सारज ॥२८॥
जय ज्रय श्रीहरिव्यासस‍ु परम उदारा।
सतगुरु रसिकनकौ रस वर्षन हारा ॥२९॥
जय जय श्रीहरिव्यास आप सनकादिक।
सतगुरु गुणातीत सब जगकीआदिक ॥३०॥
जय जय श्रीहरिव्यास आप मुनि नारद।
सतगुरु सब दिन भवसागर के पारद ॥३१॥
जय जय श्रीहरिव्यास सकल गुरु रूपा।
सतगुरु परा प्रेम यज्ञके दृढरूपा ॥३२॥
जय जय श्रीहरिव्यास प्रेमके सेतू।
सतगुरु तीन लोक विद्या वलजेतू ॥३३॥
जय . जय श्रीहरिव्यास कमलदल लोचन ।

सतगुरु शरणागत आरत दुख मोचन ।।३४।।
जय जय श्रीहरिव्यास गौरवपुभ्राजै।
सतगुरु सच्चिदघन सव दिना विराजै ।।३५।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुख कन्दा।
सतगुरु नाम लेत अति होत अनन्दा ।।३६।।
जय जय श्रीहरिव्यास हरत हिय तमभ्रम।
सतगुरु रूपरसिकके कोटि नमो नम ।।३७।।

॥ दोहा ॥

इति श्री मंत्र पतीसि यह, भजन छतीसी नाम।
पूरण श्रीहरिव्यासकी, दायक दम्पति धाम ।।१।।

इति श्री गुरु भजन छतीसी समाप्ता।

॥ दोहा ॥

नमोजयति हरिव्यासकी, अथलिखते चितधारि।
रूपरसिक कृतमनोहृत श्रीहरिव्यास चितारि ।।१।।
जिनिके शिष्यसमूहमें, परशुराम निजदास।
सुरनर मुनितिहुँलोकमें, गुरु नमोजयति हरिव्यास ।।२।।
जिनके नामाभासते, होत त्रिविध अघनाश।
पतित उधारनआपहरि, नमो जयति हरिव्यास ।।३।।
बाहर भीतर युगल के, अगवानी निजदास।
सोमोपर किरपा करौ, नमोजयति हरिव्यास ।।४।।
कृष्णपदारथ हरिसुनो, गुणो राधिका व्यास।
युगलरूप साक्षातप्रभु, नमोजयति हरिव्यास ।।५।।
अनगणपापी तारिया सापी अतिअघराश।
दीनबन्धु अशरण शरण, नमोजयति हरिव्यास ।।६।।
श्रीभटपट प्रग्गट करण, भरन रसिक रसरास।
महावानी परकाशकर, नमोजयति हरिव्यास ।।७।।

तिनकी चरणशरणबिना, मिले न युगलबिलास।
दम्पति सँग श्रीहरिप्रिया, नमोजयति हरिव्यास॥८॥
सबविरोध मतनाशकर, मतअविरोध प्रकाश।
प्रेमरास सबक्यासहरन, नमो जयति हरिव्यास॥६॥
अखिलभक्त पालन करण, हरण जन्मकी त्रास।
स्वास स्वास सोभजि सदा, नमोजयति हरिव्यास॥१०॥
सदासनातन एकरस, तासजन्म नहिंनास।
महासच्चिदानन्द घन, नमो जयति हरिव्यास॥११॥
ताविनहोइन युगलकौ, वन विहार महारास।
सो दम्पति इच्छासही, नमो जयति हरिव्यास॥१२॥
दुस्तर मायायुगल विन, कौ न करि सकै दास।
राधा मोहन आपजै, नमो जयति हरिव्यास॥१३॥
अनन्त युगल प्रापतिकिया, करिकरि अपनेदास।
हंसवंश प्रगट प्रभू, नमो जयति हरिव्यास॥१४॥
सुख सम्पति दम्पति सही, मिलै तास अनयास।
चरणशरण ह्वै उच्चरै, नमो जयति हरिव्यास॥१५॥
नमो जयति नमजयतिनम़, श्रीहरिव्यास उदार।
नमोजयति नमजयतिनम, पराप्रेम दातार॥१६॥
नमो जयतिनम जयतिनम, नमो हरिव्यास महन्त।
नमो जयतिनम जयतिनम, दायक राधाकन्त॥१७॥
नमो जयतिनम जयतिनम, श्रीहरिव्यास सुजान।
नमो जयतिनम जयतिनम, सकल रसिकजनप्रान॥१८॥
नमो जयतिनम जयतिनम, हरिव्यास सुशील।
नमो जयतिनम जयतिनम, युगलदेत नहिं ढील॥१६॥
नमो जयतिनम जयतिनम, हेहरिव्यास प्रवीन।
नमो नमो करिहैं सदा, युगलदास आधीन॥२०॥

नमो जयतिनम जयतिनम, हे हरिव्यास पुनीत।
नमो जयतिनम जयतिनम, दायक दोऊ मीत॥२१॥
नमो जयतिनम जयतिनम, हे हरिव्यास कृपाल।
नमो जयतिनम जयतिनम, दायक राधालाल॥२२॥
नमो जयतिहरिव्यासकी, सुनें गुनें करिहेत।
रूपरसिक ताकौसही, माया पारजुदेत॥२३॥
इति श्रीरूपरसिक करी, नमो ज़यति हरिव्यास।
पूरणतापाई दुहा वीस चारि परकाश॥२४॥

इति श्रीनमो जयति समाप्तम् २

॥ दोहा ॥

अथ हरिव्यास कृपालकी मंत्र जुमहिमा नाम।
लिखन करौं हरिव्यास, पदसुमिरिसदा अभिराम॥१॥
हरिव्यास देवाय नम, पारक मंत्र जुएह।
मनुनायक तारक यहै, दायक युगल सनेह॥२॥
हरिव्यास देवाय नम, शरण मंत्र यह ज्ञान।
याविन राधारमणसों, होइन दृढ पहिचान॥३॥
हरिव्यास देवाय नम, सबमंत्रन कोईश।
वसिहैयाके जापते, दम्पति विशवा वीश॥४॥
हरित्यास देवाय नम, सखी रूप दातार।
याविन मिलैं नछैल, दोऊ राधानन्द कुमार॥५॥
हरिव्यास देवाय नम, सर्व मंत्रकी खानि।
याके जपही मात्रतें, मिलै हरिप्रिया आनि॥६॥
हरिव्यास देवाय नम, सर्व निगमकी सार।
याविन तीनों लोकमें, मिलैं न युगल विहार॥७॥
हरिव्यास देवाय नम, प्रेम भक्ति दातार।
मनवचक्रम जानो सही, याविन जनम खुवार॥८॥

हरिव्यास देवाय नम, चार पदारथ देत।
पुनि दायक नायक प्रिया, चरण कमलसों हेत॥६॥
हरिव्यास देवाय नम, सुमिरत रसिक महन्त।
दोय वरणताके जपें, उधरैं पतित अनन्त॥१०॥
हरिव्यास देवाय नम, सुमिरत रसिक महन्त।
याविन पावै पारकौ, भवसामुद्र अनन्त॥११॥
हरिव्यास देवाय नम, जपैं त्रिगुणकी मात।
कमोग्रादिसब जपतिनित, औरनकी कहावात॥१२॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र युगल दातार।
ताको माया त्रिगुणजा, सुमिरत वारम्वार॥१३॥
हरिव्यास देवाय नम, याजु मंत्रकी बात।
मेंमतिमन्द कहाकहूं, वाणी कहत लजात॥१४॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र मंत्र तंत्रेश।
याकी महिमा कहनकौ, हारे शेष गणेश॥१५॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र यंत्र तंत्रेश।
उचरतही अज्ञानता, दूरीकरण दिनेश॥१६॥
हरिव्यास देवाय नम, हंसमंत्र यह जानि।
सनकादिक नारदवहुरि, निम्बभानु मनुमानि॥१७॥
हरिव्यास देवाय नम, वेदागमकौ सार।
याके अर्थविचार बिन, मानुष जन्म खवार॥१८॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र जपै बड भाग।
अनायास पावैजुसो, दम्पति पद अनुराग॥१६॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्रजपै चितलाय।
ताकी महिमा भागकी, कोबरणें कविराय॥२०॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र सम्पदामूल।
ताकेजपही मात्रते, होय युगल अनुकूल॥२१॥

श्रीहरिव्यास देवाय नम, मंत्रजु महिमा एह।
सुनें गुनें गावैजुसो पावै युगल सनेह।।२२।।
इति श्रीरूप रसिककरी, मंत्रजुमहिमानाम।
तीन बीस दोहाभरी, पूरणता रसधाम।।२३।।

इति श्रीमंत्र महिमा

।। चौपाई ।।

इति हरिव्यास यशामृत सार। युगल रत्नदायक बडनागर।।
पूरणता पाईजु रँगीली। इति श्रीनवमीलहरी सम्पूर्ण।।

दशमी लहरी।

।। चौपाई ।।

दशमी लहरी लिखौं बनाई। तामें भैरव राग सुहाई।।
वहुरि देव गन्धारजु यामें। पद आभास वन्ध है जामें।।१।।

राग भैरव आभास दोहा।

जय जय श्रीहरिव्यासजू देवादिक गुरु देव।
सुर नर शरण जे आवही ते भवलै पाँवहि भेव।।१।।

।। पद ।।

जयजय हरिव्यासदेव देव्यादिक करत सेव
जानतजे भेव चरण शरण रागें।
सकल सुख निधान जान अमल कमल प्रवल
भान नेंक धरत ज्ञान उर अज्ञान तिमिर भागें।।
नित्य रहसि रस विलास लहत न
विन कृपा तास परमपद निवास आश तौ व क्यों पागें।
आनि वन्यो सहज संग भैरौ तजि भजि
अभंग चेरो ह्वै रहत कंग तेरौ कहा लागै।।१।।
भ्रमत भ्रमत जन्म कोटि तनक आय अटक्यो
वोट ताहू में करत खोट परत छिमुह आगें।

अैसो अवसरहि पाय जाय गहहु वेगि पाँय
जो हैं प्रभु जान राय देह निज मागें॥२॥
सर्व सृष्टि गुरु सरूप सदानन्द चिदा अनूप
भक्त भूप रूप नित्य वन्ध नेह त्यागें।
तत्रत ताहि मूढ रह्यो रूढ पद आरूढ होय
तत्त्व महा गूढ कूढ काहि न शठ खागें॥३॥
दिये पंच सँस्कार तौहु न समझो गँवार
कहा सार छारहैं धिकारतौ अभागैं॥
रूप रसिक जन कहाय उपजत नहि लाज
हाय निरखि मित्त चित्त चाय मति मिलाय गाग॥४॥

॥ दोहा ॥

प्रातकाल उठि गाइये, श्रीहरिव्यास उदार।
अहल महलकी जौ चहै, टहल सहल सुख सार॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास प्रात उठि गावौ,
भव निधि तरण हरण दुख हिय के सब सुख करण चरण चितलावो।
यह तन दुर्लभ पाय भजन विन अकजन जाय सोई सजलावो।
चिन्तित फलद दया निधि नागर अगद उजागर पद शिर नावो॥१॥
सकल शुभद हर्षद विशद कौ भजि भजि असद अलाप नसावो।
परम छवीलौ छविकी झिलि मिलि विमल उर माँहि वसावो॥२॥
जग सम्पति सब शकति परा कृति ताकी अति विपति वहावो।
मृदु मूरति सों करि मन तूरति प्रेम पुलक उमगावो॥३॥
युगल महलकी टहल अहलकी चहल पहलकी सहिलहिपावो।
सखी रूप परिकर अनूप में रूपरसिक मिलि रसिक कहावो॥४॥

आभास दोहा।

महायोध अविरोध मत कुमतादिकत महन्त।

सुर नरादि रक्षक नमो श्रीहरिव्यास महन्त ।।१।।

॥ पद ॥

नमो नमो हरिव्यास महन्त।
महायोध अविरोध सुमतिमें कुमति विरोधादिकत महन्त।।
मानुष देव अदेव उवारे तारे विषधर नाग अनन्त।
भक्त भरण दुख हरण करण सुख अशरण शरण आप भगवन्त।।१।।
महावाणी रसदानी वरणी अघ हरणी सव श्रुतिको तन्त।
निशि दिन महल टहल में बीतत परा प्रेम रसमें मे मन्त।।२।।
दश दिशि जीति भक्ति विस्तारी भक्त भूप किये महा असन्त।
जिनकी महिमा कौन कहै भिन तिनकी चरण धूरि अघहन्त।।३।।
श्रीरँग देवी आदि सहेली हितू सखी पुनि राधा कन्त।
वस कीनेहरि प्रिया रूपह्वै दम्पतिसुख सम्पति निरखन्त।।४।।
परम धाम चिदघन वृन्दावन षटऋतु युत जहा सदा वसन्त।
जारजधानी की अगवानी पाई जिन श्रीपद परसन्त।।५।।
त्रिगुण प्रसूता माया हरिकी सो शिषकीनी महादुरन्त।
चरण शरण जिनकी जेआये जिन पाये दोउछैल तुरन्त।।६।।
अखिल भुवनके रसिक जननकौ आचारजह्वै रस वर्षन्त।
तीन कालमें सदा चिरंजी तिनकी आदि मध्यनहिं अन्त।।७।।
जेबडभागी भये जगतमें तेतुव आधो नाम जपन्त।
अनन्त निवाजें पापी सापी महासुरापी भववूडन्त।।८।।
पुनितिनकेना मारधमहिमा शेषशारदा कहिनपरन्त।
रूपरसिक चारोंयुग माहीं जिन की सुरनरकोनकरन्त।।९।।३

आभास ॥ दोहा ॥

जाके अर्द्धहिनामकी, महिमाश्रीशुकदेव।
बरणी सो हरिव्यासजू भजहु अहो मन एव।।१।।

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास भजो मन भाई।
जिनके अर्द्ध नाम की महिमा शुक मुनि विष्णु रात प्रतिगाई॥
सत्य युग ध्यान यज्ञ त्रेता में द्वापर पूजा विधि समुझाई।
कलियुग में केवल हरि व्यासहि अर्द्ध नाम जगतरन उपाई॥१॥
और युगन में गुप्त जुराख्यौ। नाम महामुनि मुनि जन गाई॥
कलियुग जीवजानि मँद भागीं नाम प्रगट हरि दियो वताई॥२॥
मातापिता द्विज गोहन्ता और त्रिविध अघ गण समुदाई।
जानि अजानि नाम्र हरि उचरे ताके ए सब पाप विलाई॥३॥
कमो ग्रादि सब देव मुनीश्वर अर्द्ध नाम की आश कराई।
ताते हरि वोलो सब साधो सह जें आवा गमन मिटाई॥४॥
चलत फिरत सोबत पुनि जागत पावों अर्द्ध नाम मिठाई।
भजि भजि हरि नाम मधुर अति तजि तजि प्राणसकल कटुकाई।
जो हरिव्यास नाम लें पूरों॥ ताकी को कहि सके बढाई।
रूपरसिक हरिव्यास नाम पर कोटिक बार वारनें जाई॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

कहिये श्रीहरिव्यास है, दृढ करि वारम्वार।
मन क्रमवच निशदिन सदा यह, पनसार न सार॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास कहिए मन वचक्रम यही नेम निसिदिन मन गहिए।
राधा हरि आप रूप भक्त भूप रूपा॥
प्रगट भये तारन जगत आई अज अनूपा।
हरिव्यास पापनाश अर्द्ध नाम जानो॥
पूरो नाम लेत ताको को करे को बखानो॥२॥

चरण शरण तिन की विन मिलें युगल नाहीं।
रूप रसिक श्री करि कहैं भागौतादिमाँही ।।३ ।।

॥ आभास दोहा ॥

मंगल आरति कीजिये, भोंरहि श्रीहरिव्यास।
नवधादिक परमाथी, दायक युगल विलास ।।१ ।।

॥ पद ॥

आरतीमंगल आरती श्रीहरिव्यास की।
कीजें भोरहि श्रीभटदास की ।।
नवधा दीप प्रेम कर वाती। घृत पुनि ज्योतिसु साधु सजाती ।।१ ।।
हृदय थाल धरि आरति कीजै। जीवन जन्म सुफल करि लीजै ।।२ ।।
श्रीहरिप्रिया चरण चितदीजें दम्पति सुख सम्पति रस पीजे ।।३ ।।
परम सहेली संग विराजें। युगल साथ परि कर युत भ्राजें ।।४ ।।
रंग धाम वासी सुखरासी महावाणी श्रीमुखपरकासी ।।५ ।।
दश दिश जीत भक्ति विस्तारी। शिषकीनी त्रिगुणा महतारी ।।६ ।।
रसिकनकौ रस सबदिनवरषैं। जिनकौ अर्द्धनाम मनकरषै ।।७ ।।
युगल रूपचिद्धन सुखसागर। रूपरसिक हरिव्यास उजागर ।।८ ।।

इति राग भैरव।

अथ राग देवगन्धार

॥ आभास दोहा ॥

भजि हरिव्यास उदारकौ रेमन वारम्वार।
जाविन तेरो कोउ नहीं मेरो वचनविचार ।।

॥ पद ॥

रेमन भजि हरिव्यास उदार।
विन हरिव्यास न जग में तेरो मेरोवचन विचार ।।
मानुष तन अति दुर्लभपायो काहे करत खवार।
बेगिसम्हारि मूढमति वौरे अब क्यों करत अवार ।।१ ।।

जोदायक दम्पति सुखसम्पति वृन्दा विपिन विहार।
पतित उधार हेतजगप्रगटे आप युगल अवतार॥२॥
अशरण शरण हरण संसृति दुख निराधार आधार।
अँगवानी सोरंगधामकौ महा वाणी करतार॥३॥
दशदिश जीति भक्ति विस्तारी तिनकी कथा अपार।
कृपासिन्धु सोदीनवंधु हेसर्गुण निर्गुण आगार॥४॥
श्रीहरिप्रिया अनूप रूपसों मूरति रस शृंगार ।
रूपरसिक भगतेश भूपविन अनँत फजीताचार॥५॥

॥ आभास दोहा ॥

सन्तौहम सब कर्म धर्म भर्म श्रम करिनाश।
मायागुरु हरिव्यास के भये चरणकेदास॥

॥ पद ॥

सन्तौ हम सेवक हैं जाके।
माया गुरुहिरव्यासदेवजू चरण शरण भये ताके।
कर्म धर्म सब भर्म मिटाये महल टहल रस छाके॥
निर्भय रहे लोक त्रय माहीं जन्म मरण भय हाके॥१॥
त्रिगुण किये साके अति वाके ह्वै हरिव्यासी पाके।
रूपरसिक हरिप्रिया उपासी चौरासीते थाके॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

हमतो श्रीहरिव्यास के चरण उपासी दास।
सदाउदासी त्रिगुणसों निर्गुण पदमें वास॥

॥ पद ॥

हमतो श्रीहरिव्यास उपासी,
सदा उदासी त्रिगुण गवन सो कुंज भवन के वासी।
गावें परा प्रेम रस रासी। महावाणी अविनाशी।
चाहत नहीं मुक्ति आदिक सुख गंगारेवा काशी॥१॥

अगिवानी दम्पति के सब दिन सम्पति कोटिक मासी।
जिनकी शरण भागवत माही श्रीमुख हरिव्यास प्रकासी॥
अर्द्धनाम हरिव्यास उचारत होइ नाश अघराशी।
रूपरसिक भक्तेश भूप विजि विचरक सदा खुलासी॥३॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। दश लहरी दोइ राग उजागर॥
श्रीगुरु चरण महा रति दाई। पूरणता पाई जिय भाई॥१॥

इति दशमी लहरी सम्पूर्ण।

॥ चौपाई ॥

एकादशी लहरि अब लिखिये। तामधि राग विभासजुदिखिए॥
वहुरि विलावल रागजु तामें। महा मनोहर पद है जामें॥

॥ विभास दोहा ॥

जिनके नामाभासके पढतहि पाप विलात।
ऐसो शुभ दायक सदा सुमिरिलेहु उठि प्रात॥

॥ पद ॥

प्रात समय हरिव्यास नाम शुभ लीजै सकल अमंगल हारी।
जिनको नाम भास पढतेही पाप अनन्त जाय जरि भारी॥१॥
सम्पूर्ण हरिव्यास नामकी महिमा अमित कही नहिं पारी।
श्रीहरिव्यास अद्भुत पर रूपरसिक मन क्रम वचवारी॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

जो चाहत हो सुख सदन, श्री वृन्दावन वास।
तौ तू श्रीहरिव्यास भजि, तजि सब जगकी आस॥

॥ पद ॥

सकल आस तजि भजि हरिव्यास मन जो चाहो वृन्दावन सुख घर।
अनायास हिय वास करावत बर वट राधा श्यामसुंदर वर॥
भक्त राज महाराज दयानिधि ऋषि सिधि दायक प्रभु सकलेश्वर।

युगल रूप सब दिना विराजत आचारज हरि प्रिया मनोहर॥१॥
जिन कृत महावाणी मुख उचरत भये पतित वहु रसिक पुरन्दर।
भट पट भूषण त्रय अघ हर्ण तीन ताप दूषण पुनि यमडर॥२॥
जगत उद्धार हेत जग प्रगटे युग युग में सव दिन करुणाकर।
रूप रसिक रसिकेश्वर पति भजि भये अनंत पतित पावन तर॥३॥

॥ इति राग विलावल ॥

॥ आभास दोहा ॥

यह मागों हरिव्यास जू, तुमपै इक वाता।
रहौं अनन्यनि में सदा, तब गुण गणराता॥

॥ पद ॥

यह मागौं हरिव्यास जू तुमपै एक जुवाता।
रहौं अनन्यनि में युगल पद सुमिरौं जलजाता॥
सुख सम्पति दम्पति चरण सुमिरौं जलजाता।
रूप रसिक तिहु लोकके तुमहीं पितु माता॥१॥

॥ आभास दोहा ॥

यह मांगत श्रीहरि प्रिये, रहौं अनन्यनि मांहि।
तव पद रति तव गान गुण, अचल बुद्धि ठहराहि॥१॥

॥ गद ॥

यह मांगत श्रीहरि प्रिये दीजै मोहि सोई
रहु अनन्यनि में सदा तव पदरति होई।
अचल बुद्धि अनुरागसों निशिदिन गुण गाऊ॥
श्यामा श्याम सरूपको हिय मांहि वसाऊँ॥१॥
भजन करत विचि आनिजु दोऊ अन्तर लावें।
तिनको दरश दया निधे जिन मोंहि दिखावें।
निजदासीजूकी कृपा मोपै नित राजो।
रूपरसिक विनती करै जनजानि निवाजो॥३॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

गुण गर्वीली गौर अंग लाडगहेलि सहेलि।
जयजय जय श्रीहरिप्रिया अमितरूप अलवेलि॥१॥

॥ पद ॥

जयजय श्रीहरिप्रिया सहेली। अलक लडीली लाडगहेली।
गुण गर्वीली गौरसुअंगी। रसिक रसीलीनवरँग रंगी॥
नवलवासा। विश्व आभा उत्तमानिज बिलासा।
सरसरूपा मधुरा भद्रा उत्तमा।
पद्माश्यामा शारदा कल कृपाला देवि देविका।
सुन्दरी सखी पद्म आस्या इन्दिरा सुखसेविका॥२॥
जयजय श्रीहरि प्रिया प्रवीणा।
अन्त रँगीली अन्तरहीना सहज सकल सुखदायक श्यामा।
अग्रवर्तिनी वामारामा। श्यामा वामा कृष्णा कामिनी अनुपमा।
श्रुतिरूपका भागवति का माधवी असिता गुणा करि भूपिका।
वल्लभा गौरांगीकेशी पुनि पवित्रा कुंकमा।
हितू श्रीहरि प्रिया जयजय नित्यनव तन मनुरमा॥४॥
जय जय हरि प्रिया किशोरी। चक्र चारु चूढामणि गौरी।
अद्भुतनाम रूप गुण रसदा। अष्टअष्ट द्वैविशदायशदा॥५॥
विशदा यशदा जगमगात जग चन्द्र कोटिन भानुका।
नैन अंजन विना रञ्जन गंज खंजन मृगरूखा।
सुभ्र सलिता ललित उरपर मुक्त हारा वलिरली।
अलक अवली रवि ललीसों मिलि चली छवि अतिभली॥६॥
जयजय श्रीहरि प्रिया सलोंनी सब अँग सोहै सुभग सुठोंनी।
उपमा जेतिक जगमें जोहै। नवतन आभा आगेंकोहै॥७॥
कोहैं कोक कपोत केतकि कीर कोकिल केहरी।
कला निधि कुरु विन्द कंचन कल कमल कदली करी।

सौन्दर्य्यता माधुर्य्यता सुकुमारता मनहारिणी।
वलि रूप रसिकन के वसौ हियव्यथा विरह विदारणी॥८॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

दैवीजीव उधार हित परमेश्वर अवतार।
रसिक नृपति चूडामणि श्रीहरिव्यास उदार॥१॥

॥ पद ॥

जिनपर कृपा कृपानिधिकीनी तिनके भये विध्वंस विकार।
दैवीजीव उधारण कारण प्रगटे परमेश्वर अवतार॥
रसिक नृपति चूडामणि वृन्दारण्य पुरन्दरको जिनिवर्ण्यो सुन्दर।
नित्य विहार लीला शक्ति अनन्त रूप गुण रूप रसिक को पावें पार॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

चरण कमल हरिव्यास के, गाये नहिं चितलाय।
दुर्लभ नर तन पायके, कहा कियो जग आय॥१॥

॥ पद ॥

श्री हरिव्यास चरण नहिं गाये। ते नर या जगमें क्यों आये॥
विषय वासना कर्म कमाये। वृथा वैसके द्योस गमाये॥१॥
हरि हरि जन सो विमुख रहाये। ते तिनके तुरतहि फलपाये॥२॥
युगल चन्द सों चित्त न लाये। अब कहा सोचत यमके खाये॥३॥
श्री भागौत उपाय वताये। रूप रसिक तें चित्त न चाये॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

कृपासिन्धु प्रभु कृपा करेंगे दीन जानिके दुःख हरेगे॥
औढर ढरन सुढार ढरेंगे तव तेरे सन्ताप टरेंगे॥
अभय हाथ जब माँथ धरेंगे जन मनके जंजार जरेंगे॥
निफल तरू ते सुफल फरेंगे मनवांछित सब काज सरेंगे॥
वृन्दावन वन विचरेंगे रूपरसिक ह्वै रंग रँगेगे॥

॥ आभास दोहा ॥

तिनही को अब जानियो, या कलि में वडभाग॥
जिनको श्रीहरिव्यास के, चरण कमल अनुराग॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास पदाम्बुज रागे। ते अलि या कलि में वड भागे।
उन्मत रहत सदा सँग लागे। परम प्रेम पीयूषहि पागे॥१॥
विचरत विषय वासना त्यागे। अवलोकतहिअमंगल भागे॥२॥
शुद्ध रूपके दायक सागे। नित्य नेह के पहिरे बागे॥३॥
निरखत जिनके भाग हैं जागे। रूपरसिक रसमें अनुरागे॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

भूल्यौ कहा भ्रम देहु तजि, ले हँसि तिलक लिलार।
आनि वन्यो है अति भल्यौ, इहि अवसर इहिं वार॥

॥ पद ॥

आनि बन्यो अवसर यह नीको। भूल्यौ कहा भ्रम देत जिही को॥
लेहु ललाट सुयश को टीका। ध्यान धरो उर प्यारी पियको॥१॥
बुरो मानि है मेरी कही को। तूतो सज्जन कैसी सही को॥२॥
होईहौ क्रीडा मृग प्रवतीको। धृग जीवन है तेरे जियको॥३॥
राचि रह्यो जो है रँग फीको। रूपरसिक तू असल वसीको॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

रंग रँगीली हितू हरि, प्रिया अली अलवेलि।
रंग महल में रची मिलि,, रंग रँगीली केलि॥

॥ पद ॥

रंग महल में मंगल माई। रंग रँगीली रहसि मचाई॥
रंग रँगीली हित सहेली। श्री हरि प्रिया अली अलवेली॥
अली अलबेली हितू श्री हरि प्रिया हिय हेतसों।
नित्य सुख से वे सदा अनुराग जु चित चेतसों॥

धन्य धनि हे भाग जिनको जे रँगी या रंग सो।
अनुदिनापीप्यारी जैसे न्यारी होत न संग सों॥२॥
सुख आसन दम्पति बैठाये। भांति भांति के लाड लडाये॥
वर उरसों उरजन अरबाये। निपट निषेक अंक भर वाये॥
अंक भरवाये निशंके निपट नबल नेहसों।
उमग अति अनुराग उमहति चहति एकत देहसों॥
कहत नाहिन वने मोपे इनिके सहज स्वभाव ये।
एकही ह्वै दोय एकहि वेष बरण बना इये॥४॥
बहु लाखन अभिलाष पुराये। भये भाव तिनू मनके भाये॥
नवल कमल दल सेज विछाई। विहरत जहां रही छवि छाई॥६॥
रही छवि जहां छाय छवि सों वर विहारनिविल सही।
प्रथम संग अनंग उन्मत पिलिहि खिलि हिल मिल सही॥
भृकुटि भंग तरंग तमकनि रमकि झमकनि मनहरे।
लचनि लंक विरच निरति रण सचनि शशि हरणन करै॥६॥
गर्व रोष हुंकारहि हौलैं। विचिविच मधुर मधुर मुख बोलें॥
मधुर मधुरकल किंकिणि बाजें। चरणा भरण करण सुखसाजें॥७॥
करण सुख साजें चरण अभरण अनुपम सुरण के।
धुनि सुहावन श्रवण सुनि तन मन न होत विछुरनि के॥
मिलि रहे मिलि रहेंगे मिलि रहे है दिन दिन दोऊ।
निज सुखी की कृपा विन कैसे कहां समुझे कोऊ॥८॥
अलक छुटी उरपर अरवर रही मुक्ता लर तूटी लखरही॥
जुरे जोर पग हारिन माने। पी पी मधुर सुधा धरपानें॥६॥
सुधा पानेंही पी पी जुरे युगल विहार में।
हारि मानि नरहे कोउ रहे ढर इहि ढार में॥
मते मदनि मनोज मोजनि चौज चौगुणि चित्त में।
हठन हठतें हों न जानों कौन घटते मित्त में॥

श्रमवन कनें वदन तनवनें। लखि सन सनें रखिये तन मनैं॥
यह सुख परम सार को सारा। यह सुख अति दुर्लभ संसारा॥११॥
अति दुर्लभ संसार यह सुख लहै को जोई लहै।
नवल वासा सहचरी की दिन दया जिन पर रहै
रूपरसिक अनूप शोभा निरखि नैन सिराय हौं।
माया मोपर मानिहो तौ या प्रसादहि पायहौं॥१२॥

॥ आभास दोहा ॥

एक भरोसें रावरें, नहिं औरनिकौ सोहि।
अधम उधारनि विरदकी, है आशा यह मोहि॥

॥ पद ॥

एक भरोसो रावरो नहिं और ठनि कोई।
अधम उधारन नामहै आशा मोहि सोई॥
धरिधरि जन्म अनेक मैं किये पाप अनन्ता।
अवकी वेर उधारिये हे हरिव्यास मनन्ता॥
मनमाहीं फूल्यौ फिरे मायामदमातौ।
भलौ बुरो सूझ्यो नहिं जैसे द्रगहातौ॥
मोसों तौ विगरी सवै सुधरै अब तोसों।
रूपरसिक करणी कछु बनत न अब मोसों॥

॥ आभास दोहा ॥

श्रीहरि व्यास उदार, भजिरे मन वाम्वार।
तीनलोक गुरु प्रचुर यश, अन गण पतित उधार॥

॥ पद ॥

भजिमन श्रीहरिव्यास उदार।
तीन लोक गुरु पतित उदार निर्गुण त्रिगुण भक्तदुख हर्त्ता।
युग युगमें हरिभक्त विभर्त्ता॥
जो निज वस्तु वेद नहिं जानी सो महावाणी आप बखानी ॥१॥

श्रीहरिव्यास युगल को नामों। जा बिन मिंले न दंपति धामों॥
छाडि सकल मायिक जग कामों। श्रीहरिव्यास सुमिरि अभिरामों॥२॥
जा माया रजतमसत जाया उत्पति पालन कर पुनि खाया॥
जा माया के सकल उपासी। श्रीहरिव्यास चरननकी दासी॥३॥
सर्वोपरि वृन्दावन सोहै। कोटिक रमा काम न मोहै॥
ता रजधानीकी अगिवानी। जिनपाई श्रीपद उर आनी॥४॥
श्रीहरिव्यास सदा आराधो। श्रीहरिव्यास अगाधो साधो॥
श्रीहरिव्यास राधिका साधो। तिन बिन मिटें नहीं भव वाधो॥५॥
सोबत श्रीहरिव्यास चितारो। श्रीहरिव्यासहि सांझ सकारो॥
चलत फिरत बैठत यह धारौ। श्रीहरिव्यास नमो करतारौ॥६॥
वर्णाश्रम पुनि भेष जुधारी। विन हरिव्यास सकलकी खारी।
गुरु हरिव्यास अर्थ जब पावै। तव चौरासी को दुखजावै॥७॥
श्रीहरिव्यास युगल रस दाई। विन हरिव्यास न युगल मिलाई।
तातें शरण गहो हरिव्यास। रूपरसिक पूरें तब आशा॥८॥११॥

॥ आभास दोहा ॥

भजिये श्रीहरिव्यासजू, श्रीमहाराज कृपाल।
दीनबन्धु भव पाशके, नाशक दीनदयाल॥

॥ पद ॥

भजिदीनवन्धु कृपाल श्रीमहाराज श्रीहरिव्यासजू।
भव पाश नाशक जगतगुरु श्रीभटप्रभूके दासजू॥
सुखधाम अतिनिष्काम श्यामाश्याम सेवततत्परम्।
सववेद दुर्लभ करीवाणी महा रसिक मनोहरम्॥१॥
तिनकौ शरणविन लोकत्रयमें युगलचन्द मिलैं नहीं।
महादेव देवीप्रति कही सो रुद्र रहसिजुशसही॥२॥
महा पतित पावन भक्तभावन नामअर्द्ध उचारते।
अति त्रिविध पाप अगार निर्मल शुद्धह्वै अघभारते॥३॥

हरिव्यास पूरौ नामलै पुनि चरण शरण जु आवही।
तिनकी सुमहिमा शेषशारद कहत अन्त न पावहीं ।।४ ।।
हरिप्रियारूपा अनूपह्वै निशदिन युगल सेवाकरें।
हरिव्यास परमदया विना तिहि धामकौउन अनुसरें ।।५ ।।
अवनी सकल दशदिशाजीती भक्तवल जनपालजू।
वरुदेव देवी शिष्यकीने मनुष्य नाग करालजू ।।६ ।।
तिनके शरीर सपरसते भये परशुराम सुदेवजू।
पुनिभये जयजय अमर अगते मच्छछोना एवजू ।।७ ।।
सो सदा चिरजीवी युगल तन अनन्त वपुधारी प्रभू।
श्रीरूपरसिक सुजान नायक प्रेमदायक अजबिभू ।।८ ।।१४ ।।

॥ आभास दोहा ॥

सकल भक्तजन गण पिता माता श्रीहरिव्यास।
दीनवन्धु अशरण शरण करण सकल अघनाश ।।

॥ पद ॥

जय हरिव्यास दीनजन त्राता। सकल भक्तजन गणपितुमाता ।।१ ।।
जय श्रीहरिव्यास तिहूँ पुरचारी। शिषकीनी त्रिगुणा महतारी ।।२ ।।
श्रीवृन्दावन सबदिन वासी। जय हरिव्यास महासुखराशी ।।३ ।।
जयश्री हरिव्यास प्रेमकी राशी। महावाणी श्री मुखजु प्रकाशी ।।४ ।।
जय जय जय सत गुरु हरिव्यासा। आचारज श्रीभटके दासा ।।५ ।।
जय हरिव्यास कृपालजी। सव सन्तनके रक्षपालजी ।।६ ।।
श्रीहरिव्यास पद्मदल लोचन। शरणागत जनके अघमोचन ।।७ ।।
संगसदा अनगण साधूजन श्रीहरिव्यास प्रेम आनन्दघन ।।८ ।।
जय श्रीहरिव्यास रसिक राजेश्वर। परम उदार सकल सुखके घर ।।९ ।।
जय हरि व्यास सुजानजी। हरिभक्तनमें परमानजी ।।१० ।।
जय हरि व्यास हरिप्रिया रूप। सदा दोयसम परम अनूप ।।११ ।।
जय हरिव्यास युगल तन सोहन। रूपरसिक रसिकन मन मोहन ।।१२ ।।

॥ आभास दोहा ॥

पतित उद्धारन हेतसों युगयुग होत प्रकास।
हो मनसों भजिये सदा दम्पतिदा हरिव्यास॥

॥ पद ॥

मन हरिव्यासजू भजिलीजैहो॥
अति दुर्लभ सुल्लभ दम्पति रस सम्पति तरबस पीजेहो।
पतित उद्धरा हेतजग प्रकटे अति करुणा रस भीजेहो॥
रूपरसिक भक्तेशभूप पर तन मन धन वलि कीजैहौ॥१४॥

॥ आभास दोहा ॥

भजन षोडशी लिख्यते रूपरसिक कृतएह।
नित्य पाठताकों किये युगल आपनो देह॥१॥

भजिये श्री हरिव्यास कृपाल। तबें मिलेंराधा गोपाल॥१॥
भजिये श्रीहरिव्यास कृपाल, रसिक भक्ति जीवनि उरमाल॥२॥
भजिये श्रीहरिव्यास कृपाल, करुणा सागर नैन विशाल॥३॥
भजिये श्रीहरिव्यास कृपाल। चरण शरणकों करत निहाल॥४॥
भजिये श्रीहरिव्यास उद्धार। प्रगटजु परमेश्वर अवतार॥५॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। सर्व भक्तजन प्राण अधार॥६॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। श्रीवृन्दावन नित्य बिहार॥७॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। अर्द्धनाम अघसिग रे जार॥८॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। श्री मत महावानी करतार॥९॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। देवी देव अनन्त उधार॥१०॥
भजिये श्रीहरिव्यास पुनीत। रसिकजननि गुरुप्यारे मीत॥११॥
भजिये श्रीहरिव्यास सुजान। स्वयं प्रगट राधा भगवान॥१२॥
भजिये सतगुरु श्रीहरिव्यास। आचारज श्री भटके दास॥१३॥
भजिये अविनाशी हरिव्यास। युगल मिलावें विना तलास॥१४॥
भजिये सर्व पुण्य श्री व्यास। तीन लोक में यश जु प्रकास॥१५॥

भजिये श्री हरिव्यासाचार्य । भूप रसिक जन कारज सार्य ।।१६।।
इति श्री रूप रसिक कृत भजन षोडशी नाम।
पूरणता पाई यहै दाई श्रीरँगधाम ।।१७।।

राग विलावल ।। चौपाई ।।

इति हरिव्यास यशामृत सागर। एकादशी लहरी प्रेमागर।।
दोइ राग में पद सुखदाई। पूरणता पाई मन भाई।।

।। इति एकादशी लहरी ।।

।। चौपाई ।।

लहरि द्वादशी जानहु भाई, तामे राग धनाश्री गाई।
पुनि सारंग गौरी में पद है, जयतिश्री में रागलो हदहै।।

।। राग धनाश्री दोहा ।।

रस आगार भयो सदा, श्री हरिव्यास उदार।
पतित उधार महा प्रभु, त्रिभुवन भक्ति प्रचार।।

।। पद ।।

भजिये हरिव्यास उदार रस आगार जू।
करुणासिन्धु बन्धु रसिकन के त्रिभुवन भक्ति प्रचार जू।।
अति अनूप हरि प्रिया रूप पुनि भक्त भूप सव काल जू।
तिनकी चरण शरण विन दम्पति मिलै न राधा लाल जू।।१।।
जिनके अर्द्ध नाम से सव अघ दूर होत अन यास जू।
रूप रसिक हरिव्यास कहौ निति दहो आन सब आस जू।।२।।

।। आभास दोहा ।।

जिनके आधे नाम भासते, सकल पाप ह्वै नाश।
श्री चारज हरिव्यास भजि, मरवाणी जू प्रकाश।।

।। पद ।।

आचारज हरिव्यास जू परमेश्वर अवतार।
महावाणी प्रकाश जू देवी देव उद्धार।।

तिनके नामा भासते सबही पापविलाय।
सो मन क्रम बच निशि दिना श्रीहरिव्यास मनाय॥
श्रीराधावर लालको वृन्दा विपिन विहार।
तिनके चरण शरण विन पावै नाहि लगार॥
ताते भजि हरिव्यास जू सव भक्तगण भूप।
तासु कृपा तें पाइ है नित्य विहार स्वरूप॥३॥
अनन्त ग्रन्थ कर्ता विभू दश दिश जीत पुनीत।
नित प्रति वडे महन्त जन तिनके गावैं गीत॥४॥
पतित उधारन एक जग आपु युगल हरिव्यास।
आराधौ साधौ सदा छाडि आन सव आस॥५॥
परा प्रेम दाता सही कही भागवत माहि।
विना धर्म हरिव्यास के मिले भूलि हरि नाहि॥६॥
अज अकाम अभिराम अति अति उदार सुखराशि।
रूप रसिक रसके शयति सुमिर देव हरिव्यास॥७॥

इति राग धनाश्री।

॥ अथसारंग आभास दोहा ॥

मनतू भजि हरिव्यासजू जनमन पूरण आस।
जिनके आधे नामते, मिटी विरहकी त्रास॥१॥

॥ पद ॥

मनभजतू हरिव्यासजू।
जिनको अर्द्धनाम मुख उचरत मिटी द्विरदकी त्रासजू।
श्यामा श्याम धाम वृन्दावन जो चाहै सुख रासजू।
रूपरसिक भक्तेश भूपविन पूरण होतन आसजू॥

॥ इति रागसारँग ॥

॥ अथ रागगौरी आभास दोहा ॥

आराधौ हरिव्यासकौ, साधौ नाम अखण्ड।

ताकौ आधो लेतही पाप होतसब खण्ड ।।१।।

॥ पद ॥

आवो साधौ श्री हरिव्यास कहोरे। जीवनिकौ फल क्यों न लहौरे।।
आधो नाम लेत गजराजा। ताके सरे सकल विधि काजा।
हरिव्यास ले पूरा नामा। ताकौ देत अपन पौश्यामा ।।१।।
कलियुग में केवल हरिनामा। ताविन सरें न एको कामा।
श्रुतिस्मृति देखो सब जोई।। गति हरिव्यास विना नहिं कोई।।२।।
चौरेचौरे सब जगदौरें। अन्त समयहरिव्यास निहोरें ।
तातें अबहि भजो हरिव्यास। विन हरिव्यास मिटें नहि त्रास।।३।।
आनि वन्यौ यह सहज वनाव। पुनि पावें नहि ऐसो दाव ।
तातें तजो सकलकी आस। भजो निरन्तर श्रीहरि व्यास।।४।।
इन्द्रजालवत जगत तमासा। यातें पूरण होइन आसा।।
जोचाहौ परमानन्द रासा। तौभजि स्वास स्वास हरि व्यासा।।५।।
हरि सब हरें पाप अपराधो। व्यास युगल सुख दैत अगाधो।
ऐसो नाम सहज हीलाधौ। हरिव्यास अराधौ साधौ ।।६।।
देवी माया जगत उपावै। पालन करै सकल पुनि खावै।
जो माया हरिजू कहे मेरी । सो हरिव्यास चरणभई चेरी।।७।।
रूपरसिक जीवन धन प्रान। श्री हरिव्यास अमित भगवान।
जो चाहो हरि इहि कलिकाल। तौसुमिरो हरिव्यास कृपाल।।८।।

॥ आभास दोहा ॥

निखिल मही मण्डल, जुमणि मारतण्ड तमनास।
करन खण्ड पाखण्ड जय नमो नमो हरिव्यास।।

॥ पद ॥

नमो नमो जय श्रीहरिव्यास।
निखिल मही मण्डल मणि घन जटित युगयुग स्वयं प्रकाश।
मार्तण्ड अज्ञान तिमिर हरणकरण खण्ड पाखण्ड विनास।।

कोक लोकके शोक विनाशन जनहिय कंजहि करण विकास॥१॥
सर्वेश्वर सन्तन सुख दायक लायक अन्तह अमित उपास।
करुणा सागर सकल उजागरजगि मगि रह्यो जगत यश जास॥२॥
प्रेम कृपाल प्रणतजन पालक अम्वालक उरदेन हुलास।
कोटि पतित पावन ह्वै पल में परसत पद पंकजरजतास॥३॥
जिनकी कृपा बिना नहिं पइये श्रीमत वृन्दाविपिन विलास।
परम धर्म शिरमौर सवनिकौ शरण गहौ जे चहो निवास॥४॥
आनिवन्यौ औसर अवनीकौ कहा नरतन कहायह अवकाश।
हंसवंश अवतंस प्रशंसित रूपरसि क वलि वलि निजदास॥५॥

॥ आभास दोहा ॥

दिना चारि में होयगो देखत तन धननास।
ताते मनरे भजि सुखद श्रीस्वामी हरिव्यास॥१॥

॥ पद ॥

भजि श्रीहरिव्यास देवमनरे।
वेगिसम्हारि जाइगो देख त दिना चारि में तन धनरे॥
चरण शरण तिनकी जो आबैसो पावै वृन्दावनरे।
अर्थ जानि हरिव्यास नामकौ राधा गौर श्याम घनरे॥१॥
या कलि में हरिव्यास नामविन झूंठेहोत सकल पनरे॥
जिनके अर्द्धनामकी महिमा हारे कहत अनन्त फनरे॥२॥
जगमें जोदुर्लभ अति कहिये सो सुल्लभ तोहि ताछिनरें।
तासनाम विन युगल धामको पावत नहिं पहिचानरे॥
विन हरिव्यास मिटें नहिं तेरी तीन तापडर त्रयरनरे।
त्रिगुण पाठकौ ठाट सकल चल दृढ हरिव्यास नृगुणभररे॥५॥
जामाया तीनों गुणजाया ताको शिष्य करबिनरे।
सब सुख सदन कदन सब दुख के रसिक राजकुल मण्डलरे॥६॥
श्रीभटदास आस जिन पूरक चूरक अघ जालनगनरे।

तिनके शिष्य लोक त्रयमें मुखि परशुराम जन पालनरे ।।७।।
रत्न अमोलक छांडि बावरे काहे बीनत अनकनरे।
श्रीहरिव्यास विना गति नाहीं देखलेहु सब वेदनरे ।।८।।
दशदिशजीति भक्ति विसतारी सव क्षिति मंडल पालनरे।
महावाणी दोउलाल मिलानी जो प्रभु कीनी वर्णनरे ।।९।।
आनदास सब नाशहोत है श्री हरिव्यास अमरजनरे।
रूपरसिक तवतीन लोक में तोहि कहत सब धन धनरे।।१०।।

॥ आभास दोहा ॥

जिनके आधे नामतें मिटें सकल भवपीर।
सो हरिव्यास सुधीर भजिरे मन मेरे वीर ।।१।।

॥ पद ॥

मन भजिरे वीर श्रीहरिव्यास हरण भवपीर।
जिनके अर्द्ध नामकी बात विष्णुरात प्रतिकहि मुनिकीर।
जामाया जायागुण तीनू सो आधीन करी जिनधीर।
भक्त भूप हरिप्रिया स्वरूप सब दिन तिनके दोई शरीर।।१।।
श्री भटदास देव हरिव्यास तिहुँ पुर गुरु पुनि युगल युजीर।।
तिनविन तीनलोकके मांहि नाहिं जुहोई युगल सो सीर।।२।।
हंशवंश अवतरि हरिव्यास न्यारों कियो नीरते छीर ।
अब चलि आस जानि हरिव्यास दायकदम्पति कुंजकुटीर।।३।।
विन हरिव्यास भक्तके वन्धू कौन तरयौ भव सिन्धु गँभीर।।
रूपरसिक हरिव्यास अनूप विना भजन हैगो दल गीर।।४।।

॥ आभास दोहा ॥

भक्ति दई तिही परमही सुरनर कीने दास।
प्रचुरसदा यश तासकौ सो भजिगुरु हरिव्यास।।

॥ पद ॥

भजिये हरिव्यास परम गुरुजी।
अज अविनाशी चिदधनराशी दम्पति सेवधुरंधरजी॥
मूल प्रकृति चेरीजिनकी नी दीनी भक्ति तिहुँ पुरजी॥
श्रीहरिव्यास भजन निर्गुण विन मिटें न जन्म मरण जुरजी॥१॥
जिनतारे पापी शापीगण किन्नर नाग अनंत सुरजी॥
तिनविन जाहिहिये नहिं उपजत प्रेम भक्तिकौ अंकुरजी॥२॥
जिनके अर्द्ध नामकी महिमा सब ग्रन्थन में प्रचुरजी॥
जोन भजैमति मन्द अभागी सो त्रिभुवन में दुर्दरजी॥३॥
श्रीहरिव्यास कृपा दुस्तर भवसागर होय गऊखुरजी।
रूपरसिक भगतेश भूपबिन युगलवसेंन भूलिउरजी॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

कर्म धर्म करजी सवै गुणगरजी संसार।
अरजी मेरी कानदे सुनि हरिव्यास उदार॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास सुनों मेरी अरजी। गुणलरजी॥
सवही जग तुम विन निगुर्णकौ कोईन गरजी।
तुमरे भजन विना त्रिगुणी नर कर्म धर्म के सबकरजी॥
जबतुव चरण शरण जो आवै सो पावै दम्पति मरजी॥१॥
तुवपद विमुख मनुष भुवपरजे तिन में भले श्वानखरजी।
तुव महिमा अति अगम अगोचर कहा जाने जो मूरख नरजी॥२॥
अभय करण तब चरण शरण अति हरण तरणि सुतको डरजी॥
रूपरसिकको देहु कृपाकरि अविचल प्रेम भक्ति चरजी॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

विद्यानिधिजय नमोनमः श्रीहरिव्यास पुनीत।
तिनके अर्द्धनाम सुमिरेते मिटे महाभवभीत॥१॥

॥ पद ॥

नमोनमो हरिव्यास पुनीत।
तिनके अर्द्ध नाम सुमिरेते मिटे महादुस्तर भवभीत।
चरण शरण तिनकी विन निशि दिन मिलेन युगल अनोखे मीत।
श्रीहरि श्रीमुख निजमाया प्रति वरन्यो जिनको शरण सुगीत॥१॥
विद्यानिधि रिधि सिद्धि के दाता आपविधाता दशदिश जीति।
रूपरसिक हरिव्यास बिना ह्वै भयो न होत न चीत अतीत॥२॥

॥ इति रागगौरी ॥

॥ अथ रागजेत श्री आभास दोहा ॥

महमंगल करणी सदा, हरण अमंगल रास।
प्रेम प्रीति बिस्तारती, आरति श्रीहरिव्यास॥१॥

॥ पद ॥

आरति-आरति श्रीहरिव्यास तुमारी।
मंगल रूप अमंगल हारी। करत महा आनँद उरभारी।
सन्त महन्त सकल सुखकारी॥ परम उदार हिये छविहारी॥२॥
निरखत अँखियां टरत न टारी। रूपरसिक शोभा पर वारी॥

॥ इति राग जैतश्री ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। वोरत सकल पापके कागर॥
चारि रागमें पद सुखदाई। लहरि द्वादशी पूरण पाई॥

॥ इति द्वादशी लहरी ॥

लहरि तेरही लिखों सुजाना। राग कानरो विहँग प्रमाना॥
पुनि सोरठ खम्माइच कहिये। चारि राग में पद सव लहिये॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास शरण जो आवै।
सब सुखकारी प्रियतम प्यारी वृन्दावन चारी सो पावै॥

देवन कौ दुर्लभ महावाणी सुल्लभ जो नित पाठ करावै।
आदि सहेली रंग नवेली हितू हरि प्रिया दास कहावै ॥१॥
निर्भय रहै लोक त्रय माहीं कोटिकाल यासों भगिजावै। निर्गुण
पदमें अननि होइकर त्रिगुण भली विधि जारि उडावैं ॥२॥
आगम निगम अगोचर लीला सोहू दैस हजहि दरशावैं।
जो कोउ करै भजन विच अन्तर तिनको संग न मन में भावैं॥३॥
सतरज तम सँग दूरि उडावै गुणातीत को संग करावै।
चारि पदारथ आदि सकल सुख प्रेमामृत्त चित्तनहिं आवैं॥४॥
मात पिता भ्राता भगिनी सब धनि धनि तीन लोक करावे।
द्वारावती छाप तन लागे गोपीचन्दन तिलकधरावै ॥५॥
माला मंत्र अष्टदश अक्षर युगल नाम सम्बन्ध धरावैं।
शीतलताप छाप त्रय हरणी दम्पति सुखकरणी सो पावै॥६॥
युगल सेव बाहिर अरु भीतर आपकरैं औरन करवावैं।
जन्म कर्म उत्सव में तत्पर आनदेव मनतें छिटकावैं॥७॥
भक्त भूपह्वै विचरत जगमें दरशन यै त्रयताप नसावैं।
जिनकी श्रीमुख वाणी श्रवनन सुनतहि युगल हिये महि आवै॥८॥
कर्म ज्ञान योगादिक मारग विनहरि भक्ति न मनमें छावैं॥
चरण धूरितिनकी पुनीत अति गंगादिक के पाप भगावैं॥९॥
तीन लोक में जिनसंगति विन राधारमन भवन नहिपावैं।
यह सिद्धान्त अपेल सुजानों श्री सुदेवी प्रति इमि गावैं॥१०॥
परमदिव्य अष्टाक्षरमंत्र अंतर सदानिरन्तरध्यावें।
सबकौ रंगधाम अतिदुर्लभ ताहिठाम में रहै रहावैं॥११॥
तीरथादि सब आयतासु के दक्षिण पद अंगुष्ठ वसावैं॥
करत फिरत सब जग बड भागी अनुरागी नाचैं अरु गावें॥१२॥
छके रहैं अति परा प्रेममें वेदर सीसो नाहि बंधावे।
प्यारी प्रियतम महल टहलमें तनकी सुधि सब दूरि पठावै॥१३॥

॥ पद ॥

नमोनमो हरिव्यास पुनीत।
तिनके अर्द्ध नाम सुमिरेते मिटे महादुस्तर भवभीत।
चरण शरण तिनकी विन निशि दिन मिलेन युगल अनोखे मीत।
श्रीहरि श्रीमुख निजमाया प्रति वरन्यो जिनको शरण सुगीत॥१॥
विद्यानिधि रिधि सिद्धि के दाता आपविधाता दशदिश जीति।
रूपरसिक हरिव्यास बिना ह्वै भयो न होत न चीत अतीत॥२॥

॥ इति रागगौरी ॥

॥ अथ रागजेत श्री आभास दोहा ॥

महमंगल करणी सदा, हरण अमंगल रास।
प्रेम प्रीति बिस्तारती, आरति श्रीहरिव्यास॥१॥

॥ पद ॥

आरति-आरति श्रीहरिव्यास तुमारी।
मंगल रूप अमंगल हारी। करत महा आनँद उरभारी।
सन्त महन्त सकल सुखकारी॥ परम उदार हिये छविहारी॥२॥
निरखत अँखियां टरत न टारी। रूपरसिक शोभा पर वारी॥

॥ इति राग जैतश्री ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। वोरत सकल पापके कागर॥
चारि रागमें पद सुखदाई। लहरि द्वादशी पूरण पाई॥

॥ इति द्वादशी लहरी ॥

लहरि तेरही लिखों सुजाना। राग कानरो विहँग प्रमाना॥
पुनि सोरठ खम्माइच कहिये। चारि राग में पद सव लहिये॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास शरण जो आवै।
सब सुखकारी प्रियतम प्यारी वृन्दावन चारी सो पावै॥

देवन कौ दुर्लभ महावाणी सुल्लभ जो नित पाठ करावै।
आदि सहेली रंग नवेली हितू हरि प्रिया दास कहावै॥१॥
निर्भय रहै लोक त्रय माहीं कोटिकाल यासों भगिजावै। निर्गुण
पदमें अननि होइकर त्रिगुण भली विधि जारि उडावैं॥२॥
आगम निगम अगोचर लीला सोहू दैस हजहि दरशावैं।
जो कोउ करै भजन विच अन्तर तिनको संग न मन में भावैं॥३॥
सतरज तम सँग दूरि उडावै गुणातीत को संग करावै।
चारि पदारथ आदि सकल सुख प्रेमामृत्त चित्तनहिं आवैं॥४॥
मात पिता भ्राता भगिनी सब धनि धनि तीन लोक करावे।
द्वारावती छाप तन लागे गोपीचन्दन तिलकधरावै॥५॥
माला मंत्र अष्टदश अक्षर युगल नाम सम्बन्ध धरावैं।
शीतलताप छाप त्रय हरणी दम्पति सुखकरणी सो पावै॥६॥
युगल सेव बाहिर अरु भीतर आपकरैं औरन करवावैं।
जन्म कर्म उत्सव में तत्पर आनदेव मनतें छिटकावैं॥७॥
भक्त भूपह्वै विचरत जगमें दरशन यै त्रयताप नसावैं।
जिनकी श्रीमुख वाणी श्रवनन सुनतहि युगल हिये महि आवै॥८॥
कर्म ज्ञान योगादिक मारग विनहरि भक्ति न मनमें छावैं॥
चरण धूरितिनकी पुनीत अति गंगादिक के पाप भगावैं॥६॥
तीन लोक में जिनसंगति विन राधारमन भवन नहिपावैं।
यह सिद्धान्त अपेल सुजानों श्री सुदेवी प्रति इमि गावैं॥१०॥
परमदिव्य अष्टाक्षरमंत्र अंतर सदानिरन्तरध्यावें।
सबकौ रंगधाम अतिदुर्लभ ताहिठाम में रहै रहावैं॥११॥
तीरथादि सब आयतासु के दक्षिण पद अंगुष्ठ वसावैं॥
करत फिरत सब जग बड भागी अनुरागी नाचैं अरु गावें॥१२॥
छके रहैं अति परा प्रेममें वेदर सीसो नाहि बंधावे।
प्यारी प्रियतम महल टहलमें तनकी सुधि सब दूरि पठावै॥१३॥

हरिव्यास देवाय नमोनम युगल नाम रसना उरझावे।
हरिव्यासी होइरहे उदासी दुख राशी गृहनाहिं वनावै।।१४।।
जो माया दूस्तर हरिजूकी सो हरिव्यासी शिष्य जनगावैं।
सो माया हरिव्यास दासकी अनायास भव पार करावै।।१५।।
बिन हरिव्यास तरें नहिं माया मुनिराया ऐसे जो बतावैं।
श्रीहरिव्यास चरण शरणागति श्रीहरि कृपाकरें तब पावें।।१६।।
श्री प्यारी प्रियतम अर्पण विन भूलि न कबहू जल अनपावैं।
वाणी आदि सजाती जनकौं परम कृपा करि आप भणावैं।।१७।।
श्रीप्रभु वाणी युगल मिलानी परम मंत्र वत पढै पढावै।
कबहुँ हँसे ससैं पुनि कवहूँ मोद अंग नहिं मावै।।१८।।
लोक लाज तजि गरजी श्रीभट पटराज सुयश दुलरावैं।
अति उदार आगार प्रेम घन वादी अनगण दूरि हरावैं।।१९।।
श्रीहरिव्यास दास महिमा कौ शेष शारदा अन्त न पावैं।
रूपरसिक महादीन दुखिन कौ जे पालत पोषत संग लावैं।।२०।।

॥ आभास दोहा ॥

भजिये श्रीहरिव्यास के, चरणं अरुण जल जात।
तजिये यों संसार अति दुःख अगार विख्यात।।१।।

॥ पद ॥

भजि हरिव्यास चरण जल जाता।
दीन बन्धु भव सिन्धु पार कर तीन ताप हरि आप विधाता।।
यों संसार असार छार तजि सुत आगार दार पितु माता।।
यों जग माहि सुखद हरिव्यासहिं
विन हरिव्यासहि सब दुखदाता।।१।।
अनायास सुख राशि नाम धरि दास युगल पद जोरत नाता।
रूपरसिक हरिव्यास भजन विन मिटे न जन्मादिक उत्पाता।।२।।

॥ आभास दोहा ॥

सुख सागर हरिव्यास भजि, जगत उजागर नाम।
छागर कागर जगत भजि, आगर अब गुण ग्राम॥

॥ पद ॥

भजि हरिव्यास महा सुख सागर।
भक्ति भूप चूडा मणि स्वामी अन्तरर्यामी जगत उजागर॥
सब दुःख हरण करण आनँदघन अशरण प्रेम पर आगर।
श्रीहरिव्यास शरण वन जगमें सर्व शरण कागर की सागर॥१॥
तिनकी शरण बिना तिहु पुरमें मिलें न युगल नागरी नागर।
रूपरसिक हरिव्यास भजो नित तन मन वाणी करिये कागर॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

स्नान ध्यान विज्ञान को, आदि सकल तप जोई।
श्रीहरिव्यास सुनाम की, तुल्य न पावै कोई॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास नाम जिन लीनों।
स्नान ध्यान विज्ञान फल दान आदि पा संग नहिं कीनों।
अर्द्ध नाम सुख धाम लेत है मन वच क्रम निर्मल अघ हीनो॥
होत मुक्त भागोत भक्ति कहि पुनि पर से नहि जक्त मलीनो॥१॥
सम्पूरण हरिव्यास नाम ले तिन कौ युगल अपनपौ दीनौ।
रूपरसिक के परम सुधन यह अखिल लोक यह नाम नगीनों॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

मन मेरे सुमिरो सदा, सत गुरु श्रीहरिव्यास।
देव्यादिक सुमिरें सकल, तासु चरण के दास॥१॥

॥ पद ॥

गुरु हरि हरिव्यास सुमरि मन मेरे।
देव्यादिक सुर नर मुनि जन सब तिनके कमल चरण के चेरे॥

दम्पति सुख सम्पति वन दायक नायक त्रिभुवन रसिकन केरे।
चरण शरण हरिव्यास बिना तुव मिटें नहीं चौरासी फेरे॥१॥
श्रीहरिव्यास भजन विनरे मन कटें नहीं दुःख सुख उरझेरे।
त्रिगुणि मुनी वर्णाश्रम सब में नाना भाँति४ वखेरे॥२॥
तिनकों सु प्रसन्न महन्त संत श्रुति गावत निशि दिन साँझ सवेरे।
रूपरसिक भक्तेश भूप विन दूरि न होत जन्म दुःख नेरे॥३॥

॥ इति राग कानरौ ॥

॥ अथ राग बिहाग आभास दोहा ॥

यामहिलीला युगल की, मारग अतिहि अगम्य।
हितू सहेली कृपा विन, कैसे लहै सुगम्य॥
में मन वच निहचें, करि पाई।
श्रीहितू सहेली कृपा विना, यह मारग गह्यो न जाई॥
जामें श्री राधा मोहन की, लीला परम सुहाई।
आगम निगम पुराण, अगोचर सोलै मोहि वताई॥
श्री रंगदेवी सो विनती करि परिकर माँहि मिलाई॥
कहा कहों सुभाग की श्रीहरिव्यासी दासि कहाई॥
अब कछु रहिन कामना जियरे भई हियरे सियराई॥
रूपरसिक करुणा निधि नागर आपनि जानि अनाई॥

॥ आभास दोहा ॥

अति उतंग सवते सदा हरिव्यासनको संग।
तिनकी वातनिते लगै हिये युगलको रंग॥१॥

॥ पद ॥

वडौ अति हरिव्यासकौ संग।
तिनकी वात सुनत हिये लागै गौर सांवरो रंग॥
जिन कीने अनगण नीचे जन शिरकर धारि उतंग।
जोय तोय जैसें मलीन अति गंगामिल होय गंग॥१॥

गावन युगल सकल मन भावन दुरित नसावन कंग॥
रूपरसिक जिन इसक गहीं नित तिनकौ संग अभंग॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

हरिव्यासी निज कवमिले मोंही उदासी साध।
रस रासी वासी महा प्यासी प्रेम अगाध॥

॥ पद ॥

अब मोंहि कव मिलि है हरिव्यासी।
परम सुशील रंगीली युगल पद वस भये जगत उदासी॥
दम्पति मुख सम्पति रुचिराचे सांचे महल उपासी॥१॥
जिनके दर्श परसते पाए अद्भुत विपिन विलासी।
गावत रहैं सदा श्री मुखतें महावाणी रसरासी।
जुटेरहत हरि प्रिया संगसों छुटे त्रिगुणकी फाँसी॥२॥
संस्कार पाँचों युत राजत मुख हरिव्यास निकासी।
रूपरसिक हँसिभेट मिली महावाणी प्रेम प्रकाशी॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

मन भाई भजिये सदा जनराई हरिव्यासी।
सुखदाई गाईगिरा जिन महा सुखकी रास॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास भजो मन भाई।
अशरण शरण करण सुख दुखहर महा प्रेमघर आनँददाई॥
अतिदयाल जन पाल गुणा गुण सकल लोक आचारजराई।
वेदनकी अतिहीजो दुर्लभ सो महा वाणी आपवनाई॥
दम्पति मिलन सनातन मारग भजन रीति जो प्रभुदरसाई॥
रूपरसिक रसिकनि की जीवनि महिमा अमित पार नहिं पाई॥

॥ आभास ॥

भजिये श्रीहरिव्यास के चरण तरत भव पाथ।

रजिये साधू संगसों तजिये जगको साथ।।

॥ पद ॥

मन भजिये हरिव्यास चरणकौं।।
भव सागर दुस्तर दुख आगर ताकौ सहज तरनकौ।।
विन प्रयास दम्पति सुखसम्पति रतिअति हिये करनकौं।।
रूपरसिक रसिकनकी आशा जिनविनकौन भरनकौं।।२।।

॥ आभास ॥

जे हरिव्यासदास सुभागकी महिमा मोपै कीन नाजात।
जे हरिव्यासीदास कहाई।
तिनके परम भागकी महिमा मोपै कही नजाई।
अनायास सुखरासि युगल तिहि वरबट आनि मिलाई।।
दरश परस तिनकौ कोउ करिहै ते भव सहज तराई।
धनि धनि भ्राता माता पितु तिनकौ काल जोरिकर वदन अनंत कराई।।
रूपरसिक ते तीन लोक में पावन पतित सदाई।।

॥ इतिरागविहागरो ॥

॥ अथसोरठ आभास ॥

जिनके चरण सुशरण की सबके जिय जिज्ञास।
ऐसे परम कृपाल प्रभु, वन्दौं श्रीहरिव्यास।।

॥ पद ॥

बन्दौ श्रीहरिव्यास कृपाल।
पतित पावन भक्तभावन एकर सतिहुँ काल।।
शरण तिनकी आय लीनीद्वादशो गोपाल।।
ऐसे समरथकोन जगमें करण हार निहाल।।१।।
जक्त उपजावै हरें अरु करें सबकों पाल।।
सोई भक्ति सहाइ कारण तकशिरण विशाल।।२।।
गह्यो जलमें ग्राहगजको कियो अतिहि विहाल।।

तहाँ अर्द्धहि नाम करि करि काढ्यो सकल जँजाल।।३।।
एक मात्राही न अर्द्धसुनामलहि शशि भाल।।
ह्वैरहे महादेव शंकर हरण काल कराल।।४।।
देखि अनुचर दीन जन पर दयाद्रवत दयाल।
पलक लहरि दरयाव जैसे करत खलक खुश्याल।।५।।
रहत निशिदिन हरि प्रिया है निकट राधा लाल।।
रूपरसिकहि जानि अपनों देहुं भक्ति रसाल।।६।।

।। आभास दोहा ।।

वाहिर भीतर युगल की, सदाजु एक प्रधान।
सो हरिव्यास सुजान भजि, दायक प्रेम निधान।।

।। पद ।।

भजिये श्रीहरिव्यास सुजान।
वाहिर भीतर युगज जू की छवि सदा दृढपान।।
रसिक नायक युगल दायक सही सो भगवान।
या विना प्रिया लाल जू सो होत नाहिं मिलान।।१।।
राधिका हरि अनँत लीला सकल को सो पान।
रूपरसिक सु प्राण जीवन धन श्री हरिव्यास निदान।।२।।

।। इति राग सोरठ ।।

।। अथ राग खम्माच आभास दोहा ।।

जिनकी पद धरी परसि, होत अमंगल नास।
ह्माने प्यारा लागे हो श्री हरिव्यासी दास।।१।।

।। पद ।।

हो हरिव्यासी म्हाने प्यारो लागें जू।
तिनकी चरणरेणु सपरस ते सकल अमंगल भाजें जू।।
नेम पासते छुटे रस जुटे प्रेम के धागे जू।
तिनकी कृपा द्रवे दम्पति यों जैसे स्वर्ण सुहागे जू।।

नित्य विहार विना तिनकी मति गति रति अन तन पागे जू।
रूपरसिक भगतेश भूप गुण गण मन अनुरागे जू।।

॥ आभास दोहा ॥

हरिव्यासी जन मोंहि अति, भावैं परम सुशील।
जो प्यारी पियको सही, देत करें नहिं ढील।।

॥ पद ॥

हो हरिव्यासी जन मोहि भावे जू।
जिनके दरश परस करि श्री हरि राधा उरजु बसावें जू।।
महावाणी दोउ लाल मिलानी प्रेम कहानी गावें जू।
युगल सेव विन आन एव कछु भूलि न मन में लावें जू।।१।।
जो कोउ चरण शरण है तिनकी सो फिर जग नहिं आवे जू।
रूपरसिक भगतेश भूप विन को यश अम्मृत वर्षावें जू।।

॥ आभास दोहा ॥

हरण अमंगल व्यास सब, करण सुमंगल रास।
सो भजिये हरिव्यास जू, परा प्रेम परकास।।

॥ पद ॥

सकल अमंगल करण हरण त्रयताप
दुख सुख पायो निधि भज सदा हरिव्यास जू।
तासु बिन सकल संसार में और नहि
त्रिगुण जन गणमही हरण अघ नासजू।
अखिल ब्रह्माण के रसिक चातकनकी
जाविना कोन मेटे प्रणय प्यासजू।
रूप रसिकेश सर्वेश भक्तेश प्रण
हरिप्रिया रूप श्रीभटके दासजू।।३।।

॥ इति राग खम्माचकी ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशा मृतसागर। लहरि तेरही चार रागधर॥
शुभग सुहाये पदहें यामें। पूरणता पागहें यामें॥१३॥

॥ इति श्री त्रयोदश लहरी लीला ॥१३॥

॥ दोहा ॥

लहरि चौदही लिखों अब तामें राग जुतीन।
पंचम अखण्ड वृन्दावनी काफीहै रंगभीन॥

॥ अथ राग पञ्चम आभास दोहा ॥

जयति नमोनम जय नमो युगल रूप श्रीहंस।
अमित रूप धरि जगतहित प्रगट कियो जिनवंश॥१॥

॥ पद ॥

जय नमो जय नमो जय नमो जय नमो श्रीयुगल सरूपा।
भक्ति प्रेमादि सब दिये सनकादिकों किये तिहुँलोक के भक्त भूपा॥
जयजय सनकादि जग आदि नारद
मुनीनिम्ब आदित्य नित्य ध्यान कीजें।
जय जय श्रीनिवास विश्वपुरुषोत्तम
जय जय जय श्री विलास को नामलीजै॥१॥
जय जय निज रूप माधव सुवल
भईजु पद्म श्रीश्याम सुखधाम गावौ॥
जय गोपाल श्रीकृपा चारज देव दशोदिश जीत सबदिन मनावौ॥५॥
जय जय सुन्दर सुभट पद्मनाम प्रभो जय जय उपइन्द्र श्रीराम चन्द्रम्॥
जय जय वामन जयति कृष्ण पद्माकरं।
श्रवण भट भूरि महा भक्त इन्द्रम्।
जय जय बलभद्र जय गोपिनाथम्॥
जय जय केशव सुमंगलसु। जयजय केशव काशमीर॥
सुयश अमितगाथं।

जय जय श्रीभट पटराज हरिव्यासजू सकल अघनाशजू अद्वनामो।
दशदिशि जीति सब नेतिदेव्यादि
गुरु भक्त जनईश महा प्रेमधामो॥५॥
सदाजपि सदाजपि गुरु परम्परा यह श्याम श्यामा सुपद प्रेमदाई।
विना इनकी शरण रूप रसिकौ
सुनों मिलें नहिं युगल कहों शपथखाई॥६॥

॥ आभास दोहा ॥

श्रीहरिव्यास सुजानको धरिये ध्यान अखण्ड।
प्रचुर सुयश तिनकौ सदा व्यापि रह्यो ब्रह्मण्ड॥

॥ पद ॥

धरिये मन ध्यान कल्याण मयं। नमि श्रीहरिव्यास जनेश कौ॥
दीनदयाल प्रगट तिहुँ काल है। अज अव्यय सर्वेश कौ॥१॥
गौर वर्ण आ जानु वाहु दृग कंजसु महासु देश कौ॥
रूपरसिक देव्यादि कृपाल को सो प्रभु सदा महेशकौ॥२॥

॥ इति राग पंचम ॥

॥ अथ राग षट ॥ आभास दोहा ॥

नमो नमो जय जय नमो, भक्त भूप हरिव्यास।
जिनके आधे नामतें, होत पाप सव नाश॥१॥

॥ पद ॥

जय जय नमो नमो हरिव्यासजू।
भक्त भूप हरि प्रिया रूप पुनि। अति अनूप श्रीदासजू॥
जिनके अर्द्ध नाम की महिमा गावत श्रुति इतिहास जू।
भक्त आश जा विन कों पुर वै महावाणी परकाशजू॥१॥
अचल अकल थिर चर के स्वामी सदा युगल के पासजू।
रूप रसिक जन प्यासजू॥

॥ इति राग षट ॥

॥ अथ राग वृन्दावनी काफी आभास दोहा ॥

श्रीस्वामी हरिव्यास के, दास मही तिहु लोक।
आन दास के लगत हैं, सब दिन ठोका ठोक।

॥ पद ॥

सही हरिव्यास के दासा।
और दास भव पास वधत है लगे त्रिगुण की आशा।
महा सुखद निर्गुण पद वेहद तहॉं किया निज वासा।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष ए चारों की तजि पासा॥१॥
क्या सटकी पुनि जक्त वास की कर्म व्यथा सब न्यासा।
सदा महल की चहल पहल देखत तहाँ तमासा॥२॥
महा छके अति पके परारस अन्दर खरा उजासा।
रूपरसिक भक्तेश भूप मिलि विचिरत सदा खुलासा॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

हरी भरी सव दिन खरी, दरी महा दुख क्यास।
परा प्रेम रस की झरी, सेवा श्रीहरिव्यास॥

॥ पद ॥

खरी हरिव्यास की सेवा।
हरी भरी सुख करी हरी दुख। देत युगल छवि मेवा॥
मिलैं नहीं हरिव्यास सेबकि हूँ अमित उपाय करे वा।
कृपा करें दम्पति सुख सम्पति तवै लहै कोई भेवा॥१॥
त्रिगुण राय उडाय भली विधि। निगुर्ण पद की देवा॥
भव सागर उतरन को नौका और भली विधि खेवा॥२॥
युगल छैल अति ही अरैल सहजे आनि मिलेवा॥
ऐसी और न फल की दाता गंगा काशी रेवा॥३॥
सव सुख धाम श्याम श्यामा पद महल टहल उरझेवा।
केवा दूरि करी यम भट कें आन वसाना देवा॥४॥

भक्तवत्सला शरण पालिका स्वतः सिद्ध यह टेवा।
रूपरसिक सब हरि रसिकनि कौ है सेवा यह ठेवा।।५।।

॥ आभास दोहा ॥

सब तजि रे मन भजि सदा, श्रीहरिव्यास महन्त।
तिन की कृपा चितो निर्ते, मिलें राधिका कन्त।।

॥ पद ॥

सकल तजि भजि हरिव्यास महन्ता।
अति उदार आगार प्रेम के जनाधार भगवन्ता।।
अनतरयामी तिहुँ पुरगामी परा प्रेम में मन्ता।
अनंत उधारै पापी शापी भवसागर डूवंता।।१।।
जिन वरणी महावाणीरानी सर्व वेद को तन्ता।
जिनको यश गावत त्रिभुवन में त्रिगुण नृगुण बहुसंता।।२।।
तास चरणकी शरण बिना नहिं मिले राधिका कंता।
रूपरसिक भक्तेश भूपकी शरण बिना नहिं मिले राधिका कंता।।३।।

॥ इति राग वृन्दावनी काफी ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। लहरि चौदही तीन रागधर।।
पूरणता पाई मन भाई। रसिकभक्त हिय लेत चुराई।।

॥ इति चतुर्दश लहरी ॥

॥ दोहा ॥

लहरि पंद्रही में लिखूं, शरण द्वादशी एक।
दूजी शरणजु मंजरी, भरी जु महा विवेक।।

॥ अथ शरण द्वादशी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

जय जय श्री हरिव्यास जू, दश दिशि जीत पुनीत।
करी प्रगट जग तरण हित, महा भजन रस रीत।।१।।

जय जय श्री हरि व्यास जू, सर्व गुरु भगवन्त।
सदा सर्वदा एक रस, युगल रूप में मन्त॥२॥
जय जय श्री हरिव्यास जू, अनगण पतित निवाज।
बहुत रूप धरि करत नित, अनँत भक्तके काज॥३॥
वेद नीरमें क्षीर हरि, भजन मिल्यो रस रास।
हंस वंश प्रगट कियो, न्यारौ श्री हरिव्यास॥४॥
श्रीभट पट्टराज प्रभु, श्री हरिव्यास अतीत।
तिनकी शरणागत विना, मिलैं न दोऊ मीत॥५॥
श्री स्वामी हरिव्यास जू, सच्चिदानंद स्वरूप।
निशि दिन सेवत युगलको, है हरि प्रिया अनूप॥६॥
कृपासिंधु ध्यावै न जो, श्रीहरिव्यास उदार।
सो कहै कैसे पाइ है, वृन्दा विपिन विहार॥७॥
चरण शरण हरिव्यास की, जो आवै नरनारि।
मन वच क्रम तिनको मिलैं, श्री हरिभानु कुमार॥८॥
चरण शरण हरिव्यास की, भयो न जब लग आनि।
वृन्दावन निज धामको, कैसे हो पहिचान॥९॥
अर्धनाम हरिव्यास को, नाम लेत नर कोय।
सो अघमल त्रयतें सही, निहचैं निर्मल होय॥१०॥
सम्पूरण हरिव्यास को, नाम सुकरै उचार।
ता नर को निहचै मिलै, नवल निकुंज विहार॥११॥
जय जय श्री हरिव्यास जू, परा प्रेम के सिन्धु।
सदा सच्चिदानंद घन, रसिक जनन के बन्धु॥१२॥
रूप रसिक हरिव्यासकी, शरण द्वादशी नाम।
सुनें गुणें पुनि हिय गुणे, सो पावै रंग धाम॥१३॥

॥ इति श्री हरिव्यास देव शरण द्वादशी ॥

॥ अथ शरण मंजरी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

युगल रूप हरिव्यास प्रगट आचारज हरिव्यास।
तिनकी शरण सुमंजरी लिखों वन्दि पदतास॥१॥
चरण शरण हरिव्यासकी जौलों होई न जीव।
तोलों नाहिन पाइहै, श्रीवन प्यारी पीव॥२॥
चन्दसूर्य थिरहैं नहीं नहीं धरण आकाश।
कर्म आदि त्रैगुण नहीं तवके श्रीहरिव्यास॥३॥
युगल रूप हरिव्यास की लीला अपरम्पार।
श्रीवृन्दावन धामकौ मिटे न नित्य विहार॥४॥
जवके युगल किशोरजू तबके श्रीहरिव्यास।
माया त्रिगुण प्रसूतिका तासु चरणकी दास॥५॥
श्रीवृन्दावन धाममें दम्पति नित्य विहार।
आचारज हरिव्यासजू तहां विराजत लार॥६॥
तातें सब तजि भजि सदा सर्वेश्वर हरिव्यास।
तिनके आधेनामतें होत त्रिविध अघनाश॥७॥
चारि पदारथ भक्ति पुनि प्रेम युगल सँगवास।
मिलें न कोटि उपाय करि विना शरण हरिव्यास॥८॥
जोनित्य प्रति हरिव्यासकौ नामसु करै उचार।
सो निश्चयकरि पाय हैं, दम्पति नित्य विहार॥९॥
दम्पति नित्य विहारके अगिवानी हरिव्यास।
तिनकी पदकंज आशते मिलिहैं युगल विलास॥१०॥
श्री मत युगल विलास, विन है न जन्म कौ नास।
ताते मन वचक्रमजु करि धरि हिय भजि हरिव्यास॥११॥
हरि नँदनन्दन राधिका व्यास अर्थ यह जानि।
परम हंस हरिव्यासजू युगल रूपपर आनि॥१२॥

सर्व वेद वेदान्त कौ सारनाम हरिव्यास।
ताविन यह कलिकालमें ह्वै न दूरि दुख क्यास॥१३॥
हंश वंश प्रगट भये युगल आप हरिव्यास।
अखिल लोक निस्तार हित प्रेमकरण परकाश॥१४॥
आचारज हरिव्यासकौ सब दिन वात वहीजू।
तासविना नहिं पाइए श्रीहरि अलक लडीजू॥१५॥
आचारज हरिव्यासकौ सवदिन वात भलीजू।
तिनके वस दोउ कहे श्रीहरिभानु ललीजू॥१६॥
आचारज हरिव्यासके सब दिन वात खरीजू।
तिनकी चरण शरण विना मिलें न प्रिया लरीजू॥१७॥
आचारज हरिव्यासकी सवतें बात सहीजू।
माया प्रति शरणा गति तिनकी कृष्ण कहीजू॥१८॥
दुर्लभ मानुष देहकौ इतनीही फल जानि।
युगल रूपहरिव्यासपद दृढकीजै मनमान॥१९॥
आचारज हरिव्यास के चरण धारि उरमाथ।
तबतू सहजें पाइहै दुर्लभ राधा नाथ॥२०॥
आचारज हरिव्यासकी बात जानि निरधार।
तिनकी चरण शरण विना मिलें न युगल विहार॥२१॥
आचारज हरिव्यासकी रीति भाँति कछु और।
तिनकी चरण सुसेव विन मिले न दम्पति ठौर॥२२॥
आचारज हरिव्यासकी देखो अद्भुत चाल।
चरण शरणही मात्रतें मिलें राधिकालाल॥२३॥
आचारज हरिव्यासकौ सर्व सिद्धिदा नाम।
जानि अजानि जपै जु नर सो पावें सुखधाम॥२४॥
अर्द्धनाम हरिव्यासकौ करे सकल अघनाश।
चारि वर्णपूरोजपें पावें युगल विलास॥२५॥

पुनि श्रीमंत हरिव्यासके दासनकौ करि संग।
तिनविन नाहिं पाइए दम्पति नित नवरंग ॥२६॥
युगल रंगमें रंगि रहै आन रंग करि नाश।
सो जानो या जगतमें अनन्य दास हरिव्यास ॥२७॥

॥ श्लोक ॥

भजेहंऽ हरिव्यास देवं कृपालं महाराज राजं जनेशंरमालम्
सदा भक्तभूपेशमाद्यं मुकुन्दं परं प्रेमकंदंजनानासुशंदम्।
श्रीहरिव्यास देवाय नमस्ते सुखराशाय सच्चिदानन्द रूपाय।

॥ दोहा ॥

शरण मंजरी यह कही पोथी सकल विचारि।
रूपरसिक हरिव्यासके चरण कमल उरधारि ॥२८॥
बीश आठ दोहा कहे श्लोक दोय सुख धाम।
श्रीहरिव्यास कृपालकी शरण मंजरी नाम ॥२६॥
इति श्रीरूपरसिक कृता, शरण मंजरी एह।
पूरण सब सुख की घरी, गुरुरूप पद नेह ॥३०॥

॥ इति शरण मंजरी ॥

इति हरिव्यास यशामृत, सागर की कही।
लहरिपन्द्रही ताप त्रिविधि, अघ सब दही॥
शरण द्वादशी तामहि, गुरु तन की छई।
हरिदाहौ जी शरण मंजरी, पूरणता भई॥

॥ इति पंचदश लहरी ॥

॥ चौपाई ॥

लहरि षोडश अब तुम जानहु। कृपा जु दशमीता मधिमानहु॥
सत संगति एका दशि पुनि गुनि। ता भीतर सो लिखी सदा सुनि॥

॥ अथ कृपा द्वादशी लिख्यते ॥

महावाणी मुख ते भनें सुनें युगल रतिरंग।
कृपा होय तब ही मिलें, हरिव्यासन को संग॥१॥
पाप हरण सब सुख भरन, करण दूरि अपराध।
कृपा होय तबही मिलें, हरिव्यासी प्रिया साध॥२॥
युगल तके रसमें पगे छके, विपिन छवि जाल।
कृपा होय तबही मिलें, श्रीहरिव्यास दयाल॥३॥
जग सों भये उदास जे, आश विपिन सुखरास।
जे जानों या जगत में श्रीहरिव्यासी दास॥४॥
युगल लगे जगसों भगे, पढो परारसरास॥
तेजानों या जगत में सगे दास हरिव्यास॥५॥
श्रीहरिव्यास उदार पद तास हिये आगार।
जे जानत रस रीति सव वृन्दा विपिन विहार॥६॥
जिनकी कृपाचितोनते, पावें विपिनं विलास।
कृपा होय तवही मिलें, प्रेम रासिहरिव्यास॥७॥
जोगी जंगम जे न द्विज, सन्यासी पुनि शेष।
बिना भजन हरिव्यास के, इनि के झूँठो वेष॥८॥
जोगी जंगम जैन द्विज, सन्यासी शिष आदि॥
बिना शरण हरिव्यास पद, षट दर्शन सब आदि॥९॥
युगल विना जाने नहीं, हरिव्यासी निज सन्त।
तिनकी वातन तें मिले, राधा कन्त तुरन्त॥१०॥
कृपा दशमी यह कही, दोहा दशविस्तार।
रूप रसिक भजिये सदा श्रीहरिव्यास उदार॥११॥

॥ इति कृपा दशमी ॥

॥ अथ श्रीसंत संगति एकादशी दोहा ॥

आचारज हरिव्यास कौ, अति ही समरथ जानि।
चरण शरण भई आनि वह, तीनों गुण की खानि॥१॥
श्रीहरिव्यासी दास को, काल न कबहूँ खाय।
चुनि चुनि खावें सवनि कौ, निर्गुण निकट न जाय॥२॥
निर्गुण श्रीहरिव्यास के दास सकल सिरताज।
अजर अमर तिहुँ काल में, अनन्य रसिक महाराज॥३॥
तिनही के संग कीजिये छांडि, आन सब काज।
ते विचरैं त्रैलोक में निर्भय पतित निवाज॥४॥
पतित निवाज सु जगत में हें हरिव्यासी दास।
मन वच क्रम तिन संग विन, ह्वै न जन्म कौ नास॥५॥
राधा माधव रूप में, छके रहत निशिभोर।
हरिव्यासी चाहत नहीं, मुक्ति सुखन की वोर॥६॥
दम्पति सुख सम्पति विना, जानत नाहि लगार।
हरिव्यासन की लगत है मुक्ति आदि सुख खार॥७॥
जोरी चोरी धर्म कर, करि हरिव्यासी सेव।
मनसावाचा कर्मणा, यही भक्ति की टेव॥८॥
लोक लाज पुनि राज सब, निहचैं रंग पतंग।
सकल स्वाद तजि देह के, करि हरिव्यासी संग॥९॥
हरिव्यासिन के संगते, आय मिलें दोउ लाल।
तिनकी संगति विन सही, मिलें न युगल कृपाल॥१०॥
नमो नमो नम जय नमो, हरिव्यासीजन वृन्द।
तिनकी संगति सों मिटें, जरा मरण दुखद्वन्द॥११॥
सत संगति एकादशी, पढै सुनै करि प्रीति।
रूप रसिक जो जानि हैं, हरिव्यासन की रीति॥१२॥
हरिव्यासिन की रीति यह, वृन्दा विपिन विहार।

नित्य सनातन एक रस, सब वेदन कौ सार ।।१३।।
सत संगति एकादशी, दुहा चतुर्दश जानि।
इति श्रीरूप रसिक करी, भई सम्पूरण आनि।।१४।।

।। इति श्रीसत् संगति एकादशी ।।

।। मांझ ।।

इति श्रीमत हरिव्यास देव यश अमृत सागर लहरी।।१५।।
कृपा दशमी तास विराजत महा कृपा रसगहरी।
पुनिसत् संगति ग्याारसी तामहि साधु संगके दाई।।
पूरणता पाई है लहरी रसिक जनन मन भाई।।

।। इति श्री षोडशी लहरी ।।

।। चौपाई ।।

सप्तदशी लहरी अब लिखूं। तामधि भजन अष्टमी दिखूं।।
मारू राग वसन्तजु यामें। पुनि कालिंगडोरागहै यामें।।

।। अथ भजनाष्टमी लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

जाविन मिलै न युगलजू, परम रसिक शिरमौर।
सो भजिये हरिव्यास जू, तजि अनेक मत और।।१।।
याविन मिलें न युगल जू, परी प्रेम की रारी।
सो भजिये हरिव्यास जू, तजि अनेक मतहारी।।२।।
या विन मिलें न युगल जू, श्रीवृन्दावन चन्द।
सो भजिये हरिव्यास जू, परा प्रेम रसकन्द।।३।।
याविन मिलें न युगल जू, रसिक राज राजेश।
सो भजिये हरिव्यास, जू, आचारज सर्वेश।४।।
याविन मिलें न युगलजू, महा अनोखे छैल।
सो भजिये हरिव्यास जू, सदा युगल की गैल।।५।।
याविन मिलें न युगल जू, राधा मोहनलाल।

सो भजिये हरिव्यास जू, अतिही दीनदयाल ।।६।।
याविन मिलें न युगल जू, सर्व वेदकौ सार।
सो भजिये हरिव्यास जू, सर्ववेदकौ सार ।।७।।
जाविन मिलैं न युगल जू, तापर और न कोय।
सो भजिये हरिव्यास जू, सकल आस उर धोय ।।८।।
भजन अष्टमी यह कही, रूप रसिक हरिव्यास।
जो गावै सीखै सुनै, गुनै तास अघनाश ।।९।।

।। इति भजन अष्टमी राग मारू ।।

।। आभास दोहा ।।

युगल चरित्र विना कछू, और न श्रवण सुहाय।
सोई रसिक अनन्य हैं, और वृथा जग मांही ।।

।। पद ।।

सोई रसिक अनन्य कहावै।
जिनको युगल चरित्र विना श्रवन नहिं और सुहावै ।।
याही रँग रंग रहे रंगीले तिनही को संग भावै ।।१।।
अनु दिन रहत भावना भीनें नव नव रुचिहि बढावै।
जो कोउ वाधक या वतियन में तिनको संग छिटकावै ।।२।।
सदा सर्वदा हितू सहेली जू की कृपा मनावै।
हरसि हिये श्रीहरि प्रिय स्वामिनि अपने निकट बसावै ।।३।।
नित्य रहसि निरखत निज नैननि सैननि में समझावै।
रूप रसिक अनुपम छवि लखि लखि पुलकन अंग समावै ।।४।।

।। आभास दोहा ।।

निजदासी निज कर करें कृपा जास पर जोहि।
यह सुख दुर्लभ अति महा पावहि सुल्लभ सोहि ।।

।। पद ।।

सुल्लभ सोय लहै सुखएह।

अग्र वर्तिनि दया उरधरि करें जिन सों नेह।।
शरणहै बहु भांति जग में नाहिं जिनके छेह।
शुद्ध प्राप्ति करनको नहि और इन सम सेह।।१।।
पाप पावन करण पद नहिं कियो पावन गेह।
रूपरसिक निहारि छवि अंग पुलक पुलक हितेह।।३।।

॥ इति राग मारू ॥

॥ अथराग बसन्त आभास दोहा ॥

साधो आराधो सदा श्रीहरिव्यास सुदेव।
राधो माधोकी सही लाधो जब तुम सेव।।१।।

॥ पद ॥

माधो आराधो हरिव्यास देव।
लाधो जव प्यारी पीव सेव। श्रीभट पटराज भक्त पाल।।
रसिकेश्वर स्वामी अति रसाल अविरोध सुमत में महासूर।
ब्रह्माण्ड सकल पाखण्ड चूर।।१।।
करता महावाणी अति उदार। करी रूपरसिक सों भटसार।।
जिन विन पइए नहीं नित्य विहार।। चिदघन वृन्दावन रसअगार।।२।।
जो आप सदा हरिप्रिया रूप। सेवति नित दम्पति अनूप।।
सो अगवानी श्रीरंग धाम। ताविन ना मिलें नहि प्रिया श्याम।।३।।
जिन शिष्य कीनी महा त्रिगुण माय।
ताके अर्द्धनामतें पापजाय कहें रूपरसिकजन वार वार।।
हरिव्यास भजन विन जन्मखवार ।।४।।

॥ इति राग वसन्त ॥

॥ अथरागकालिंगडौ ॥

मेरे मन भजिले सदासत गुरु श्रीहरिव्यास।
जाविन तेरीहै नहीं दूरि गर्भकी त्रास।।

॥ पद ॥

मेरे मन भजिले श्रीहरिव्यास।
होय नहीं तिन विन सुनि तेरी दूरि गर्भकी त्रास॥
विन हरिव्यास लोक त्रय मांही सबही आश निराश॥
सब सुख रास दास श्रीभट पद दायक विपिन विलास॥१॥
अर्द्धनाम जिनको उचरतही होय सकल अघनास।
मूल प्रकृति सेवत निशिवासर चरण कमल भलजास॥२॥
तीन भवनमें अद्भुत प्रेम प्रकास।
चरण शरणको देत युगल पद दुर्लभ विना प्रयास॥३॥
अविचल सकल अमंगल चूरी पदधूरीहै तास।
रूपरसिक भगतेश भूपविन कटे नहीं भवफास॥४॥

॥ इति कालिंगडौ ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृतसागर। श्रीगुरु भक्तिरत्नको आगर॥
सकल पापकी नैया चूरण। सप्तदशी लहरी भई पूरण॥

॥ इति सप्त दश लहरी ॥

॥ चौपाई ॥

अष्टादशी लहरि पुनि जानों। तामें जय जय लीला मानौ॥
रसिक भक्त हियहरणी वरणी। सुखकरणी भवपार उतरणी॥

॥ अथ जयजय लीला लिख्यते ॥

पापी सापी तारिया अनगण अघकी रास।
भक्त अनेक उवारिया जय जय जय हरिव्यास॥१॥
कोऊ भीतर वाहिर कोऊ ए सव ठौर प्रकास।
श्रीभटदास खुलास सवदिन जयजय जय हरिव्यास॥२॥
मोहन मन्दिर में सदा रहत युगल के रूप।
राधाकृष्ण बिलास निधि जय हरिव्यास अनूप॥३॥

तिनकी दयासु दृष्टि विन मिलें न युगल विलास।
पराप्रेम के खास में जय जय जय हरिव्यास॥४॥
माया त्रिगुण प्रसूतिका, तासु चरण की दास।
सो मोपर किरपा करो, जय जय जय हरिव्यास॥५॥
वड्डे सन्त महन्त सुर, तिनकी करत उपास।
सतगुरु राजेश्वर सदा, जय जय जय हरिव्यास॥६॥
तास विना तिहुँ लोकमें, सबकी आनि सुरास।
भक्त आश पूरण करण, जय जय जय हरिव्यास॥७॥
जाविन सवकी होतहै, त्रिभुवन में अपहास।
क्यास हरण जन भरनसों, जय जय जय हरिव्यास॥८॥
हरि कहिये श्री युगल शत, ताके व्यास प्रकाश।
महावाणी सुख पंचकरि, जय जय जय हरिव्यास॥९॥
अर्द्धनाम तिनको जपै, ताके अघ होय नास।
ऐसे परम पुनीत भजि, जय जय जय हरिव्यास॥१०॥
तिनके चरण शरण विना, है मम पुरमें त्रास।
त्रास हास अनायास हो, जय जय जय हरिव्यास॥११॥
जा प्रभु सव सिद्धान्त मथि, कीनों प्रेम प्रकाश।
त्रिगुण नृगुण सव दासके, स्वामी जय हरिव्यास॥१२॥
पल स्वासा घरि पहर दिन उभें पक्ष पुनि मास।
होय सही सुमिरण किया, जय जय जय हरिव्यास॥१३॥
पलक घरी पुनि पहर दिन पक्ष युगल वहुमास।
होय वृथा या विन सकल, जय जय जय हरिव्यास॥१४॥
राधा मोहन टहल के, करता सखी खवास।
सदा सर्वदा सो प्रभु, जय जय जय हरिव्यास॥१५॥
श्रीहरिव्यास उदार की, जय जय लीला नाम।
रूपरसिक गावैं सुनें, सो पावैं रँग धाम॥१६॥

संख्या षोडश दोहरा, सो पावें रँग धाम।
पूरणता पाई रसिक, रूप हिये शुभधाम।।१७।।

॥ दोहा ॥

इति पुराण संख्या लहरि, पूरण भई जु आय।
जय जय लीला तामही, युगल महल सुखदाय ।।१८।।

॥ इति अष्टादश लहरी ॥

॥ दोहा ॥

उगणी सो लहरी लिखों, तामें सुन्दर मांझ।
युगल मिलें तिनकों किये, पाठ सकारे सांझ।।

॥ अति मांझ ॥

आदिगिरा को नाम सही हरि वडरेन की ही जानों।
ताहरि के किये व्यास वाण सुख व्यास यह मानो।
पुनि अवतार अनन्त गुण लीला तिनकों कियो बखानों।।
रूपरसिक हरिव्यास अर्थ उरमें दृढ ऐसे आनों ।।१।।
नमो नमो हरिव्यास गुसाई मन भाई मोहि दीनी।
प्यारी प्रियतम रंग महल की टहल सखीले कीनी।।
सबको जो दुर्लभ सो सुल्लभ सव दई रंग भीनी।
रूपरसिक पाई हमें सुव निधि रिधि सिधि सदा न वीनी।।२।।
मिटे नहीं हरिव्यास भजन विन जन्म मरण को झगरो।
देखो जोई निगम अगम इतिहास पुराण जु सगरो।
नेम प्रेमते परे बताओ जा प्रभु अद्भुत दगरो।।
रूपरसिक हरिव्यास भजन सबही ते अगरो।।३।।
जय जय श्री हरिव्यास देव भू सकल गुरु भगवन्ता।।
तिन विन मिलें नहीं त्रिभुवन में नित्य राधिका कन्ता।
अनगण जीव उधारे जी प्रभु भव सागर डूबन्ता।।
परा प्रेम में मन्ता तिनकी महिमा को नहिं अन्ता।।४।।

आप रूप हरिव्यासदेव कौ राधा माधो जानों।
तिनकी शरण विना गति नाही कहा म बहुत वखानों।।
हरि माधो साधो मुनि लीजे व्यास राधिका मानों।
रूपरसिक हिय इसक धारि क या विधि उर में आनों।।५।।
जय जय श्रीहरि व्यासदेव जू महा प्रेम के सागर।
सर्व पाप हरि त्रिभुवन में वर तिनको सुयश उजागर।।
दम्पति पद दायक मुनि नायक गायक नागर नायक।
रूप रसिक रसिकन के भर्त्ता युगल इष्ट के आगर।।६।।
जय जय श्रीहरिव्यासदेव प्रभु देव्यादिक के गुरुजी।।
तिनकी शरण होत ही भव सागर दुस्तर गोखुर जी।।
सव सुखरास दास श्री भटके सकल लोक पर प्रचुर चुरजी।।
सदा लसो मम भाल वसोदृढ रूप रसिक के उरजी।।७।।
निरबल तही मंडल मण्डन मणि श्रीहरिव्यास उदार।
तिनकी चरण शरण अनुरागे जागे भाग हमार।।
रसिक अनन्य नृपति चूडामणि अंश कला अवतारा।
रूप रसिक प्रभु परम प्रेमते वरन्यो नित्य विहारा।।८।।
त्रिगुण गये साक हम अति ही वाके दुख की रासी।
हाके सकल शुभा शुभ क्रम धृम भ्रम माया की पासी।।
था के आनध्यान में अवतो काके नहीं खवासी।।
छाके रूपरसिक दम्पति छवि हम पाके हरिव्यासी।।९।।
वडे हमारे सनकादिक है जग आदिक अविनाशी।
सो देखो भागोत साखि है भयै जु त्रिगुण उदासी।।
सदा खुलासी रंग धाम के वासी सो रसरासी।
जग पासी में बँधे जु नाही रूप रसिक हरिव्यासी।।१०।।
श्रीहरिव्यास नाम महा सुन्दर चसमो अति अभिरामो।।
ताविन दृष्टि परै नही सूक्षम रहसि जु श्यामा श्यामो।

संख्या षोडश दोहरा, सो पावें रँग धाम।
पूरणता पाई रसिक, रूप हिये शुभधाम॥१७॥

॥ दोहा ॥

इति पुराण संख्या लहरि, पूरण भई जु आय।
जय जय लीला तामही, युगल महल सुखदाय॥१८॥

॥ इति अष्टादश लहरी ॥

॥ दोहा ॥

उगणी सो लहरी लिखौं, तामें सुन्दर मांझ।
युगल मिलें तिनकों किये, पाठ सकारे सांझ॥

॥ अति मांझ ॥

आदिगिरा को नाम सही हरि वडरेन की ही जानों।
ताहरि के किये व्यास वाण सुख व्यास यह मानो।
पुनि अवतार अनन्त गुण लीला तिनकों कियो बखानों॥
रूपरसिक हरिव्यास अर्थ उरमें दृढ ऐसे आनों॥१॥
नमो नमो हरिव्यास गुसाई मन भाई मोहि दीनी।
प्यारी प्रियतम रंग महल की टहल सखीले कीनी॥
सबको जो दुर्लभ सो सुल्लभ सव दई रंग भीनी।
रूपरसिक पाई हमें सुव निधि रिधि सिधि सदा न वीनी॥२॥
मिटे नहीं हरिव्यास भजन विन जन्म मरण को झगरो।
देखो जोई निगम अगम इतिहास पुराण जु सगरो।
नेम प्रेमते परे बताओ जा प्रभु अद्भुत दगरो॥
रूपरसिक हरिव्यास भजन सबही ते अगरो॥३॥
जय जय श्री हरिव्यास देव भू सकल गुरु भगवन्ता॥
तिन विन मिलें नहीं त्रिभुवन में नित्य राधिका कन्ता।
अनगण जीव उधारे जी प्रभु भव सागर डूबन्ता॥
परा प्रेम में मन्ता तिनकी महिमा को नहिं अन्ता॥४॥

आप रूप हरिव्यासदेव कौ राधा माधो जानों।
तिनकी शरण विना गति नाही कहा म बहुत वखानों॥
हरि माधो साधो मुनि लीजे व्यास राधिका मानों।
रूपरसिक हिय इसक धारि क या विधि उर में आनों॥५॥
जय जय श्रीहरि व्यासदेव जू महा प्रेम के सागर।
सर्व पाप हरि त्रिभुवन में वर तिनको सुयश उजागर॥
दम्पति पद दायक मुनि नायक गायक नागर नायक।
रूप रसिक रसिकन के भर्त्ता युगल इष्ट के आगर॥६॥
जय जय श्रीहरिव्यासदेव प्रभु देव्यादिक के गुरुजी॥
तिनकी शरण होत ही भव सागर दुस्तर गोखुर जी॥
सव सुखरास दास श्री भटके सकल लोक पर प्रचुर चुरजी॥
सदा लसो मम भाल वसोदृढ रूप रसिक के उरजी॥७॥
निरबल तही मंडल मण्डन मणि श्रीहरिव्यास उदार।
तिनकी चरण शरण अनुरागे जागे भाग हमार॥
रसिक अनन्य नृपति चूडामणि अंश कला अवतारा।
रूप रसिक प्रभु परम प्रेमते वरन्यो नित्य विहारा॥८॥
त्रिगुण गये साक हम अति ही वाके दुख की रासी।
हाके सकल शुभा शुभ क्रम धृम भ्रम माया की पासी॥
था के आनध्यान में अवतो काके नहीं खवासी॥
छाके रूपरसिक दम्पति छवि हम पाके हरिव्यासी॥९॥
वडे हमारे सनकादिक है जग आदिक अविनाशी।
सो देखो भागोत साखि है भयै जु त्रिगुण उदासी॥
सदा खुलासी रंग धाम के वासी सो रसरासी।
जग पासी में बँधे जु नाही रूप रसिक हरिव्यासी॥१०॥
श्रीहरिव्यास नाम महा सुन्दर चसमो अति अभिरामो॥
ताविन दृष्टि परै नही सूक्षम रहसि जु श्यामा श्यामो।

या चस मोंते अनन्त रसिक जन देख्यो निज रंग धामो।
रूपरसिक हरि व्यास नाम चस या विन सरे न कामो।।११।।

लहरी उन्नीसी भई, इति श्रीपूरण आय।
माझ रसीली न सों भरी, खरी जु प्रेम चुचाय।।१।।

॥ राग धनाश्री आभास दोहा ॥

दम्पति जू की आरती, करत रंग देवीजु।
चहल पहल रंग महल में, सदा युगल से वीजु।।

॥ पद ॥

॥ आरती ॥

आरती करति रंग देवीजू।
रंगमहल सुख च्रहल पहल में सदा युगल सेबीजु।।
रत्न जटित वरथाल मनोहर गजमोतिन मणि पूरण।
दीप सहित माला सुगंध युग अद्भुत रोरी चूरण।।१।।
श्रीहितु सखी हरि प्रिया दासी चमर करत छवि पावै।।
रूपरसिक दम्पति परि करपर निरख वारने जावै।।२।।
युगल चन्द्रकी आरती करत हितू सखि रासि।
संग लिये सब सहचरी रंग महलकी वासि।।३।।

॥ पद ॥

आरती न आरति करन युगलजू की दासी।
श्रीहरि प्रिया प्रेम प्रकाशी हितू सखी सुखरासी।।१।।
परम सहेली हित अलवेली आदिम हलकी वासी।
रूपरसिक दम्पति छंवि निरखत पराप्रेम की फांसी।।२।।

॥ अथ राग मलार ॥

॥ आभास दोहा ॥

अशरण शरण भजो मना हरण तरणि सतवास।
रसिक आस पूरण करण श्रीस्वामी हरिव्यास।।१।।

॥ पद ॥

मनारे भजिये श्रीहरिव्यास।
अशरण शरण दीन जन हन दुख हरण तरणि सुतत्रास॥
जो प्रभु रसिक भक्त जन नायक दायक विपिन विलास।
तिन विन तीन लोकमें असको पूरण चूरण क्यास॥
महल रसिक जनकी जिनमेंटी परा प्रेमकी प्यास॥
महावाणी करता जनभर्त्ता श्रीभट पदनिज दास।
करुणा सागर जगत उजागर अगर प्रेम प्रकाश॥
रूपरसिक मन वचक्रम करि ये सब दिन आस।

॥ इति राग मलार ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। सो त्रिभुवन में महा उजागर॥
ताकी लहरी विंशति सुन्दर। परि पूरणता पाई दुखहर॥

॥ इति श्रीविंशति लहरी ॥

॥ चौपाई ॥

अब इक विंशति लहरि सुहाई। लिखत महालक्षण समुदाई॥
पुनिया में जय जय श्रीगाई। सोइहु सुनहु गुणह चितलाई॥

॥ दोहा ॥

प्रथम सुमिरि हरिव्यासजू श्रीहरि स्वयंस्वरूप।
रूपरसिक जनजानि जिनि दियो उपदेश अनूप॥

॥ अथ महा लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥

पहिले श्रद्धा लक्षण जानों। तापीछे सत संग बखानों॥
सत्संगति करि हरिको भजो। आन देवको आश्रम तजो॥
सदा प्रसन्न होय हरि सेवो। पुनि विरुद्ध सवसों तजिदेवो॥
सव जीवनिपर करुणा राखो। कवहू कठोरवचन जिनभाखो॥

मनहरि सुमिरण माहि समावो। घरी पहलपल वृथा न खोवो॥
धर्म सनातन में अनुसरो। विषय वासना सब परिहरो॥
उभय सनेह सेवामें मानो। आपनपो अनित्य करिजानो॥
हरि जन हरिमें भेदन करो। सदा बुद्धि थिर ह्वै अनुसरो॥
झूठ क्रोध निन्दा तजि देवो। विनुप्रसाद मुखऔर न लेवो॥
लिखें पढें अरुकरें करावे। झूठवादि करि अनन्य कहावे॥
एकादशी अवसि व्रत करो। माला तिलक सदाही धरो॥
सदा चारमें जो विधि कही। तिहि विधिसो कर धारो सही॥
हरिजन होय धीरज जिन छोडो। हरि पद पंकज सो रति जोडो॥
हरिजन होय तहां चलि जावो। प्रीति सहित पुनि दर्शन पावो॥
जिनसों मिलि हरिगुण गण गावो। और कुसँग सवों छिट कावो॥
अपने अर्थन उद्यम करो। यथा लाभ सँतोषहि धरो॥
स्तुति निन्दा दुख सुख जोई। हानि लाभ सम मानो सोई॥
हरि विमुखन सों करेंन चरचा। करो प्रीति सों हरिजन अर्चा॥
नम्री भूत ह्वैकें नित्त रहौ। दास दास के भावहि गहौ॥
मिथ्या वाद विवादहि त्यागो। हरिकी कथा सुधारस रागौ॥
उत्सव दिन विशेष करि मानों। जन्म कर्म दिव्य हरिकौ मानो॥
मानऽरू भय अमर्ष न करौ। हरिके चरण सदा चित धरौ॥
शत्रु मित्र दोऊ सम मानों। सहन शीलता उरमें आनों॥
नाम भरोसे पाप न करौ। नामी नाम एक वुधि धरौ॥
सदा नाम विश्वासहि राखौ। ऊठत वैठत नामहि भाखो॥
नाम माहात्म्य ऐसो सोई। याते अधिक और नहिं कोई॥
नामहिं सों नित वांधौ नातौ। जगत मोह सों डोरा हातो॥
सासु उसास नामही जापो। चित्त युगल पदमें लेथापो॥
नितहरि चरणामृतरू दण्डवत। धरि उर नेम निवाहो यहमत॥
प्रारथना कर जोरि करो पुनि। जिहविधि हरि उकतावें नहिं सुनि॥

होय निरालस हरि को पूजो। गुरु विन गहौ न मारग दूजो।।
गुरुसों गोविंद गोविंदसों गुरु। ऐसो भाव सुधारियो निज उर।।
साथन को छल छिद्र न धरो। कपट छांडि आराधन करो।।
वक्तासो हरि गुण सुनि रहो। श्रोतासो हरिगुण पुनि कहो।।
दुखी देख उर दया विचारो। सुखी देख हिय हर्षहि धारो।।
सरल स्वभाव सवनिते रहनों। मधुर वचन मुखते सोइ कहनो।।
पर उपकार विषैं बुद्धि धारौ। अनुचित कर्म क्रिया निरधारो।।
हरि अनुकूल जिती उरधारो। पुनि प्रति कूलतिती परिहारो।।
हरि सों निरबधि नेह निवाहो। निशदिन चरणन कों रति लाहो।।
हरिजन होगजु हठनहि करवो। हरि अज्ञाहीमें अनुसरिवो।।
हरि रसपान करो निशि दिना। नीरस यश छांडो हरि विना।।
सवहिनसों करि राखौ समता। देहगेह की छांडौ ममता।।
सत्य अहिंसा शांति शोचसुनि। समदमादि ए उरहु धरो पुनि।।
नैन बैन रसना श्रुत घ्राण। कर पद शिर पुनि हृदयरू प्राण।।
हरि पर करि राखो सब अंग। पारो जिनं उपायन में भंग।।
ह्वै अनन्य उर दृढ व्रत करौ। सखी भाव लिये हियें अनुसरौ।।
छांडि कुनेम प्रेम मन पागो। युगल पदाम्बुज सो अनुरागो।।
प्रभुकौ रूप ध्यान उर धरौ। मगन होय नित नितहि करौ।।
सर्व भाव करि हरिहरि गावो। रूपरसिक ज्यों सव सुखपावो।।

॥ दोहा ॥

महा लक्षण रसमई, इति चौपाई चोबीस।
रूपरसिक जो ध्याव हीं, सो पावही पद ईश।।

॥ चोपाई ॥

अब जय जय श्री सुनहु सुहाई। राग विलावल में छविपाई।।
लिख न करो सु महा मन भाई। सुनत गुणत सुख होत सदाई।।

॥ राग बिलावल दोहा ॥

कला अनेक प्रकाशनी, चमत्कार बहु भाय।
गाऊँ यश जय जय जु श्री श्रीहरिप्रिया सिरनाय॥

॥ पद ॥

जय जय श्रीहरि प्रिय चरण शिरनाय हो।
जिनको यश दुलराय हिये हुलसायहो।
अति सुकुमार उदार सहज सुख सारहो॥
सुन्दर मृदुल मनोहर सुखद सुढारहो॥१॥
जय जय श्रीहरि प्रिये सकल सुखमूल हो।
जिनको सर्व सुदेत तेव अनुकूल हो।
अग्रवर्तिनी प्रेम भक्ति रसदायनी।
करुणा सिन्धु दयाल सुविरद विधायिनी॥२॥
जय जय श्रीहरि प्रिये रँगीली रंगहे।
अद्भुत अमल अलौकिक आभा अंगहै॥
बडडे नैन विराजत अंजन अंजिता॥
मनरंजन छविकँजन खँजन गञ्जिता॥३॥
जय जय श्रीहरि प्रिये बदन विधु सोहही।
मध्य रदनकी जोति मदन मन मोहही॥
अधर अरुण रसभरे युगल अनुराग सों।
कलकपोल श्रुति चिबुक निरख वड भागसों॥४॥
जय जय श्रीहरि प्रिये रसीली रसभरी।
कण्ठशिरी दुलरी तिलरी अंगिया हरी।
कुच उतंग पर झरे हारसी पजुमनी।
अधिक उर स्थल उपचार चौकी कंठनी॥५॥
जय जय श्रीहरिप्रिये सुवाहु विराजही।
बाजु वन्द सुचारु चुरी छबि छाजही॥

कंकण कंचन पहुँची प्रभा कर पानकी।
अंगुरी में मुदरी मणिहेम विधान की।।६।।
जय जय श्री हरिप्रिये कृशोदरि कटि लसें।
गुरु नितिम्ब किंकिणीविविध नग जटि लसें।।
लहँगा ललित सुरंग अंग सुहायकौ ।
दयो रासकिनीरीझि चतुरचित चायसों।।७।।
जय जय श्रीहरिप्रिये पदा भूषण सजे।
मंथर चरण विहार मनोभव द्विप लजे।।
ललित लजाई तरवनि वनि नख आवली।
सदा रहे हिय मांहिसु परम प्रभावली।।८।।
जय जय श्रीहरिप्रिये सुखद सुख मासनी।
मृदुल मनोहर रंग अंग सारी वनी।।
जरद किनारी जग मगानि चहुँओरकी।
झमकनि वेनी पीठि सहेली डोरकी।।९।।
जय जय श्रीहरिप्रिये मधुर मृदु हासिनी।
मुक्त लरनि मिली सुच्छ सू सांधों सिलमिली।।
कर्ण कुसुम की देखि द्युति तरनि की।
भई विमोहित जोहत उपमा धरण की।।१०।।
जय जय श्रीहरिप्रिये मधुर मृदु हासिनी।
चमत्कारिणी कला अनेक प्रकासिनी।।
परम सहेली अलबेली आनन्दनी।
समय२ सुख सेवा में संचारणी।।११।।
जय जय श्रीहरि प्रिये प्रत्यंगा भासिनी।
केली कला कमनीय निकुंज निवासिनी।
परम सहेली अलवेली आनन्द की।।
रूपरसिक वलि जाय चरण अरविन्द की।।१२।।

॥ चौपाई ॥

इति श्रीमद् हरिव्यासदेव यश। अमृत सागर की लहरी अस।
इकविंशति महा छवि छाई। पूरण भई सकल सुखमाई॥

॥ इति एक विंशति लहरी ॥

द्वाविंशति लहरी लिखौं, तामें पद दश तीन।
भैरव सारँग कानरो, सोरठ में रसलीन॥१॥
पुनि गुणि दोहा पंचमी, करण सकल अघनास।
पढत गुणत हिय में बसैं, चरण कमल हरिव्यास॥२॥
जिनकी दया सु दृष्टिते, पायो हरि जन भेव।
नमो जयति हरिव्यास जू, सब देवन के देव॥३॥

॥ राग भैरव आभास दोहा ॥

तजि निन्दा सन्तोष सजि, रजि रसिकन कौं संग।
भजियेतौ हरिव्यासकौ, योंही मतो सूधंग॥

॥ पद ॥

तजिये तो निन्दा कौ तजिये। सजियेतो संतोषहि सजिये।
रजिये तो रसिकन संग रजिये। भजिये तो हरिव्यासहि भजिये॥१॥
छजिये तो इह छाजहिं छजिये। रूपरसिक राधा पद जजिये॥२॥

॥ इति राग भैरव ॥

॥ अथ राग सारँग ॥

॥ आभास दोहा ॥

तिनको मुख कारो करो शिर ऊपर दे लात।
हरि के भक्तजे जिनको नाहिं सुहात॥

॥ पद ॥

जिनको हरिजन नाहि सुहात।
तिनको मुखकारो करि के शिर ऊपर दीजे लात॥
कहा भयो कविताई सीखेहै करि मोटी जात।

रीतो होय निरन्तर जेसे ज्यों हँडिया विनभात ।।१।।
हरिप्यारे के प्यारे जिनको मन में नाहिन आत।
निहचें नर क निवासी ह्वैहैं तिनके पुरुषा सात ।।२।।
महा अधमते अधम जानिये कहत पुकारें धात।
रूपरसिक तजिये संग तिनको भजिये श्याम संगात ।।३।।

।। इति राग सारग ।।

।। अथ राग कानडो ।।

।। आभास दोहा ।।

भक्तनको चरणाम्बुज ले कियो न पावनगेह।।
तेनर या जग आयके वृथा धरीहै देह।।

।। पद ।।

वृथाभयो जनको जग आवन।
भक्तनको चरणोदकलेजिहि।। नहि न कियो अपनो गृहपावन।
रुचिकरि जिहिजूठनि नहिखाई।।
निजकुलको अभिमान नसावन।
खात फिरत जे महागलीची जैसे सूकर कूकर गावन ।।१।।
जिनश्रवननि हरि कथा सुनी नहिं उरमें अति आनँद उपजावन।
तिनको रूप रसिक प्रभुको कहो कोन भांति करि होय मिलावन ।।२।।

।। आभास दोहा ।।

जिन सेवाते सकल मन, पूरण काम अभिष्ट।
सो अच्युत गोती महा, मेरे हैं निज इष्ट।।

।। पद ।।

अच्युत गोती मेरे इष्ट।
जिन सेवाते सकल कामना पुरवत मन आनन्द प्रविष्ट।।
कृष्ण कृपामृत पावत अनुदिन वोलि वोलि वाणी मुख मिष्ट।
सुनि सुनि श्रवननि उपजत अति रति बढत हिये अनुराग अभिष्ट।।१।।

पदपंकज रजके प्रताप करि होत शिष्टजे महा कनिष्ठ।
अनायास पावत सर्वेश्वर जबही चितवत कृपा सुदृष्ट॥२॥
यमकौ सब डर डारि जगतमें विचरत जैसें वीर वरिष्ट।
रूपरसिक ताकी पदवी में पाई जिन की खाई उछिष्ट॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

भक्तनकी निन्दा करै, मोकों पूजे जोय।
प्रभु आज्ञा यह करत हैं, मेरो दोषी सोय॥

॥ पद ॥

जहां तहां हरि ऐसी कही।
भक्तनकी निन्दा करि मोकों पूजत मोमन दोषी सही॥
षोडश विधि सेवा विस्तारत वेद तंत्रकी सब विधि गही।
में मानत नाहिन तनकउ कछु वृथा पचत है मूरख बही॥१॥
मेरे कछु भक्तन विन नाहिन भक्तनके मोविन कछु नही।
रूपरसिक प्रभुताकी पदवी सो तो सब इनहीं ते लही॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

में न्यारो इनते न कछु, ये न्यारे नहि होंहिं॥
प्राणनते अति लगत है प्यारे भक्तजु मोहि॥

॥ पद ॥

प्राणनितें मोहि भक्त हैं प्यारे।
मैंन्यारो नाहिन इनते कछु ये कहु नाहिन मोते न्यारे।
वडी बडाई लक्ष्मी मेरे। ताहूते जन जानत न्यारे॥
ज्यायौ जीवत प्यायौ पीबत इनि साधुन के सांझ संवारे॥१॥
सुनि उद्धव जिनि मेरे कारण सब धन धाम के काम बिसारे।
तिनकों रूपरसिक कहो कैसें अभि अन्तर ते जाति निकारे॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

और युगलन में यज्ञ जप तीरथ संयमदान।

कलियुग माही मुख्यहै श्रीहरिभजन प्रधान।।
और युगनमें यज्ञादिक जपतप तीरथ व्रत संयमदान।
श्रीभागवत महा मुनि नृपसों कही सहायहै कृपानिधान।।
केवल कृष्णनाम कलिकीर्तन या समान अघहरको आन।
अजामेलगज आदिप्राणके वानसमय तहां प्रगट बखान।।
रूपरसिक जाकी महा महिमा जानतहैं सव सन्त सुजान।।

॥ आभास दोहा ॥

हरिजन आवत देखिके नहिं हियमें हरखाँहि।
महापातकी जानिये तिनको या जगमाँहि।।

॥ पद ॥

हरिजन निरखित हरखत हिये।
तेनरमहा अधमपाखंडी धृक धृकहैं जग जिनके हियें।
मुखमीठे अम्मृत गटगटके हृदय कूर नाछीये।।
क्यों नहिं मारपरै तिनके शिर जिनके अैसी कुटिल धीये।।१।।
स्वांग पहरि सुकियाको सुन्दरि लक्षप्रतिक्ष पोषत परकिये।
रूपरसिक ऐसे विमुखनकौं कुंभीपाक नरक नाखिये।।२।।

॥ आभास दोहा ॥

दया उदधि सर्वेश की, हे नित प्रति यह टेव।
मानत आपनतें अधिक, हरि भक्तन की सेव।।१।।

॥ पद ॥

हरिसेवातें हरिजन सेवा।
आपनतें अधिकी करि मानत दया उदधि देवन के देवा।।
सहि नहिं सकत भक्त अपराधे निज अपराधन चित्त धरेवा।
दुर्वासा के कोप कालना भाग तनय के त्रान करेवा।।१।।
सकल लोक चूडामणि स्वामी ब्रह्मादिक पावत नहिं भेवा।
सो आधीन रहत भक्तन के रूपरसिक प्रभुकी यह टेवा।।२।।

॥ आभास दोहा ॥

हरि भक्तन सो है नहीं, जा नारी को भाव।
जाको कारो बदनि करि, नीले करिये पांव॥१॥

॥ पद ॥

हरि भक्तन सो नाहिं नभावै ता नारी कों संग कहावै।
कारो मुँह करि नीले पावें॥
देखि दूरिते रामसनेही रांड दुष्टनी भोंह चढावैं।
गृह आयेंते महा विमूढा मन्दभागनी कलह बढावै॥१॥
परम पापनी अति संतापनी अपने पतिकौ बिपति लगावै।
जीवत जगमें कुयश कारिणी मरे नरक में ले पहुँचावै॥२॥
मेरो कह्यो मान नररे जोतेरे उर निश्चय आवै।
रूप रसिक बसि ऐसे घरमें काहेको घर बस्यौ कहावै॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

गुण गावै मिल युगल के, हरिजन लखि हुलसाय।
ऐसी सुखदा भावनी, मिलै भागते आय॥

॥ पद ॥

ऐसी भामिनि भागहि पाइये।
जासों मिलिकै अहो निशा श्रीराधा माधवके गुण गाइये॥
हरि हरि जन सेवामें तत्पर परम अनन्य लखि नैन सिराइये।
रूप रसिक ऐसी घर नीके सदा संग रहि हिय हुलसाइये॥

॥ इति राग कानरो ॥

॥ अथ राग सोरठ ॥

॥ आभास दोहा ॥

सत् संगति को तजि करौ, विषय बिपिन में धाय।
ताते मूरख बँधिगयो, अपने कर्महि आय॥

॥ पद ॥

अपने कर्महि आप बँधायौ।
जैसे कीटकौसकारी गृह द्वार मूँदि पछितायौ ॥
जैसे मधुकर मुदित कमल में पल विश्राम न पायौ।
भटकि भटकि शिर रह्यौ पटकि तौ दुख अन्त न आयौ ॥१॥
जैसे मधुमाखी मधुलालच आनि ता माही।
प्राण दियेही होय निवेरौ और उपायऽ बनाही ॥
जानि बूझि कर पडत खांड में जैसे गज मतमातो।
करण केलि करिणी भ्रम भूल्यो होय गयो दृगहातो ॥३॥
कहा होय पछिताव किये अब तब तो सब बिसरायौ।
रूपरसिक सतसंग छांडिके विषय विपिन में धायो ॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

पीयो नहीं भागवत रस, श्रवण पुटा सुख दाय।
धृक् धृक है तेरो जियो, कहा कियो जग आय॥

॥ पद ॥

कहातें जग में आय कियोरे॥
श्रीभागोत सुधारस गटक्यो श्रवन पुटा न पियोरे।
नरतन रतन जतनहु पायो ही खोय दियोरे॥
ताको शठ तोहि सोचन आयो धृक है तेरो जियोरे ॥१॥
क्यों नही रही वाँझ जननी वह जिहि धरि उदर लियोरे।
रूपरसिक ही कष्ट होत है देखि तिहारो हीयोरे ॥२॥

॥ इति राग सोरठ ॥

॥ आभास दोहा पंचमी लिख्यते ॥

श्रीहरिव्यास कृपाल की, शरण लहे जो कोय।

निन्दादिक औगुण सवैं, पाप नष्ट सब होय।।१।।
वढै महा संतोष अति, हरिव्यासिन के संग।
प्रेम सिन्धु छाजें चढें, उर अनुराग अभंग।।२।।
जो कोउ या नर देह को, वृथा करै अभिमान।
दूरि करें हरिव्यासजू, चरण शरण गहें आन।।३।।
अच्युत श्रीहरिव्यासकौ, जिनके है निज इष्ट।
श्रीवृन्दावन महल सुख, पावें परम अभिष्ट।।४।।
जय जय श्रीहरिव्यास, यशामृत की कही।
द्वाविंशति लहरी, पद तेरह की सही।।
पुनि दोहा पंचमी महा, शुभ जानिये।
परम पूज्यता करण सकल, सुख मूल हरण दुख मानिये।।१।।

॥ इति द्वाविंशति लहरी दोहा ॥

यश अमृतसागर महा, जाकी लहरि अनन्त।
रूपरसिक यह यथामति, सुनि उर धरियो सन्त।।१।।
में मति मन्द कहा कहूँ, जीवनि श्रीहरिव्यास।
महावाणी गायक सुधनि, करि भेटे निज दास।।२।।
श्रीहरि प्रिया जु की करी, महावाणी सों भेंट।
रूपरसिक पावन भयो, सहजें भई सहेट।।३।।
श्रीहरिव्यास यशामृत सागर परम अगाध।।
रूपरसिक वलिवलि गयो, पुजई सब मों आश।।४।।

इति श्रीहरिव्यासदेव यशामृत सागर यथा मति।
लहरी सम्पूर्णम्।। मिती वैशाख वदी २ सम्वत्।।

॥ प्रार्थना ॥

श्रीरूपरसिक कृत प्रियाप्रीतम के पद।

॥ राग झँझोटी ॥

प्यारी जू तुमही हो गति मेरी।

चूक क्षमा करिये दुख हरिये जू हौं तेरी जनम जनमकी चेरी॥टेक॥

भ्रमिय बहुत वन वन बलि जाऊँ

ए जू लहिय न तनकहू सुख की सेरी॥१॥

दीन हीनपर दया द्रवन की जू तुम विन कहौ शरण किहि केरी॥२॥

इहि अवसर अब परि हरि हौ तौ

जू कहां शरन मुहि मिलि है जू तेरी॥३॥

भव सागरमें वहिय फिरति हौं जू महा मोह दुर्मति ने घेरी॥४॥

अनुचरि परि अनुकम्पा कीजै एजू दीजे अब दर्श दरेरी॥५॥

रूपरसिक जन जानि आपनो जु राखिये चरन कमल सों नेरी॥६॥७॥

अब तो करुना कियेई वनै वलि।

भवसागर विकराल विपुल ताकी भँवर जालते जाऊँ कहां टलि॥१॥

औगुन खानि जानि आना कानी जू

जो उर आनी तौ नहि कहूँ थलि॥२॥

हों मति हीनि मलीनि करम की जु तुमते बिछुरिगई रज में रलि॥३॥

कलपान्तर कहुँ जाय परोंगी जू तो कब ऐहों तुम पद ढिंग ढलि॥४॥

वही आज्ञा उर में सुधि करिये जू तू मेरी है रूपरसिक अलि॥५॥२॥

मेरो कछु वश नाहिं न करुन मई॥

सुधि बुधि भूलि भरम भगकति हौं जू करमन करि प्रतिकूल भई॥१॥

ज्यों ज्यों सुरझाऊँ त्यों त्यों उरझत जू ऐसी दशाकोऊ आयगई।।
सुधि बुधि विसरि विकल बिलपति
हौं जू या जग की त्रय ताप दई।।३।।
जानत सब जनके जिय की जू तुम ते कौन दुरी है दई।।४।।
रूपरसिक अलि कहाँ यह कहाँ
यह जू उचित नहीं वलि होति नई।।५।।३।।

*